सस्करण	प्रथम, 1000 15 मई, 2010 वि स 2067, वैशाख (द्वितीय) शुक्ला 2 (बीकानेर स्थापना दिवस)
प्रकाशक	थार प्रकाशन 11, श्रीराम मार्केट, बीकानेर
प्राप्ति स्थल	मोटाराम सूरजमल दूगगड़ एम एस दूगगड मार्ग, गगाशहर 334401 बीकानेर फोन 2273446, 47 मो 9414141199 emall jldugar@msdugar com
मुद्रक	कल्याणी प्रिण्टर्स माल गोदाम रोड, बीकानेर दूरभाष 0151–2526890
मूल्य	150/– (एक सौ पचास रुपये मात्र)

मेरे प्रेरणा स्त्रोत



परम पूज्य दादीसा श्रीमती मीरांदेवी

एव



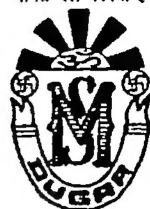


पूज्य पिताजी श्री सूरजमलजी एवं माताजी श्रीमती बाधूदेवी

को

सादर समर्पित

'नीयत गैल बरकत है'



आशीर्वचन



भाई जतन दूगड का जन्म सन् 1957 मे गगाशहर (बीकानेर) मे हुआ। विज्ञान विषय मे स्नातक स्तर की शिक्षा अर्जित की। पारिवारिक एव सामाजिक दायित्वो व परम्पराओ का जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करते हुए पुश्तैनी व्यापार को आगे बढाया और समय की रफ्तार के साथ बदलते व्यवसायिक वातावरण के अनुरूप नये व्यापार, व्यापारिक स्थल व तकनीकी विस्तार से नवीनता लाकर उन्हे व्यापार व उद्योग जगत मे प्रतिष्ठित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बचपन से ही कविताए लिखने के साथ ही युक्तिया, मुहावरे, लोकोक्तिया भी रचने एव सग्रहित करके सुनाता रहा है। इसकी अभिव्यक्ति बात को रोचक, मर्मस्पर्शी एव प्रभावक बना देती है। साहित्य के क्षेत्र मे नवोदित प्रतिभा का स्वागत इसलिए भी है कि कहानी, कविता, लेख लिखने की विधा से हटकर एक नई विधा उक्ति मुहावरो को अपनी मातृभाषा राजस्थानी मे प्रस्तुत किया है। इसके साथ साथ उनका हिन्दी व आम बोलचाल वाले शब्दो मे अर्थ देकर सभी के लिए उपयोगी एव सर्वग्राही बनाने का सार्थक प्रयास किया है। जतन के स्वस्थ, सुदीर्घ एव कल्याणकारी जीवन की मगलकामनाओ के साथ –

इन्द्रचन्द दूगड
ज्येष्ठ भ्राता

प्रकाशकीय

साहित्य अपने समय के साथ सार्थक सवाद होता है। उसे जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। वह तो जीवन की निस्पृह और सात्विक उपासना है। साहित्य हमे अपनी जडो से कटने से रोकता है, जीवन के प्रति आस्था को बनाये रखता है और आदमी के अधूरेपन को दूर करता है। उसका सारा ध्येय मनुष्य के योगक्षेम के लिए होता है। हमे ऐसे साहित्य को रचना है जो जीवन की सरगम का सही सुर बन सके और उसकी भावना, लय और ताल को कायम रखने मे् मदद दे सके।

समाज मे ऐसे अनेक उदीयमान साहित्यकार है जिनमे साहित्य के व्यापक फलक पर उभर कर आने की प्रबल सम्भावनाए भी होती है। अवसर आने पर वे अपने आपको अभिव्यक्त कर सकते हैं। अवसर तलाशने से उन्हे उत्पन्न किया जा सकता है। जो अवसर को उत्पन्न करना जान लेते हैं वो जिन्दगी मे सफल हो जाते हैं। श्रेष्ठ बन जाते हैं। श्रेष्ठता को बनाये रखना अच्छी बात है। जब कथन और कथ्य की प्रस्तुति मे नवीनता और निखार हो तो सामान्य भी श्रेष्ठ बन जाता है।

ऐसे ही एक छुपे हुए साहित्यकार हैं जतन दूगड। हम लोग दूगड को मुख्यत भाव प्रधान युक्तियो के सिद्धहस्त प्रस्तुतकर्ता के रूप मे जानते हैं। वि स 2067 (सन् 2010) मे प्रकाशित हो रहे इनके प्रथम युक्ति सग्रह ने एक नई प्रतिभा को प्रकाश मे लाने के साथ साथ राजस्थानी साहित्य मे लोकोक्ति विधा को पुन व्यापक रूप से लोकप्रिय होने का प्रमाण भी प्रस्तुत किया है। महान् ध्येय से प्रेरित सकिय जीवन की उत्तकट लालसा के चलते वे इस सग्रह मे हमे कई बार सवेदना के उतार चढाव और बारीकियो से परिचित कराते हैं। जतन दूगड के परिचय दर्शन के पहले क्षण से ही उनके चित्रण की कोमल अभिव्यजनशीलता और युक्ति शैली की मर्मस्पर्शी भावमयता पाठको का मन मोह लेगी।

जतन दूगड साहित्य के क्षेत्र मे पैर रखने से पहले जीवन का

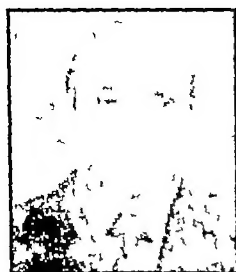
काफी अनुभव अर्जित कर चुके हैं। पिछले काफी समय से इनके मन मे विचार था कि इन समृद्ध और पारम्परिक राजस्थानी ओठो, अखाणो, लोकोक्तियो एव मुहावरो का सकलन करके इनको सरक्षित करने का प्रयास किया जाए ताकि हमारी आज की पीढी और भावी पीढिया अपनी प्राचीन समृद्धता को विस्मृत न करे।

ऐसी ही एक राजस्थानी कहावत है "कैयोडी जचै मौकै पर" जिसका अर्थ है अवसर पर सही बात या उक्ति कही जाय तो श्रेष्ठ लगती है। जतन दूगड की भी आदत है कि वे उचित मौके पर उचित उक्ति देने से चूकते नही हैं। अत इस ज्ञान को जन–जन तक नये निखरे अन्दाज मे पहुचाने के लिए राजस्थानी ओठो (आड्यिा), लोकोक्तियो एव मुहावरो को लयबद्ध करके पुस्तकाकार मे देने का निर्णय लिया।

यहा मैं नवभारत टाइम्स के सपादक स्व राजेन्द्र माथुर की बात का उल्लेख करना चाहूगा "अखबार का रिपॉर्टर रोज जन्मता और रोज मरता है पर पुस्तक का लेखक अमर होता है।" आज जतन दूगड को बधाई कि वो अजर – अमर हो गये है।

लूणकरण छाजेड़ ✍

स्वकथ्य



व्यक्ति के भावो की अभिव्यक्ति मे ओठे, मुहावरे, लोकोक्तिया, अखाणे आदि इस तरह के वाक्याश होते है जो चन्द शब्दो मे पूरी बात समझा देते हैं। भाषा के पारगत विद्वान पण्डितो के शब्द सामजस्य से भी ज्यादा अधिक सरल एव रोचक तरीके से सामान्य व्यक्ति भी अपनी बात इनके माध्यम से अधिक प्रभावी ढग से कह देता है। बिना किसी शब्दकोष या व्यवस्थित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के बावजूद ये पीढी दर पीढी प्रचारित प्रसारित होते रहे हैं। पूर्वजो के अनुभव एव जीवन की सारगर्भित बाते, जो हमारे लिए बहुत उपयोगी है, इनके माध्यम से उनका सार समझ मे आ जाता है। अग्रेजी हिन्दी या अन्य किसी भाषा विशेष से भी प्रभावित न होकर आम बोलचाल की भाषा मे क्षेत्रीय विशेषताओ के अनुरूप अधिक रूचिकर अन्दाज व लहजे मे बोले जाने से ये ज्यादा प्रभावक होते है। सैकडो वर्षो के अनुभूतियो व मान्यताओ पर आधारित इन कहावतो, मुहावरो व लोकोक्तियो मे निहित ज्ञान, तथ्य, सार, शकुन एव जीवन के अनुभव आज भी प्रासागिक हैं व रहेगे। पिछली शताब्दी तक जब शिक्षा नाममात्र की थी, पर इन्ही लोकोक्तियो के माध्यम से जीवन के 'गुर' पीढी दर पीढी सप्रेषित होते रहे है। इनकी सरसता ने इन्हे सदा लोकप्रिय एव सरलता से स्मरण योग्य रखा है।

मेरी इस कृति मे मेरी दादीजी की जुबान पर दिन भर मे कई बार आने वाले ओठे हैं, पिताजी द्वारा श्रुत अखाणे हैं, माताजी द्वारा बात बात पर उच्चारित मुहावरे हैं, भाई साहब व भाभीजी द्वारा कही जाने वाली कहावते हैं, बडे बुजुर्गो के समय समय पर कहे जाने वाले वाक्याश है, यार दोस्तो मित्रो के मध्य विवेचित उक्तिया हैं, धर्मपत्नी सहित प्रियजनो, परिजनो एव सम्बन्धियो के साथ चर्चित नीति वाक्य है, दिन भर मे सम्पर्क मे आने वाले व्यक्तियो के बोल हैं। सत महात्माओ, धर्मगुरुओ, कवियो, विद्वजनो व पुस्तको सकलित दोहे व शब्दावली है। कई बार अवसर विशेष व व्यक्ति विशेष द्वारा कहे गये शब्द किसी कार्य विशेष के लिए प्रेरणा बन

जाते है। दादीजी सहित पूर्वजो व परिजनो, मित्रो आदि से श्रुत इन वाक्य समूहो मे मेरी रूचि शुरू से रही है। मेरी इस रचना के ये ही प्रेरणा स्त्रोत हैं एव सबके उत्साहवर्द्धन का ही यह प्रतिफल है। बाल कवि वैरागी के शब्द **"अच्छा लिखा हुआ पढ़ो व एसा लिखो कि लोग उसे पढ़ें।"** तथा हाल ही मे राजस्थान के तीर्थस्थलो की यात्रा के समय "जीजाजी आप इन्हे लिखे" इन शब्दो ने मुझे इन्हे लिख कर शीघ्र प्रकाशित करवाने के मेरे लक्ष्य को गति प्रदान की। मैने इस सब सकलन को व्यवस्थित कम मे सजाया है, उन्हे सन्दर्भ व अर्थ दिया है। इन ओठो, मुहावरो, लोकोक्तियो, अखाणो मे व्यक्ति, वर्ग, जाति, धर्म, समूह, विचारधारा या अन्य किसी सन्दर्भ मे कोई अभिव्यक्ति किसी को आहत करने वाली हो तो क्षमा चाहता हूँ। ये परम्पराओ से प्रचलित वाक्याशो का सकलन है, किसी के अहम् तुष्टि या अहम् को ठेश पहुचाने के लिए उल्लेखित नही किये गये हैं। इन से मेरे विचार मिले, यह भी जरूरी नही, पर सकलन मे इन्हे छोड देना भी अधूरापन होता। कुछ शब्द अप्रिय भी हो सकते है, पर आम बोलचाल की भाषा मे लेना भी आवश्यक है, जिससे इनकी मौलिकता कायम रहे। कहावते स्थान, क्षेत्र, बोली व समूह विशेष के साथ साथ बदलती रहती है। सभी का सकलन सम्भव भी नहीं होता। मैंने अधिक से अधिक ओठे, अखाणो आदि को आम बोलचाल की भाषा मे उच्चारण के अनुरूप वर्णाक्षर के अनुसार अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। इन युक्तियो के साथ ही साथ इस सग्रह के अन्त मे बरसात के तिथि वार नक्षत्रानुसार शकुन की जो मान्यताऐ चली आ रही है, कृषक व आम आदमी मौसम विभाग के बिना भी ज्यादा प्रमाणिक इन शकुन विचार से बरसात व फसलो के बारे मे भविष्य की परिकल्पना करता व मानता आ रहा है, उन्हे भी सकलित किया गया है। इन सबको हिन्दी मे अनुवादित करने से यह सकलन भावी पीढियो तक हमारी आम बोलचाल मे इनकी सार्थकता को सरक्षित रख सकेगा, ऐसा विश्वास है। युक्तियो के सकलन, लेखन, सुधार एव पुस्तक की साज–सज्जा आदि मे प्रत्यक्ष एव परोक्ष सभी सहयोगकर्ताओ का हार्दिक आभार।

जतनलाल दूगड़ 'सुमन'

अ

अऊत गया रा तामक बाजे।
(असभ्यता का भौण्डा प्रदर्शन)

अकल अडाणै राख्योड़ी।
(बिना सोचे काम करना)

अकल बड़ी का भैंस।
(व्यक्ति शरीर से नहीं बुद्धि से बडा/बलवान होता है।)

अकल बिना ऊँट उबाणा फिरै।
(बुद्धि के अभाव से ही व्यक्ति दुःख पाता है।) (उबाणा = नगे पैर)

अकल रा टोटा तो, दुःखां रा कांई घाटा।
(बुद्धि नहीं है तो दुःख ही दुःख है)

अकल शरीरां उपजे, दियां आवे डाम।
(बुद्धि स्वय के चेतन से ही प्राप्त होती है)

अग्रे अग्रे ब्राह्मणा, नदी नाला बरजन्ते।
(लाभप्रद कामो मे ब्राह्मण सबसे आगे, खतरे के समय पीछे)

अड़वो - नै खुद खावै, नै खावण देवै।
(जो स्वय भी नहीं खाता व दूसरे को भी नहीं खाने देता)

अणकमाउ लड़तो आवै, कमाऊ डरतो आवै।
(जिसके पास खोने को कुछ नहीं होता वह डरता नहीं, जिसके पास कुछ होता है, वह डरता है)

अणपढ़िया घोड़े चढ़ै, पढ़िया मांगै भीख।
(अनपढ व्यक्ति भी पढे लिखे व्यक्ति से अधिक प्रगति कर सकता है)

अणपूछ्यो म्हूरत भलो, का तेरस का तीज
(तेरस और तीज बिना पूछा मुर्हुत है)

अणमांगी तो दूध बरोबर, मांगी मिलै सो पाणी।
बा भिक्षा है रगत बराबर, जी'मै टाणा टाणी।
(बिना मन किसी से कोई चीज नहीं लेनी चाहिए)

अणमांग्या मोती मिलै, मांग्या मिलै न भीख।
(बिन मागे मोती भी मिल सकते हैं। मागने से भीख भी नहीं मिलती)

अणहूणी हुवे कोनी अर हूणी टळै कोनी।
(होनी होकर रहती है, अनहोनी नही होती)

अणहूंत भाटे स्यूं भी काठी होवै।
(अभाव मे व्यक्ति कुछ भी कर सकता है)

अणुतो खावै - कुबेला जावै।
(ज्यादा लोभ करने वाले को घाटा उठाना पडता है)(कुबेला = बिना समय)

अतिथि देवो भवः
(अतिथि देवता के समान होता है)

अति भक्ति चोरे'र लक्षणम्।
(जिसके मन मे पाप होता है, वह ज्यादा चापलूसी करता है)

अति सर्वत्र वर्जयते।
(अति (ज्यादा) हर कहीं वर्जित है)

अध जल गगरी छलकत जाय।
(अधूरे ज्ञान वाला व्यक्ति ज्यादा अह प्रदर्शन करता है)

अंगूर खाटा है।
(नहीं मिलने पर)

अठै रा मुड़दा अठै ही बळसी।
(यहा का काम यहा की व्यवस्था के अनुरूप ही होगा)

अंजळ पाणी परसराम/अंजल बड़ो बलवान
(जहा का दाना पानी लिखा होता है वहीं जाना पडता है)

अन्त भला तो सब भला।
(परिणाम अच्छा आया तो सब ठीक है)

अन्त मति सो गति।
(अन्त मे जो विचार होते हैं वैसी ही गति होती है)

अन्धारो हुवै जको ट्यूबलाईट जगावै।
(जिसके पास कुछ नहीं होता वह दिखावा अधिक करता है)

अन्धेर नगरी चौपट राजा, टकै सेर भाजी, टकै सेर खाजा।
(जहा बुद्धिमान व मूर्ख को बराबर समझा जाता है)

अन्न छूटै बिरो घर भी छूटै।
(खाना अरूचिकर/हजम होना बन्द हो गया उनकी मृत्यु सन्निकट है)

अन्नियो नाचै अन्नियो कूदै, अन्नियो करै तमाशा।
आज अन्नियो घरै नहीं तो, बोलण रा ई सांसा।
(पेट भरा होने पर ही सब अच्छा लगता है।)

अपना हाथ जगन्नाथ।
(अपना श्रम ही फलदायक होता है)

अपने मुंह मिंया मिठ्ठु बनना।
(अपनी प्रशसा स्वय करना)

अबकी आयो ऊँट पहाड़ नीचै।
(इस बार शेर को सवा शेर मिला है)

अब पछतावत होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
(नुकसान हो चुकने के बाद अफसोस करने से क्या फायदा)

अबै किसा मिंया मरग्या'र, किसा रोजा घटग्या।
(अब भी क्या हो गया है ?)

अबै घरै ही घोटो अर घरै ही पीयो।
(नशा लगाने के बाद कहे कि अब अपने खर्च पर ही नशा करो)

अभागिये रै बिखो पड़ै जणै सुभागिये नै सीख आ जावै।
(दूसरे की गलतियो से शिक्षा ले लेना)

अभावे स्वभाव नष्टो।
(अभाव मे साहूकारी नष्ट हो जाती है)

अम्बर दूजै, भूत कमावै – अन्न धन लक्ष्मी आपी आवै।
(तकदीर वाले व्यक्ति के धन स्वत आता है)

अमर मरता म्हैं देख्या, भाजत देख्या सूरा।
आगै से पीछा भला, नाम भला लहटूरा।
(नाम मे क्या रखा है)

अमर मरता म्हे सुण्या, भीख मांगै धनपाळ।
लक्ष्मी छाणां चुगती, आछो ठनठनपाळ।।
(नाम मे क्या रखा है)

अमावश पूनम रो कांई मेळ।
(कोई सामजस्य नहीं)

अवसर चूकी डूमणी, गावे ताल बेताळ।
(अवसर चूक जाने के बाद हाथ पैर मारना)

अवेर्‌यां तो घर बधै, छाज्यां बधै बाड़।
मीठो बोल्यां मन बधै, कड़ुवो बोल्यां राड़।।
(घर की सार सम्भाल करते रहना व बाड को ठीक करते रहना लाभकारी रहता है, मधुर वचनो से प्रेम बढ़ता है व कटु वचनो से झगडा बढता है)

आ

आई बहू आयो काम, गई बहू गयो काम।
(कोई भी काम किसी भी व्यक्ति विशेष के भरोसे नहीं रहता)

आई ही छाछ लेवण नै - घर री धणियाणी हू बैठी।
(दूसरे पर अनाधिकार जताना)

आकाश स्यूं पड़्यो - खजूर में अटक्यो।
(एक समस्या के सुलझने से पहले दूसरी मे उलझ जाना)

आखड़्यां चेतो हुवै।
(गलती से सीख मिलती है)

आखड़्या जिसी लागी कोनी।
(थोडे नुकसान से टल जाना)

आखड़्या सो पड़्या कोनी।
(थोड़े नुकसान से टल जाना)

आगम बुद्धि बाणियों, पिछम बुद्धि जाट।
तुरन्त बुद्धि तुरकड़ो, बामण सपटमपाट।।
(बनिया पहले सोचता हे, जाट बाद में, मिया तुरन्त सोचता है व ब्राह्मण सोचता नहीं)

आग मै घी घाल्यांस्यूं आग कोनी बुझै।
(कडुवा बोलने से झगडा समाप्त नहीं होता)

आग लागै जणै कुओ खोदै।
(विपदा सिर पर आने के बाद हाथ पाव मारना)

आगै तो बाबो जी गोरा घणां, ऊपर स्यूं लगा ली राख।
(बिगाड मे बिगाड)

आगे से पीछा भला - नाम भला लैटूरा।
(बद से बदतर)

आगै आगै गौरख जागै।
(भविष्य मे क्या हो, देखते हैं)

आगै दियां पाछो आवै।
(सम्पन्नता बढ रही है)

आछी करी घर रा धणी - कूटी थोड़ी'र ठरड़ी घणी।
(किसी बात को ज्यादा खींचना)

आछी म्हारी टाटी, खांऊ छाछ'र बाटी।
(अपना घर अपना घर होता है)

आज री घड़ी'र काल रो दिन।
(अन्तहीन प्रतीक्षा)

आज हमां तो कल तमां।
(आज जो मेरे पर बीत रही है कल तुम पर भी बीत सकती है)

आज है जिसो काल कोनी।
(कोई भी सुख या दु ख समय के साथ भूल जाते हैं)

आटा कांटा घी घड़ा, खुला केशां नार।
तिलक बिना रो पाण्डियो, ल्याही जरख सुनार।।
(इनके अपशकुन माने गये है।)

आटै मै लूण खटावै जितो ही कूड़ खटावै।
(ज्यादा झूठ नहीं चल सकता)

आटै मै लूण खटावै - लूण मै आटो कोनी खटावै
(झूठ कपट एक सीमा तक ही चल सकता है)

आटै रै बदलै आटो – का कुत्ता रै खादोड़ा का खाटो।
(दोनो के मन मे खोट)

आठ आली नै साठ कद आवै।
(छोटी उम्र में विधवा होने पर खेद के साथ चिन्ता प्रकट करना।)

आठ गिणे – न – साठ।
(सबके सामने एक जैसा व्यवहार)

आदमी खावै सैंधै नै – कुत्तो खावै असैंधै नै।
(आदमी परिचित से घात करता है और कुत्ता अपरिचित को काटता है)

आदमी जाम आगै हारै। (जाम = संतान)
(अपनी सतान के आगे जोर नहीं चलता)

आदे'र व्यापारी जहाजे'र खबर।
(बिना मतलब ज्यादा खबर लेने वाला)

आधा देवी देवता – आधा खेतरपाल।
(धन का यत्र तत्र नाश कर देना)

आधी छोड़ पूरी नै धावै – आधी रहे न पूरी पावै।
(अधिक के लिए भागने से जो है वह भी नहीं रहता)

आधै पाणी न्याव।
(आधा आधा करके न्याय)

आधो मा (माघ) – गाभा भाः।
(आधा माघ मास बीतते बीतते सर्दी के कपड़ो की जरूरत कम हो जाती है)

आंख फरूकै जितै मै नाक काट लेवै।
(अति चतुर)

आंख फरूकै दाहणी, लात घमूका सहणी।
आंख फरूकै बांई, बीर मिलै कै सांई।।
(स्त्री के दाहिनी आख फडकने पर विपत्ति आती है, बायीं आख फडकने पर पति या भाई मिलता है, यानि शुभ है)

आंख फूटी'र पीड़ मिटी।
(अधिकतम नुकसान मान लेने के बाद मानसिक पीडा नहीं होती)

आंख मीच'र अन्धारो करणो।
(जानबूझ कर अनजान बनना)

आंख्यां देखता माक्खी कोनी गीटिजै।
(जानते हुए नुकसान/अपमान सहन नहीं होता)

आंख्या देखी साची - काना सुणी काची।
(सुनी सुनाई बात सच नहीं होती)

आंख्यां स्यूं आन्धो - नाम नैणसुख।
(नाम से क्या होता है, गुण चाहिए)

आंख मै घाल्योड़ो भी कोनी रड़कै।
(अत्यन्त सीधा बच्चा)

आंगली पकड़'र पुणचो पकड़ै।
(थोडी सी सुविधा दे देने पर वह पूरी की आस करता है)

आण्टो काढ़णो।
(काम निकालना)

आन्तरी आशीष देवै।
(दुआ अन्तर्मन से होती है)

आन्धा कुत्ता हिरणां लारै भागै।
(अपनी क्षमता से अधिक प्रयास करना)

आन्धा पीसै-कुत्ता खाय।
(बिना सूझ-बूझ काम करना)

आन्धा मै काणो राव।
(अज्ञानियों के मध्य कम ज्ञान वाले की पूछ हो जाती है)

आन्धी लारै मेह आवै।
(दु ख के बाद सुख भी आता है)

आन्धै आगै रोवो'र नैण गमावो।
(असक्षम आदमी से अपेक्षा करने से कोई लाभ नहीं है)

आन्धै नै कांई चइजे ? -क- दो आंख्यां।
(वह वस्तु जो बहुत बडा कार्य सम्पन्न कर दे)

आन्धै नै नेतो'र दो जिमावो।
(अविवेकी निर्णय से दुगुना नुकसान होता है)

आन्धै मामै ना स्यूं काणो मामो भलो।
(कुछ नहीं से जो है वही अच्छा)

आन्धै री गफी, बोळै रो बटको।
राम छुडावै तो छूटै, नहीं तो माथो ई पटको।।
(अन्धा आदमी पकडने के बाद व बहरे के काटने पर जल्दी छुटकारा सम्भव नहीं)

आन्धै री माक्खी राम उड़ावै।
(कमजोर व्यक्ति के सहायक भगवान होते हैं)

आन्धै रो तन्दुरो बाबो रामदेव बजावै।
(भगवान सबका रखवाला होता है)

आन्धो बांटे सीरनी, घर घर रां ने दै।
(पक्षपात, भाई भतीजावाद)

आन्धो'र अंजान एक जिसो हुवै।
(अज्ञानी व्यक्ति अन्धे के समान होता है)

आप आळोई घणीं बूरी सोचै।
(प्रिय व्यक्ति को अनहोनी की आशका ज्यादा रहती है)

आप कीजे कामणा, कैने दीजे दोष।
(अपने द्वारा की गई गलती के लिए किसे दोष दे?)

आप बाबोजी बैंगण खावै, दूजा नै परमोद सिखावै।
(दूसरो को सीख देते हैं, स्वय नहीं मानते)

आप भला तो जग भला।
(अच्छे आदमी के लिए सारा ससार अच्छा ही है)

आप मर्‌या जग प्रलय।
(स्वय मरने के बाद जग से कोई काम नहीं)

आप मर्‌या बिना स्वर्ग कोनी जाइजै।
(सफलता के लिए स्वय प्रयास करना पडता है)

आपरी करणी पार उतरणी।
(अपने कर्मो से ही कल्याण होता है/प्रयास स्वय के ही काम आते है।)

आपरी खींचो'र ओढ़ो।
(अपनी जिम्मेवारिया स्वय वहन करो)

आपरी गरज, गधे ने बाप बणावै।
(अपने स्वार्थ के लिए चापलूसी करना)

आपरी गळी मै कुत्तो भी शेर हुवै।
(अपने क्षेत्र मे अधिक आत्म विश्वास आ जाता है)

आपरी धोती मै सब नागा है।
(सबमें कमजोरी होती है।)

आपरी पूठ दीसै कोनी।
(व्यक्ति अपनी कमिया स्वय नहीं देख पाता)

आपरी मां नै डाकण कुण कैवै ?
(अपनी कमी का जिक्र कौन करता है)

आपरी साथळ उघाड्या आप ही लाज मरै।
(अपनी कमजोरी व्यक्त करने से स्वय ही लज्जित होना पड़ता है)

आपरै पगां पर कुल्हाड़ी मारणी।
(स्वय अपना अहित करना)

आपरो घर – हंग'र भर, परायो घर – थूकण रो भी डर।
(अपना घर अपना घर होता है।)

आ–बैल, मुझे मार।
(जानबूझ कर आफत मोल ले लेना)

आभो टोपसी सो लागै। (आभो = आकाश)
(अह भाव होना)

आभो पटकी, धरती झाली कोनी
(सर्वथा आश्रयहीन)

आम खाणै स्यूं मतलब है –का– पेड़ गिणनै स्यूं
(लाभ मिल रहा है तो अन्य विवेचना मे लाभ नहीं)

आयला रे भायला, खीर खाण्ड खायेला।
(केवल खाने पीने की दोस्ती)

आयो है सो जायसी, राजा रंक फकीर।
कई बैठ सिंहासनै, कई पांव लगी जंजीर।।
(जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है)

आ'रे म्हारा सपटमपाट, मैं थनै चाटूं तूं म्हनै चाट।
(दोनो के पास लेने देने को कुछ न होना)

आरे न कारे, लज्जा न व्यवहारे।
(बात पहले ही खुलासा कर लेनी चाहिए)

आव देखै न ताव।
(अति उतावला)

आवश्यकता अविष्कार की जननी है।
(जरूरत के अनुसार नई खोज भी होती है)

आसोजां मै मोती बरसै।
(आश्विन माह की बरसात फसलो के लिए बहुत लाभप्रद होती है)

इ

इग्यारसियो कोनी मरै कोई चवदसियो ही मरसी।
(खाता पीता आदमी मरता नहीं)

इनै पलट बिनै पलट, खोटो खोटो ही हुवै
(खोटा सिक्का दोनो तरफ से खोटा ही होता है)

ई

ई तिलां मै तेल कोनी
(इसमे कोई सार नहीं)

ईद रो चान्द।
(बहुत दिनो से मिलने वाला)

ईंरा जायोड़ा किसा पगै चालै।
(जिस व्यक्ति के प्रति भरोसा नहीं है)

उ

उगतै सूरज नै सगला नमस्कार करै।
(प्रगति करने वाले की पूछ होती है)

उड़े धतूरा - पूण्यां रा लेखा लागै।
(बहुत बडे खर्च मे छोटी मोटी रकम पर ध्यान देना)

उजड़ खेड़ा फिर बसै, निरधनिया धन होय।
जोबन गयो न बावड़े, बिलखै थारी जोय।
(उजडा हुआ बस सकता है, गया हुवा धन वापस आ सकता है।
पति के विरह मे तड़फती पत्नी कहती है कि पर गई जवानी वापस नहीं आती)

उठ बीन्द फेरा लै - हाय राम मौत दे।
(आलसी)

उठाया कुत्ता किती'क शिकार करै।
(बार बार तकाजा करके काम नहीं करवाया जा सकता है)

उतर भीखा म्हारी बारी
(मेरा क्रम आ गया)

उतर्‌यो घाटी, हुयो माटी।
(खाया और समाप्त)

उत्तर सासू देसी - बहू देवण आळी कुण हुवै।
(मुखिया ही निर्णायक होता है)

उधड़ती नै दायजो कोनी देइजै।
(जल्दी मचाने से काम नहीं होता)

उधार पेट री करणी।
(कर्जा करने से भूखे रह जाना अच्छा है)

उन्तावलै ने दो बार हंगणो पड़े।
(जल्दबाजी में काम खराब होता है)

उन्तावळो सो बावळो।
(जल्दबाजी मे काम खराब होता है)

उपासरे मै कांगसियो सोझै।
(गलत जगह से अपेक्षा करना)

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।
(गलती करने वाला ही दूसरे को दोष दे)

ऊ

ऊगतो ही तपै कोइनी, बो बिसिंजतो कांई तपसी।
(शुरूआत मे ही तत्पर नहीं है, वह बाद मे क्या तत्पर होगा)

ऊत रो गुरू जूत होवै।
(बदमाश का ईलाज पिटाई ही होता है)

ऊंखळी मै मायो दिया पछे मूसळ रो कांई डर।
(किसी कार्य के शुरू कर देने पर विपत्ति से क्या डरना)

ऊँच घर लक्ष्मी नीच घर जासी।
सोनै री थाली मै कुत्ता भोजन खासी।।
(कलियुग के लक्षण)

ऊँचा ज्यांरा बैठणा, ज्यांरा खेत निवाण।
बांरो दोखी कांई करै, ज्यांरा मीत दिवाण।
(जिनकी बैठक बड़े लोगो मे हो, जिनके खेत ढलान मे हो,
और दीवान जिसके मित्र हो उनका दुश्मन भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते)

ऊँची दुकान फीका पकवान।
(दिखावा मात्र)

ऊँठ किस करवट बैठता है।
(देखते हैं कि क्या परिणाम आता है)

ऊँठ कुदै जकेस्यूं पैली पिलाण नहीं कुदावणो।
(समय से पहले कोई बात नहीं कहनी चाहिए)

ऊँट चढ'र भीख मांगै – क – निसरनी चढ'र भीख कुण घालसी।
(पाने के लिए झुकना पडता है)

ऊँठ बिलाई लेयगी, हांजी हांजी कहणो।
(गलत होने के बावजूद हा में हा मिलाना)

ऊँठ रै घाव – डामै गधै नै।
(दोष किसी का सजा किसी को)

ऊँठ रै मुण्डै मै जीरो।
(आवश्यकता से बहुत कम)

ऊन्दरै रा जायोड़ा बिल ही खोदसी।
(पीढियो से जो काम करते आ रहे है आने वाली पीढी वही काम करेगी)

ऊपर ठेलो नीचै घी।
(एक तरफ डाट दूसरी तरफ पुचकार)

ऊपर दिया नीचै बाजै।
(जिसके पास कुछ न हो)

ऊपर स्यूं भरै नीचे स्यूं झरै – बैरो गुरू गोरख कांई करै।
(आय से ज्यादा खर्च करने वाला कभी अमीर नहीं हो सकता)

ऊभी आवै-आड़ी जावै
(औरत ससुराल मे आती है, वहा से आखिर अर्थी मे ही जाती है)

ऊभै नै पटकै, बैठ्यै नै गुड़ावै।
(टाग खिचाई करना)

ए

एक अनार सौ बीमार।
(कम ससाधन अधिक उपभोगकर्ता)

एक घर डाकण भी टाळै।
(किसी न किसी का लिहाज तो रखना ही पडता है)

एक चन्द्रमा नवलाख तारा।
एक सती अर नगर सारा।
(एक पराक्रमी सारे शहर की शोभा होता है)

एक "न'नो" सौ दुःख हरै
(मैं तो जानता नहीं हूँ , कहने से कई परेशानिया दूर रहती है)

एक पंथ दो काज।
(एक साथ दो काम हो जाना)

एक बार धोखो खावै – धोखो देवण वाळै री गलती।
दूजी बार धोखो खावै तो–खावण वाळै री गलती।
(एक जैसा या एक ही व्यक्ति से दुबारा धोखा नहीं खाना चाहिए)

एक म्यान मै दो तलवारां कोनी खटै।
(दो झगडालू एक साथ नहीं रह सकते)

एक रो ध्यान, दो री बात, तीन रो गावणो,
चार री चौधराहट, पांच री पंचायती, छः जणां रो छातीकूटो।
(ध्यान अकेले का, बात दो के मध्य, तीन व्यक्तियो का गायन, चार व्यक्तियो का दबदबा, पाच पचो का न्याय ठीक है पर इनसे ज्यादा होने से माथापच्ची ही होती है)

एक रो नानूड़ो, दसां रो डावड़ौ, बीसां बावळौ, तीसां तीखो, चालीसां चोखो, पचासां पाको, साठां थाको, सतरां सुलो, अस्सी लुलो, नब्बे नागो, सोवां तो भागो ई भागो।
(उम्र अनुसार व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाए होती है)

एकल हट्टी बाणियो, करै मन री जाणियो।
(अकेली दुकान वाला बनिया मनमाने भाव लगाता है)

एक लिख्यो -न- सौ झिक्यो।
(लिखित होना ठीक रहता है)

एक सासू नहीं हुवै बिरै सतरै सासूवां हुवै।
(जिसके एक मार्गदर्षक नहीं होता, उस पर हुकम चलाने वाले अनेक हो जाते हैं)

एक से भला दो।
(एक से दो अच्छे)

एक हाथ स्यूं ताळी कोनी बाजै।
(किसी भी सामजस्य के लिए दोनो को प्रयास करना पडता है)

एकै कानी कुओ - दूजै कानी खाई।
(दोनो तरफ नुकसान)

एकै दान्तै रोटी टूटै।
(घनिष्ठ मित्रता)

एकै पाणी मीठो।
(एक साथ दो विवाह हो जाना लाभप्रद रहता है)

एकै साध्यां सब सधै, सब साध्यां सब जाय।
(सब तरफ हाथ पैर मारने की अपेक्षा एक लक्ष्य बनाकर प्रयास से सफलता मिलती है)

ओ

ओछे की प्रीत-बाळू की भींत।
(ओछे आदमी की प्रीत मजबूत नहीं होती है)

ओ मुण्डों'र मसूर री दाळ।
(अपेक्षा से अधिक की चाह)

क

कई तो हुवे नै सरावे, कई अणहुवे नै बिसरावै।
(कई व्यक्ति गुणो के प्रशसक होते हैं कई सदा नुक्स निकालते रहते हैं)

कड़वी बोलै मावड़ी, मीठा बोलै लोग।
(मा बच्चे को सुधारने के लिए कठोर अनुशासन करती है)

कठै राजा भोज, कठै गंगू तेली।
(कोई समानता नहीं)

कथनी करनी एक हुणी चइजै।
(जैसा कहना वैसा ही करना चाहिए)

कद मरी सासू-अबै आया आंसू
(पुरानी बात का बहाना)

कंगाली मै आटो गीलो।
(अभाव मे और अभाव)

कपूत बेटो कांध नैं आडो आवै।
(कपूत आदमी भी कभी काम आ जाता है)

कबरी आंख कबूतर बाज, ओछी गरदन दग्गेबाज।
(शारीरिक लक्षणो से व्यक्तित्व का अनुमान)

कबीरा जब पैदा हुए, जग हंसा तुम रोये।
ऐसी करणी कर चलो, तुम हंसो जग रोये।।
(पैदा होते समय बच्चा रोता है व परिजन खुश होते हैं।
सत्कर्म करके जाने वाले हसते हसते जाते है व दुनिया उनके लिए रोती है)

कबूतर नै सगला दाणां नाख दै – कागलै न कोई कोनी नाखै।
(सीधे व्यक्ति को सहयोग मिल जाता है चालाक को नहीं)

कभी नहीं से देर भली।
(ज्यादा तेज नहीं चलना चाहिए)

क्या पीळे रो ओढ़णो, जो धूप पड्यां उड़ जाय।
क्या गाण्डू री दोस्ती, जो भीड़ पड्यां भग जाय।।
(धूप मे रग उड जाये व विपदा मे भाग जाने वाले दोस्त किसी काम के नहीं होते)

करणी आपो आप री।
(अपने कर्म से ही फल मिलता है)

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात पे सिल पर पड़त निसान।।
(निरन्तर प्रयास से सफलता मिलती ही है)

कर्महीन को ना मिलै, भली वस्तु रो भोग।
दाख पकै जद काग रै, होत गळै मे रोग।।
(कर्महीन अवसर आने पर चूक जाता है)

कर्महीन खेती करै – का काळ पड़ै, का बळद मरै।
(भाग्यहीन)

कर्‌योड़ा रा घर देख लै, नहीं तो कर'र देख लै।
(दूसरो के अनुभवों से सबक ले लेना चाहिए)

कर्‌यो सो काम, भज्यो सो राम।
(किसी भी काम को तुरन्त कर लेना ही ठीक है)

करेलो अर नीम चढ़्यो
(बिगाड में बिगाड)

करै कोई - भरै कोई।
(किसी दूसरे के किये का खामियाजा कोई दूसरा भुगते)

करै जिसो भरै।
(जैसा करे वैसा ही फल मिले)

करै शरम फूटै करम।
(बात स्पष्ट कह देनी चाहिए)

करोत आवंती भी काटै - जावंती भी काटै।
(दोनो तरफ लाग)

करो बेटा फाटका, घर रा रैवो न घाटका, बेचो थाळी बाटका।
(सट्टा जुआ करने वाले सदा नुकसान उठाते हैं)

करो सेवा - पावो मेवा।
(सेवा करोगे तो अच्छा फल मिलेगा)

कळजुग मे ठीकरी नाचै।
(कलियुग मे अज्ञानी अपना वर्चस्व दिखाते हैं)

कल नहीं रहा तो आज भी नहीं रहेगा।
(सुख दु ख सदैव एक जैसे नहीं रहते)

कहां गौरख कहां भरथरी, कहां गोपीचन्द गौड़।
सिद्ध गया ही पूजिये, सिद्ध रह्या री ठौड़।।
(सिद्ध पुरूषो के जाने के बाद उनके स्थानो की पूजा होती है)

का

काकड़िया ईता कंवळा कोनी।
(इतना सरल नहीं है)

का कमावे बेटा, का कमावै फेटा।
(या तो बेटा कमाता या ग्राहको की भीड लगी रहे तो कमाई होती है)

काग बोलै अर कुत्ता भौंसै।
(जहा कुछ नहीं हो)

कागलां री पूछ श्राद्धां मे हुवै।
(समय पर सबका महत्व होता है)

कागला रै कोस्यां भैंस थोड़े ही मरै।
(किसी के बारे मे बुरा सोचने से उसका बुरा थोडे ही होता है)

का घी घणां - का मुठ्ठी चीणां
(कभी बहुत ज्यादा, कभी नहीं के तुल्य)

का घोड़ो घोड़ा मै, का मैदानां मे।
(या पूरी मौज या कठोर परीक्षा)

काचर रो तो एक बीज घणो, जिको सौ मण दूध फाड़ दे।
(एक मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है)

काच रै महल मै रहवै जका दूसरै रै घरै भाटो कोनी मारै।
(स्वय की कमजोरी होती है वह दूसरो के दोष नहीं निकाल सकता)

काची हाण्डी रै कारी लाग जावै, पाकी हाण्डी रै कोनी लागै।
(बच्चो को सुधारा जा सकता है बडो की आदते नहीं बदल सकते)

काजळ नै कितो ही धोवो सफेद कोनी हुवै।
(स्वभाव नहीं बदलता)

काजळ री कोठरी मै काला दाग लागसी ही लागसी।
(बुरे की सगत करने पर असर तो आयेगा ही)

का ठगावै रोगी, का ठगावै भोगी।
(रोगी व भोगी धन को नहीं देखते)

करैलो अर नीम चढ्यो
(बिगाड मे बिगाड)

करै कोई – भरै कोई।
(किसी दूसरे के किये का खामियाजा कोई दूसरा भुगते)

करै जिसो भरै।
(जैसा करे वैसा ही फल मिले)

करै शरम फूटै करम।
(बात स्पष्ट कह देनी चाहिए)

करोत आवंती भी काटै – जावंती भी काटै।
(दोनो तरफ लाग)

करो बेटा फाटका, घर रा रैवो न घाटका, बेचो थाळी बाटका।
(सट्टा जुआ करने वाले सदा नुकसान उठाते हैं)

करो सेवा – पावो मेवा।
(सेवा करोगे तो अच्छा फल मिलेगा)

कळजुग मै ठीकरी नाचै।
(कलियुग में अज्ञानी अपना वर्चस्व दिखाते हैं)

कल नहीं रहा तो आज भी नहीं रहेगा।
(सुख दु ख सदैव एक जैसे नहीं रहते)

कहां गौरख कहां भरथरी, कहां गोपीचन्द गौड़।
सिद्ध गया ही पूजिये, सिद्ध रह्या री ठैड़।।
(सिद्ध पुरूषो के जाने के बाद उनके स्थानो की पूजा होती है)

का

काकड़िया ईता कंवळा कोनी।
(इतना सरल नहीं है)

का कमावै बेटा, का कमावै फेटा।
(या तो बेटा कमाता या ग्राहको की भीड लगी रहे तो कमाई होती है)

काग बोलै अर कुत्ता भौंसै।
(जहा कुछ नहीं हो)

कागलां री पूछ श्राद्वां मै हुवै।
(समय पर सबका महत्व होता है)

कागला रै कोस्यां भैंस थोड़े ही मरै।
(किसी के बारे मे बुरा सोचने से उसका बुरा थोडे ही होता है)

का घी घणां – का मुठ्ठी चीणां
(कभी बहुत ज्यादा, कभी नहीं के तुल्य)

का घोड़ो घोड़ा मै, का मैदानां मै।
(या पूरी मौज या कठोर परीक्षा)

काचर रो तो एक बीज घणो, जिको सौ मण दूध फाड़ दै।
(एक मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है)

काच रै महल मै रह्वै जका दूसरै रै घरै भाटो कोनी मारै।
(स्वय की कमजोरी होती है वह दूसरो के दोष नहीं निकाल सकता)

काची हाण्डी रै कारी लाग जावै, पाकी हाण्डी रै कोनी लागै।
(बच्चों को सुधारा जा सकता है बडो की आदते नहीं बदल सकते)

काजळ नै कितो ही धोवो सफेद कोनी हुवै।
(स्वभाव नहीं बदलता)

काजळ री कोठरी मै काला दाग लागसी ही लागसी।
(बुरे की सगत करने पर असर तो आयेगा ही)

का ठगावै रोगी, का ठगावै भोगी।
(रोगी व भोगी धन को नही देखते)

काठ री हाण्डी दूजी बार कोनी चढ़ै।
(बार बार मूर्ख नहीं बनाया जा सकता)

काठै मै भाटो'र गीलै मै गोबर
(जहा कुछ नहीं हो)

काढ़ो सूरज जी तावड़ियो, जीवै थांरो डावड़ियो।
(सूर्यदेव से धूप की कामना)

काणकी री आंख मै काजळ ही कोनी सुहावै।
(किसी का थोडा सा अच्छा होना भी अखरता है)

काणो बाडो काबरो, सर से गंजा होय।
इन से जब बात करो, हाथ मै डण्डा होय।।
(ये बहुत चतुर व तेज होते हैं)

काणो माटी सावै नीं – काणै बिना नीन्द आवै नीं।
(नोक झोक करते रहना)

काती करेलो, आसोज दही, मरै नहीं तो ताव तो सही।
(कार्तिक मास मे करेला, आसोज मास मे दही नहीं खाना चाहिए)

काती मै सब साथी।
(एक अवसर पर सब साथ होते हैं)

का तो मूरख खाय मरै, का मूरख ऊंचाय मरै।
(मूर्ख आदमी अधिक खाकर या क्षमता से अधिक काम कर नुकसान उठाता है)

कात्यो पीत्यो/पीज्यों कपास।
(काम पूरा करके नाश कर देना)

काण्टो काढ़णो।
(मतलब सिद्ध करना)

काण्टो काण्टै स्यूं निकलै।
(कुटिल से निपटने के लिए कुटिल होना पड़ता है)

काण धड़े मै निसर ज्या।
(किसी मे कम, किसी मे अधिक, बराबर हो जाना)

काण्टो बुरो करील को, और बदली की घाम।
सौत बुरी है चून की, और साझै की गाय।।
(ये चीजे फलदायक नहीं होती)

काणीं छोरी जाई-क-उतर दे दे धाई।
(दुनिया की टीका टिप्पणी से परेशान)

कात्यो ज्यांरो सूत, जायो ज्यांरो पूत।
(जिसने जन्म दिया है सतान उसी की है)

कांई लायो है अर कांई ले जासी, ओ अठेरो अठे ही रह जासी।
(जन्म के साथ कुछ लाये नहीं, मृत्यु होने पर कुछ साथ जायेगा नहीं)

कांच कटोरा नैण जल, मोती दूध अर मन।
इता फाट्या ना मिलै, कर ल्यो लाख जतन।।
(ये टूटने के बाद जुडते नहीं।)

कान्दे रा छूंतका किताई उतारो।
(बेबात की बात कितनी ही करो)

कान्धै टाकर डांगरौ, बरस ब्यावणी नार।
कुबेला रो पावणो, तीनां रो मुंह बाळ।।
(कन्धे पर घाव वाला पशु, हर वर्ष प्रसव करने वाली स्त्री,
बेवक्त का मेहमान -- इन तीनो से भगवान बचाये)

कान रा काचा।
(सुनी सुनाई बात का विश्वास करना)

कानिया मानिया कुर्र, तूं चेलो म्हैं गुर।
(आपस मे ही खुश हो लेना)

कानून गेडिये मे है।
(सक्षम आदमी कानून अपने अनुकूल बना लेता है)

काम प्यारो है, चाम प्यारी कोनी।
(काम अच्छा लगता है केवल सुन्दरता नहीं)

काम री मेद्या कोनीं - पईसे री पैदा कोनीं।
(काम अनाप शनाप पर आय कुछ नहीं)

काया राम री - माया राज री।
(तन राम का है धन सरकार का हे)

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल मे प्रलय होयगी, बहुरि करेगो कब।।
(आज का काम कल पर नहीं छोडना चाहिए।)

काळ कुसमै ना मरै, बामण बकरी ऊँट।
बो मांगे, बा फिर फिर चरै, बो सुका चाबै ठूंठ।।
(अकाल मे भी ब्राह्मण, बकरी व ऊँट मरते नहीं)

का'ल मरी - आज भूतणी हुगी।
(थोडी सी सफलता से ही इतराने लगना)

का'ल मरी सासू - आज आया आंसू।
(दु ख का प्रदर्शन)

काळ मै ईधक मास।
(अभाव मे और अभाव)

काळियै खनै गोरियो बैठै, रंग नहीं अकल तो आवै।
(सगत का असर आता ही है)

काळी घणीं कुरूप, कस्तूरी कांटा तुलै।
शक्कर बड़ी सरूप, रोड़ा तुलै राजिया।।
(रग की नहीं गुण की पूजा होती है)

काळी पीली अमावस।
(कुरूप व झगडालू)

काळो अक्षर भैंस बराबर।
(जिसे पढना नहीं आता)

काशी मै किसा गधा कोनी हुवै।
(मूर्ख हर जगह मिलते हैं)

कि

कियां ठाकरां, जोर मै हो ? – क – हां चोदू रै तो बैरी ई हां।
(कमजोर के तो पक्के दुष्मन है)

किरपण रै दाळद नहीं, नहीं सूरां रै शीष।
दातारां रै धन नहीं, ना कायर रै रीस।।
(कजूस के दरिद्रता नहीं, शूरवीर मरने के लिए तैयार रहता है, उदार धन सग्रह नहीं करता व कायर व्यक्ति गुस्सा नहीं करता)

किशत खेती, झीखत विद्या।
(खेती के लिए श्रम करना पडता है, विद्या के लिए प्रयास)

की

कीकर काट'र हल घड़ै, रस कस री रांधै खीर।
न्यूत जिमावै भाणजो, कदै न निष्फल जाय।
(ये बेकार नहीं जाते)

कीड़या छमक्या कांई गरज सरै।
(कमजोर को सताने से कोई लाभ नहीं होता)

कीड़ी नैं तो मूत रो रेळो ही घणों।
(कमजोर आदमी को थोड़ा सा नुकसान ही बहुत होता है)

कीड़ी नै कण, हाथी नै मण।
(सबके दाता राम)

कीड़ी संचै तीतर खाय, पापी रो धन परलै जाय।
(पाप कर्म से सचित किया गया धन व्यर्थ जाता है)

कु

कुओ तिसै खनै कोनी आवै, तिसो कुऐ खनै आवै।
(जिसे जरूरत होती है वह प्रयास करता है)

कुए मे हुवै जणै खेळी मे आवै।
(धन सचित होगा तभी उपयोग के समय उपलब्ध होगा)

कुठोड़ खाई – सुसरो वैद्य।
(ऐसी बात जो किसी को बता भी न सके)

कुत्तड़ी कादे मे फंसगी।
(दिक्कत मे आ जाना)

कुत्ते बिल्ली रो बैर।
(गहरी दुश्मनी)

कुत्ते री पूंछ सीधी कोनी हुवै।
(आदत नहीं बदलती)

कुंवारी कन्या रै सौ वर हुवै।
(निर्णय न करने तक अनेक विकल्प सम्भव है)

कुंवारी राण्ड कोनी हुवै नी।
(किसी बात का कोई निश्चित कारण व क्रम होता है)

कुमाणस आयो भलो, न जायो भलो।
(कपूत जन्मा हुआ या आया हुआ दोनो ही स्थिति मे अच्छा नही है)

कुम्हार कुम्हारी नै कोनी नावड़ै – गधियै रा कान खींचै।
(कमजोर व्यक्ति को प्रताडित करना)

कुम्हार री बेटी'र काकोजी नाम।
(बडे बोल बोलना)

कुम्हार रै घरै खाण्डी हाण्डी।
(सम्पन्न व्यक्ति के पास भी कुछ अभाव होता है)

कुवै मै ही भांग पड़गी।
(सब एक ही तरह परम्पराओ के विपरीत व्यवहार करने लगे)

के

के गधी नै खुलखुलियो होग्यौ।
(ऐसी क्या विशेष बात हो गई)

के चारण री चाकरी, के एरण री राख।
के भांडा रो गावणो, के साटियै रो साख।।
(कहना सरल है करना मुश्किल)

केवणो सोरो - करणो दोरो।
(कहना सरल है करना मुश्किल)

कै

कैनई बैंगण बायला - कैनई बैंगण पच।
(एक ही वस्तु किसी के लिए लाभप्रद व किसी के लिए नुकसानप्रद हो सकती है)

कैयोड़ी जचै मौकै पर।
(अवसर पर कही बात उपयुक्त लगती है)

को

कोई गावै होळी रा, कोई गावै दीवाळी रा।
(बिना सन्दर्भ की बात करना)

कोई फिरै डाळ डाळ, हूँ फिरूं पात पात।
(पूरी गहराई से जाच)

कोई सांपनाथ-कोई नागनाथ।
(एक जैसे)

कोट कड़ुम्बो खीचड़ो, खग बावां अर काछ।
इतणा तो जाडा भला, छाती छाटी छाछ।।
(दुर्ग, परिवार, खिचडा, तलवार, बाहे, जघायें, सीना, बोरा, व छाछ आदि मोटे होने चाहिए)

कोट री शोभा कगूंरा कह देवै।
(किले की सुन्दरता कगूरो से पता चल जाती है)

कोठै आळी - होठै आवै।
(जो मन मे होता है वही जबान पर आता है)

कोडी सट्टे हाथी जाय, पण कोडी हुवै तो हाथी आय।
(बिना पैसे सस्ता होने पर भी खरीद नहीं कर सकते)

कोतवाली कठै ? अठै ही जूत पडै तो आ कोतवाली ही है।
(जहा सजा मिले वही कोतवाली)

कोथली मै गुड़ कोनी भांगणो।
(अन्दर ही अन्दर कोई बात नहीं करनी)

कोयला री दलाली मै हाथ काळा।
(फालतू में उपालम्भ मिलना)

कौ

कौआ किससे लेत है, कोयल किसको देत।
वाणी ही के कारणे, जग अपनो कर लेत।।
(मधुर वाणी मोहित कर लेती है)

कौन चाहे बोलना, कौन चाहे चुप?
कौन चाहे बरसना, कौन चाहे धूप?
माता चाहे बोलना, चोर चाहे चुप।
माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धूप।

ख

खड़्यो न दीखै पारधी, लाग्यो न दीखै बाण।
म्हैं थनैं पूछूं ए सखी, किस बिध तज्या प्राण ?
नेह घणों और नीर थोड़ो, लाग्या प्रीत का बाण।
तूं पी, तूं पी, करता दोन्यूं तज्या प्राण।।
खनै कोनी अख़त रा बीज – बेटो खेलै आखा तीज।
(कुछ न होने के बावजूद प्रदर्शन करना)

खळ म्हां स्यूं तेल निकाळै।
(अति सयाना)

खर, घघ्घू मूरख नरां, सदा सुखी पिरथीराज।
(गधा, घघ्घू व मूर्ख आदमी सुखी रहते हैं। उनका कोई दायित्व नहीं होता)

खरच रा भाग मोटा।
(खर्च भी भाग्य से ही होता)

खर डावा विष जीवणां।
(गधा बायी ओर व साप दायी ओर का शकुन अच्छा होता है)

खरबूजै नै देख'र खरबूजो रंग बदळै।
(देखादेखी करना)

खसम एक ही राखणो।
(महाजन एक ही रखना चाहिए)

खा

खाई खटाई सो गयो मर्द, खाई मिठाई सो गई लुगाई।
(आदमी झगडे से व औरत मीठी बात करने वालो से परहेज करे)

खाख मै बेटो अर मां गांव डण्डोळती फिरै।
(पहले घर मे तहकीकात कर फिर पूछना चाहिए)

खाण्डे री धार।
(कठिन काम)

खांवतो पींवतो मरै कोनी।
(मुनाफा वसूल करते रहना चाहिए)

खा बाणियां गुड़ थारो ही है।
(उसी की कीमत पर उसी का मान)

खायोड़ो किसो पाछो कढ़ै।
(दी हुई रिश्वत वापस नहीं आती)

खायोड़ो पाछो निकळै जणै दोरो घणो निकळै।
(आया हुआ वापस जाता है तो बडी मुश्किल होती है)

खा'र पछताणो चोखो।
(मुनाफा खाकर पछताना भी पडे तो ठीक है)

खाल कोनी बासै।
(किसी के मन मे क्या है ? पता नहीं चलता)

खाली दिमाग शैतानी का घर।
(जिसके पास करने को कुछ नहीं होता वे इधर उधर की करते हैं)

खावणो आपरी पसन्द रो, पहरणो दूसरै री पसन्द रो।
(अपने को अच्छा लगे वह खाना व दूसरे की पसन्द का पहनना)

खावै नहीं तो ढ़ोळाय तो देवै।
(आप स्वय खाये नहीं पर गिरा दे जिससे वह दूसरे के खाने लायक नहीं रहे)

खावै पीवै खसम रो, गीत गावै बीरै रा।
(श्रेय अन्य को देना)

खि

खिसियाई बिल्ली खम्भा नोचै।
(खुद सफल नहीं होता, दूसरे की नुक्ताचीनी करता है)

खु

खुणखुणीयो हुवै जणै बाजै।
(कुछ पास मे हो तो काम हो)

खुद मर्‌यां ही स्वर्ग मिलै।
(अपना काम स्वय करने से ही सफलता मिलती है)

खुदा मेहरबान तो गधा पहलवान।
(भगवान का आशीर्वाद हो तो कोई परवाह नहीं)

खुदी को कर बुलन्द इतना, कि तकदीर लिखने से पहले।
खुदा खुद बन्दे से ये पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है ?
(आत्मविश्वासी स्वय अपनी तकदीर लिखते हैं)

खू

खूटी नै बूण्टी कौनी।
(आयुष्य समाप्त हो जाने पर ईलाज सम्भव नहीं होता।)

खे

खेती पांती बीनती, परमेश्वर रो जाप।
पर हाथां नहीं कीजिए, इतरा करिए आप।।
(खेती, हिस्सा, प्रार्थना व जप स्वय करने से ही लाभ होता हैं)

खेती सार री – धीणों तार रो।
(खेती को सम्भालने से व गाय की सेवा करते हैं तभी लाभ होता है)

खेल खत्म – पैसा हजम।
(अब और कुछ नहीं मिलना)

खो

खोड़ी बहू फूस बा'र – एक म्हांरी टांग झाल।
(बिना क्षमता वाले आदमी को काम सौंपने से स्वय को साथ लगना पडता है)

खोड़े स्यूं अड़ जावे जणै काणै नै बीच मै लेणो।
(लगड़े से कहीं फस जाये तो काने को बीच मे डालना चाहिए)

खोद्‌यो पहाड़ – निकळी चुहिया।
(अधिक प्रयास कम लाभ)

खोदै जको पड़े।
(दूसरे का नुकसान सोचने वाले को स्वय ही नुकसान होता है)

ग

गई भैंस पाणी मै।
(हाथ से गया)

गई ही कागोलियो करावण, कांच निकलवा'र आगी।
(सुधारने की जगह और बिगाड हो जाना)

गधे रै सींग कोनी हुवै।
(चेहरे से मूर्ख आदमी का पता नहीं चलता)

गंगा उल्टी बहृवै।
(निर्धारित कम या परम्परानुसार काम न होना)

गंगा गये तो गंगादास, जमुना गये तो जमुनादास।
(अवसर देख कर बदल जाना)

गढ़ री शोभा कंगूरा कै देवै।
(देखते ही आभास हो जाता है)

गंजै नै परमात्मा नख नहीं देवै।
(परेषान को और परेषानी न हो)

गंजै रो निकळनो'र गड़ा रो पड़णो।
(साप अगुला का मेल)

गया हा नमाज पढ़ण'नै, रोजा गळै पड़ग्या।
(करने कुछ जाये वहा कुछ और गले पड जाना)

गरज मिटी, गूजरी नटी।
(स्वार्थ सिद्ध होने के बाद तवज्जो न देना)

गरजै सो बरसै नहीं।
(जो जोर से बोलते हैं वे काम नहीं करते)

गहणो - धायां रो सिणगार है, भूखां रो आधार है।
(गहना–सम्पन्नता मे श्रृगार विपत्ति में आधार होता है)

गा

गाड़ी तो चीलां ही चालै।
(बड़ों के मार्ग पर ही छोटे चलते हैं)

गाड़ी देख'र पग सुजावै।
(सुविधा मिलती हो तो श्रम से कतराना)

गाड़ी नीचै छींया मै कुत्तो चालै, कुत्तो जाणै गाड़ी म्हारै ताण
(भ्रम पालना)

गाड़ै मै छाजलै रो कांई भार।
(बडे के साथ छोटा मोटा काम और हो जाये तो क्या फर्क पडता)

गाजै सो बरसै नहीं, बरसै घोर अन्धार।
(जो बोलते हैं करते नहीं जो करते हैं बोलते नहीं)

गाण्ड रो फोड़ो अर पाड़ौसी बोहरो।
(देनदारी पास वाले की नहीं रखनी चाहिए)

गांव गयो सुतो जागै।
(दूर गया हुआ पता नहीं कब आये)

खोड़ै स्यूं अड़ जावे जणै काणै नै बीच मै लेणो।
(लगड़े से कहीं फस जाये तो काने को बीच मे डालना चाहिए)

खोदूयो पहाड़ – निकळी चुहिया।
(अधिक प्रयास कम लाभ)

खोदै जको पड़ै।
(दूसरे का नुकसान सोचने वाले को स्वय ही नुकसान होता है)

ग

गई भैंस पाणी मै।
(हाथ से गया)

गई ही कागोलियो करावण, कांच निकलवा'र आगी।
(सुधारने की जगह और बिगाड हो जाना)

गधे रै सींग कोनी हुवै।
(चेहरे से मूर्ख आदमी का पता नहीं चलता)

गंगा उल्टी बह्वै।
(निर्धारित कम या परम्परानुसार काम न होना)

गंगा गये तो गंगादास, जमुना गये तो जमुनादास।
(अवसर देख कर बदल जाना)

गढ़ री शोभा कंगूरा कै देवै।
(देखते ही आभास हो जाता है)

गंजै नै परमात्मा नख नहीं देवै।
(परेषान को और परेषानी न हो)

गंजै रो निकळनो'र गड़ा रो पड़णो।
(साप अगुला का मेल)

गया हा नमाज पढ़ण'नै, रोजा गळै पड़ग्या।
(करने कुछ जाये वहा कुछ और गले पड जाना)

गरज मिटी, गूजरी नटी।
(स्वार्थ सिद्ध होने के बाद तवज्जो न देना)

गरजै सो बरसै नहीं।
(जो जोर से बोलते हैं वे काम नहीं करते)

गहणो - धायां रो सिणगार है, भूखां रो आधार है।
(गहना–सम्पन्नता मे श्रृगार विपत्ति मे आधार होता है)

गा

गाड़ी तो चीलां ही चालै।
(बडो के मार्ग पर ही छोटे चलते हैं)

गाड़ी देख'र पग सुजावै।
(सुविधा मिलती हो तो श्रम से कतराना)

गाड़ी नीचै छींया मै कुत्तो चालै, कुत्तो जाणै गाड़ी म्हारै ताण चालै।
(भ्रम पालना)

गाड़ै मै छाजलै रो कांई भार।
(बडे के साथ छोटा मोटा काम और हो जाये तो क्या फर्क पडता)

गाजै सो बरसै नहीं, बरसै घोर अन्धार।
(जो बोलते हैं करते नहीं जो करते हैं बोलते नहीं)

गाण्ड रो फोड़ो अर पाड़ौसी बोहरो।
(देनदारी पास वाले की नहीं रखनी चाहिए)

गांव गयो सुतो जागै।
(दूर गया हुआ पता नहीं कब आये)

गांव बस्यो कोनीं, मंगता पैलां ही आग्या।
(चन्दा मागने वालो से परेशान)

गाय कुदे – खूंटे रै ताण कुदे।
(सक्षम आदमी के भरोसे दम्भ भरना)

गाय गई – गळाउण्डो लेगी।
(हानि के साथ अतिरिक्त हानि)

गाय दूह'र गण्डका ने नाख दे।
(परिश्रम करके भी काम बिगाड देना)

गाय न बाछी – नीन्द आवे आछी।
(जिसके पास कुछ नहीं उसे कोई चिन्ता नहीं)

गाय माता गोमती, डूडियो गणेश।
भैंस राण्ड भूतणी, पाडियो पलीत।
(गाय को माता व बछडे को गणेश माना गया है।)

गाय रै भैंस कांई लागै।
(किसी भी प्रकार का सम्बन्ध न होना)

गि

गिरह जाणै – डाकोत जाणै।
(किसी व्यक्ति के भरोसे पर छोडना)

गी

गीदड़ मारी पालखी, तो मुंवा मुग ही चालसी।
(प्रयास व प्रेरणा से आलसी व्यक्ति काम नहीं करता)

गु

गुड़ खावै गुलगुलां स्यूं परहेज।
(दिखावे के लिए परहेज करेगे पर रूप बदल कर स्वीकार)

गुड़ दियां मरै जणै जहर क्यूं देवणो।
(मिठास से समाधान हो तो कड़ुवा क्यो कहना)

गुड़ दीखै/हुवै जठै माख्यां आवै।
(जहा कुछ मिलना हो वहा स्वत आ जाते हैं)

गुड़ बिना चौथ अधूरी।
(व्यक्ति/वस्तु विशेष बिना काम सम्भव नहीं)

गुड़ री भेली कुत्ता खाय - पापी रो धन परलै जाय।
(चोरी का माल व्यर्थ ही चला जाता है)

गुरू गुड़ ही रहग्या - चैला चीणी बणग्या।
(छोटे का बडे से आगे निकल जाना)

गुरू बिना ज्ञान नहीं।
(बिना गुरू के ज्ञान नहीं आ सकता)

गुवाड़ रो जायड़ो किनै बाप केवै।
(जिसका कोई धर्णी धोरी नहीं हो)

गू

गूंगा थारी सैन मै, समझै जणां दोय।
एक गूंगै री मावड़ी, दूजी गूंगै री जोय।।
(गूगे के इशारे को उसकी मा या पत्नी ही समझ सकती है)

गूंगी सासरै जावै कोनी, जावै तो पाछी आवै कोनी।
(मुर्ख झक पकड लेता है तो छोडता नहीं)

गे

गेला-गण्डक-गुलाम, बुचकार्‌यां बाथै पड़ै।
कूट्‌यां देवै काम, रीस न कीजै राजिया।।
(मूर्ख, कुत्ता व दास को मुह लगाने से वे काम नहीं देते)

गै

गैला गांव मती बाली – क – भलो चैतायो।
(मूरख आदमी को टोकना भी अहित का हो जाता है)

गैली – सबस्यूं पैली।
(नासमझ को प्राथमिकता देनी पडती है)

गैलो गांव नै कोनी जाणै, गांव गैलै न जाणै।
(व्यक्ति गाव वालो को नहीं जानता पर व्यक्ति को पूरा गाव जानता है)

गो

गोगो टूठै जकैरै गुसांई भी टूठै।
(सयोग होता है तो सब ओर से लाभ होता है)

गोद आळै नै नाख'र पेट आळै री आस करै।
(जो पास मे है उसे छोडकर अतिरिक्त की आशा करना)

गोहिंरै रो पाप पींपली नै जळा देवै।
(अपराधी को शरण देने वाला भी मारा जाता है)

घ

घड़ै स्यूं घड़ो कोनी भरी जै।
(क्षतिपूर्ति बराबर नहीं हो सकती)

घणीं गई थोड़ी रैई।
(बुजुर्ग लोग कहा करते है कि अधिक तो चला गया, अब उनके जीवन का थोडा समय ही बाकी है)

घणीं दायां जापो बिगाड़ देवै।
(ज्यादा समझदार मिलकर काम बिगाड देते हैं)

घणीं नीन्द किसान ने बोवै, रोग नै बोवै धांसी।
बड़ो ब्याज मूल नै बोवै, त्रिया ने बोवै हांसी।
(आलस्य किसान के लिए घातक है, खासी रोग का मूल है,
ज्यादा ब्याज मूलधन को भी ले डूबता है व अधिक हसी औरत के लिए घातक है)

घणीं बहुवां बटाउवां लारै करण खातर थोड़ै ही हुवै।
(अधिक सम्पति दूसरो के लिए नहीं होती)

घणों खावै घुणं, पींच्यां निकलै पाणी।
(केवल खाने से ताकतवर नहीं होता)

घणों चतर चीखळै मै पड़ै।
(ज्यादा चतुराई करने वाला नुकसान उठाता है)

घणों हेत टूटण नै - बड़ी आंख फूटण नै।
(प्रेम व विश्वास की सीमा रखनी चाहिए)

घर आयो - मां जायो।
(अतिथि सहोदर भाई के समान होता है)

घर आवंती लक्मी रै ठोकर नहीं मारनी।
(लड़के के लिए अच्छी लडकी का सम्बन्ध आये तो इकार नहीं करना चाहिए)

घर आयो साळो-घर गयो साळो।
(खरीददार या बिकवाल की गरज के अनुसार भाव होते हैं इसी प्रकार चलाकर पूछने का फर्क पड़ जाता है)

घर काग/गाय मुखो, दुकान छाज/सिंह मुखी।
(घर आगे से सकडा व पीछे चौड़ा व दुकान आगे से चौडी व पीछे सकड़ी होनी चाहिए)

घर का भेदी लंका ढ़ाये।
(घर भेदी नुकसानदायक होता है)

घर केवै मनै खोल'र देख, ब्यावं केवै मनै माण्ड'र देख।
(घर निर्माण व विवाह कार्य मे आदमी आखिर थक ही जाता है)

घर घोंच्या रो बल्यो, पण ऊन्दरा भी सुख कोनी पावै।
(सब के नुकसान का असर दूसरे पर भी पडता है)

घृत बिना मृत रसोई, लूण बिना पूण रसोई।
(घी व नमक बिना स्वाद अधूरा है)

घर दूर – घट्टी भारी।
(काम बहुत पडा है–थकान पहले ही आ गई)

घर फूंक'र तमाशो देखणो।
(अपना नुकसान कर भी प्रदर्शन करना)

घर बैठ्यां गंगा आयगी।
(स्वत लाभ प्राप्त हो जाना)

घर बळतो कोनी दीखै – डूंगर बळतो दीखै।
(दूसरो पर टीका टिप्पणी करते हैं, अपने गिरेबान मे नहीं झाकते)

घर बाळ'र तीरथ करणो।
(अपना नुकसान उठाकर भी भला करना)
घर बिना दर नहीं।
(अपना घर प्रतिष्ठा का सूचक होता है)

घर रा जोगी जोगिया, आन गांव रा सिद्ध।
(अनजान व्यक्ति के प्रति भ्रम/आकर्षण रहता है)

घर रा देव – घर रा पुजारी
(अपनो की बडाई करना)

घर रा पूत कंवारा फिरै, पाड़ौसी ने फेरा देवै।
(स्वय के कार्य अपूर्ण रहते हुए दूसरे के कार्य में लगे रहना)

घर री खाण्ड किड़किड़ी लागै, गुड़ चोरी रो मीठो।
(दूसरे की बीवी सुन्दर दिखती है)

घर री मुर्गी दाल बराबर।
(बुद्धिमान व्यक्ति की अपनों मे पूछ नहीं होती)

घर हाण अर लोक हंसी।
(घर मे नुकसान व जग हसाई)

घा

घाघरियै आळो गनों नेड़ो लागै।
(ससुराल वालों से ज्यादा घनिष्ठता)

घालतै रो घी घणो हुवै।
(कुछ मिलता हो, उस समय आनाकानी करना)

घी

घी अन्धारै मै भी छानो कोनी रैहवै।
(योग्यता गुणवत्ता छिपी नहीं रहती)

घी आडा हाथां पडै।
(मागने से नहीं मिलता)

घी घणों हुवै तो खम्बा रै थेथड़नै वास्ते कोनी हुवै।
(अतिरिक्त धन उडाने के लिए नहीं होता)

घी घालै बिसौ स्वाद आवै।
(अच्छा करने के लिए कुछ खर्च भी करना पडता है)

घी दुळ्यो तो मूंगा मांही।
(लाभ अपनों का ही हुआ)

घीरत बीरत री छीयां।
(समय समय की बात)

घो

घोड़ै नै तालाब पर ले जाणो सारू है, पाणी पावणो सारू कोनी।
(किसी को बाध्य करके कोई काम नहीं करवा सकते हैं)

घोड़ै रै अगाड़ी अर गधै रै पिछाड़ी।
(घोड़ा आगे की टागो से व गधा पीछे की टागो से वार करता है, सावचेत रहना चाहिए)

घोड़ो कमेद कपड़ो सफेद।
(घोडा रगीन व कपडा सफेद अच्छा लगता है।)

घोड़ो घास स्यूं भायला करसी तो खासी कांई।
(व्यापार मे रिश्तेदारी नहीं चलती)

घोड़ो चईजै बन्दौली नै – क – फिरतो ले ज्याई।
(समय पर सहयोग न मिलने से कोई लाभ नहीं)

घोड़ो पड़ै तो एक मजो, घुड़सवार पड़ै तो डबल मजो।
(किसी की असफलता पर खुशी)

घोड़ो मर मर जावै, धणीं री हूण ही कोनी पूरीजै/ धणीं रै आंख हेठै ही कोनी आवै।
(काम करने वाले को तव्वजो नहीं देना)

च

चकवो चाकर चतुर नर, रेवै सदा उदास।
(चकवा, सेवक व चतुर आदमी प्रसन्न नहीं रह सकते)

चढ़जा बेटा शूळी पर, भली करै भगवान।
(उकसाना)

चट मंगनी पट ब्यावं।
(तुरन्त सगाई, ततकाल विवाह)

चत्तर रो काम नहीं करणो, अविश्वासियै रो टाबर नहीं रमावणो।
(चतुर आदमी को दूसरे का काम पसन्द नहीं आता)

चन्दा तूं गिगनापति, किसो भले रो देश।
सम्पत्त हो तो घर भलो, नहीं तो भलो परदेश।
(सम्पत्त/आपसी प्रेम से ही घर में आनन्द आता है)

चमड़ी जाय पण दमड़ी न जाय।
(कजूस व्यक्ति)

चमत्कार नै नमस्कार है।
(विशेषता की पूछ)

चलती गाड़ी मै बैठणै मै फायदो रेहूवै।
(हवा के रूख के साथ चलना लाभप्रद होता है)

चलती गाड़ी रो चक्को निकाळ्लै।
(बहुत चालाक होना)

चलती चक्की स्यूं आखो निकळ ज्यावै।
(अधिक चतुर)

चलती रो नाम गाडी, खड़ी बा खटारो।
(जो सक्षम होता है उसी की पूछ होती है)

चा

चाकू खरबूजै पर पड़ो'र चाहे खरबूजो चाकू पर, कटणो तो खरबूजो ही है।
(भुगतना तो कमजोर को ही पडता है)

चार क्यूंट स्यूं मथुरा न्यारी।
(अलग मिजाज/अलग–थलग)

चार चोर चौरासी बाणियां, कांई करै बापड़ा एकला बाणियां।
(बनिया डरपोक होता है)

चार जणां चौधरी, पांच जणां पंच।
जिके रै घर मै छः हुवै, बै पंच गिणै न धंच।
(सगठन मे शक्ति है)

चार दिनां री चान्दनी फेर अन्धेरी रात।
(सदा एक जैसा वैभव नहीं रहता)

चि

चिड़पिड़े सुहाग स्यूं रण्डापो ही चौखो।
(अनमने व अस्थिर मन से सामजस्य काम का नहीं)

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर।
दान दिया धन ना घटै, कह गये दास कबीर।।
(दान देने से धन नहीं घटता)

चित भी म्हारी पुट भी म्हारी।
(दोनो तरफ जीत का दावा)

चिरमिराट सह लेणो, गिरगिराट नहीं राखणो।
(मन का सशय निकाल लेना ही चाहिए)

चिणा है बठै दान्त कोनी, दान्त है बठै चिणा कोनी।
(जहा है वहा उपयोग करने वाला नहीं, जहा आवश्यक है, वहा साधन नहीं)

ची

चीकणी चोटी रै सै लागू हुवै।
(जिसके पास होता है उससे सभी वसूलना चाहते हैं)

चीकणै घड़े पर पाणी कोनी ठहरै।
(निर्लज्ज के कोई असर नहीं होता)

चू

चूं चूं मै ही घोड़ा पावणां पड़सी।
(चलती मे ही काम करना पडता है)

चे

चेला ल्यावे मांग कर, बैठ्या खावै महन्त।
राम भजन रो नाम है, पेट भरण रो पन्थ।।
(नाम का धर्म)

चै

चैत गुड़ बैसाखै तेल, जेठै पंथ आषाढ़ै बेल,
सावण साग भादवो दही, क्वार करेला काती मही।
अगहन जीरा, पूसे धाणां, माहे मिसरी, फागण चणा।।
(चैत्र मास में गुड, वैसाख में तेल, ज्येष्ठ मे पैदल यात्रा, आषाड में बेल–फल, श्रावण मे हरी सब्जी, भाद्र मे दही, आसोज मे करेला, कार्तिक मे छाछ, मिगसर मे जीरा, पौष मे धनिया, माघ मे मिश्री तथा फाल्गुन मे चना का सेवन नहीं करना चाहिए)

चो

चोंच दी है बिनै चुग्गो भी देवै।
(भगवान सबका ख्याल रखते हैं)

चोर आडै ताळा कोनी हुवै – साहूकार आडै हुवै।
(मर्यादाए सज्जनो के लिए ही होती है)

चोर – चोर मौसेरा भाई।
(मिली भगत)

चोर चोरी करै पण घरै आर'र साची बोलै।
(अपनों मे पाप की जानकारी होती ही है)

चोर चोरी स्यूं जावै पण हेराफेरी स्यूं कोनी जावै।
(आदते नहीं बदलती)

चोर नै कांई मारो चोर री मां नै मार देवणी ठीक रेवै।
(मूल कारण का निवारण करना)

चोर नै केवै घुस, कुत्ते नै केवै भुस्स।
(दोनो तरफ से भडकाना)

चोर नै केवै लाग, धणीं नै केवै जाग।
(दोनों तरफ से भड़काना)

चोर रात स्यूं राजी।
(चोरो को रात प्रिय होती है)

चोर रा पग काचा हुवै।
(जाग का अन्देशा होते ही चोर जल्दी भागता है।)

चोर री दाढ़ी मै तिनको।
(चोर का मन आशकित रहता है)

चोर री मां घड़ै मै मुण्डो घाल'र रोवै।
(गलत काम करने पर मुह दिखाने लायक नहीं रहते)

चोर रै मन मै चानणों बसै।
(अपराध करने वाले को पकडे जाने का अन्देशा रहता है)

चोरी और सीना जोरी।
(अपराध भी करे—आख भी दिखावै)

चोरी कर परधन हरै, मन मै सुख मानै।
बेड़ी कोड़ा पड़े ताजणा, दुःख नहीं पिछाणै।।
(चोरी का परिणाम बुरा ही होता है)

चोरी रो माल मोरी मै जावै।
(धन जैसे आता है वैसे ही जाता है)

चौ

चौतीणों ताई जको राजाजी रा घोड़ा पाई।
(सरकारी लाभ उठाने वालों को अधिकारियों को खुश रखना पडता है)

चौपड़ी अर दो।
(दुगुना मुनाफा)

छ

छठी रा लेख टळै कोनी।
(होनी होकर रहती है)

छठी रो दूध याद आवणो।
(सबक आ जाना)

छतीस का आंकड़ो।
(मेल न होना)

छा

छाछ, छांवली, छोकरा अर छन्दगाळी नार।
च्यांरू छछ्छ जद मिलै, जद तूठै करतार।।
(अच्छे दुधारू पशु, अपना घर, लडका व नखराली सुन्दर औरत ये सभी सौभाग्य से ही मिलते हैं)

छाछ नै किती ही बिलोवो घी थोड़ी आवै।
(बिना मतलब प्रयास करने से कोई फायदा नहीं)

छाछ पतली ही अर ऊपर घाल दियो पाणी।
(बिगडे काम को और बिगाड देना)

छाटी नाखी अर कर चूक्यो।
(अधिकतम नुकसान स्वीकार कर लेने पर मन की पीडा कम हो जाती है)

छाती पर मूंग दलना।
(परेशान करना)

छी

छींकत खाये, छींकत पीये, छींकत रहिये सोय।
छींकत पर घर न जाइये, आदर कदै न होय।।
(खाने पीने व सोने के समय छींक शुभ होती है, यात्रा के समय छींक आना अशुभ होता है)

छींया ही जावणो, छींया ही आवणो।
(व्यापार के लिए प्रात: जल्दी जाना व शाम को देर से आना चाहिए)

छो

छोड़ो ईस – बैठो बीस
(खाट के बीच मे कितने ही बैठो (किनारे ईस पर नहीं)

छोटा छोटा टाबरिया लेवै धर्म री ओट।
बूढ़ा ठेरा डोकरिया, रहग्या ठेठमूठेठ।।
(छोटे बच्चे भी धर्म साधना कर सकते हैं)

छोटो जितो ही खोटो।
(जितना छोटा, उतना खोटा)

छोटै कवै घणों खाइजै।
(छोटे कौर से ज्यादा खा सकते है, कम मुनाफे से लगातार ज्यादा लाभ हो सकता है)

छोटै मुण्डे बड़ी बात।
(औकात से ज्यादा बात करना)

ज

जकै गांव ही नहीं जावणो बीरो गेलो पूछ्यां कांई सा'र।
(जो बात काम की नहीं उसकी तह में जाने में क्या लाभ)

जकैरी लाठी, बी'री भैंस।
(ताकत है उसी का माल है)

जकै रे एक कोनी हुवै बिरै अनेक हुवै, जिकैरो कोई कोनी हुवै बिरो भगवान हुवै।
(भगवान सबका रखवाला होता है)

जंगळ जाट न छेड़िये, हाटां बीच किराड़।
रांगड़ कदै न छेड़िये, पटकै टांग पछाड़।।
(एकान्त में जाट से, बाजार में व्यापारी से व राजपूत से कभी भी झगडा मोल नहीं लेना चाहिए)

जंगल में मोर नाचा किसने देखा।
(कोई अच्छा काम अगर किसी को पता न चले तो क्या लाभ)

जंगळ मै मंगळ।
(वीरान मे भी बहार)

जननी जणै तो रतन जण, का दाता का सूर।
नहीं तो रहजै बांझड़ी, मती गमाजै नूर।।
(सतान दाता या शूरवीर हो तभी माता का गौरव हैं)

जब तक रहेगी जिन्दगी, फुरसत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम कर लो राम से।।
(जिन्दगी के कामो की व्यस्तता मे ही राम नाम ले लेना श्रेयस्कर हैं)

जबरो मारै – रोवण भी कोनी दै।
(ताकतवर की मार खाकर भी चू नहीं कर सकते)

जब लग तेरे पुण्य को, बीत्यो नहीं करार।
तब लग तेरे माफ है, ओगण करो हजार।।
(पुण्याई है तब तक सब ठीक है)

ज्यां रा पड़्या स्वभाव, जासी जीव स्यूं।
नीम न मीठ होय, सींचो गुड़ घीव स्यूं।।
(आदते नहीं बदलती)

ज्यां रा मरग्या बादशाह - रूळता फिरै वजीर।
(सरक्षक के अभाव मे व्यक्ति की पूछ खत्म हो जाती है)

ज्यूं ज्यूं भीजै कामरी, त्यूं त्यूं भारी होय।
(समस्या समय के साथ ज्यादा उलझती जाती है व समाधान उतना ही मुष्किल होता जाता है)

जर, जोरू अर जमीन जोर की, जोर हट्यां किसी और की।
(धन, जमीन व औरत बल से ही अपनी रहती है)

जळै पर नमक छिड़कणो।
(पीडित को और तडपाना)

जवानी एक बार ही आवै।
(मौका बार बार नहीं मिलता)

जहां चाह - वहां राह।
(जहा इच्छा होती है वहा रास्ता भी होता है)

जहां न पहुंचे रवि - वहां पहुंचे कवि।
(कवि की कल्पना असीम होती है)

जा

जाके पांव न फाटी बिवाई - ते के जाणे पीर पराई।
(जिसने दु:ख नहीं सहा वह दूसरे के दु:ख के बारे मे नहीं जानता)

जाको राखे सांईया, मार सके ना कोय।
बाल न बांका करि सके, जो जग बैरी होय।।
(जिसका भगवान सहायक हो उसका कोई कुछ भी बिगाड नहीं सकता)

जाट जंवाई भाणजा, रैबारी सुनार।
कदे न होवै आपरा, कर देखो उपकार।
(कृतज्ञता न रखने वाले)

जाट रे जाट – थारै माथै पर खाट।
तेली रे तेली – थारै माथै पर घाणी।
भायला जुड़ी कोनी, जुड़ो मत जुड़ो भारां तो मरसी।
(तुकबन्दी नहीं तो क्या वजन तो है)

जाणते बूझते/सुणते खाडे मे कोनी पड़ीजे।
(जानकारी मे नुकसान नहीं खाया जा सकता)

जाण है बठै माण है।
(व्यक्ति की जहा पहचान है वहीं सम्मान मिलता है)

जाण है बठै माण है, सुण रे भाई ईडा।
राजा भोज नैं टूटी मंचली, तेलण जी नैं पीढ़ा।।
(व्यक्ति की जहा पहचान है वहीं सम्मान मिलता है)

जान बची तो लाखों पाये।
(जान बच जाये तो गनीमत है)

जान है तो जहान है।
(प्राण बचे रहते हैं तभी ससार है)

जांवतै चोर रा झींटा ही चोखा।
(धन जाने वाला हो तो जितना बच सके बचा लेने मे ही फायदा है)

जावै तो बरजूं नहीं, रेवै तो आ ठोड़।
हंसा नै सरवर घणां, सरवर हंसा करोड़।।
(आवो तो वेलकम, नहीं तो भीड कम)

जावो लाख – रहवै साख।
(धन जाये तो जाये प्रतिष्ठा नहीं जानी चाहिए)

जि

जिकी थाळी मै खावै – बिमै ही छेद करै।
(अकृतज्ञता)

जिकैरी खावै बाजरी – बिरी भरै हाज़री।
(जिसकी नौकरी करते हैं उसका हुकम बजाना ही पडता है)

जिकेरो राज है – बेरो ई आज है।
(सत्ता मे होने वाले की तूती बोलती है)

जिता मुण्डा बिती बात।
(हर व्यक्ति अपने तरीके से बात को प्रस्तुत करता है)

जिन्दगी ऐसी बना, जिन्दा रहे दिल साज तूं।
जब तुम न रहो दुनिया में, दुनिया को आये याद तूं।।
(ऐसी करणी करो कि चिर स्मरणीय रहो)

जिमणवार हुसी, बठै एंठ भी खिण्डसी।
(जहा होगा वहा कुछ बिखरेगा)

जिसकी लाठी उसकी भैंस
(ताकतवर का हक)

जिसा देव, बिसा पुजारी
(एक जैसे)

जिसो खावै अन्न बिसो हुवै मन।
जिसो पीवै पाणी बिसी बोलै बाणी।।
(जैसा अन्न खाते हैं वैसा मन व जैसा पानी पीते हैं वैसी भाषा होती है)

जिसो देश – बिसो वेश
(देश के अनुसार पहनावा)

जी

जीती रे जीती जग स्यूं, हारी रे हारी पेट स्यूं।
(सतान के आगे हारना पडता है)

जीभ रै हाड कोनी हुवै।
(जबान पर नियन्त्रण रखना चाहिए)

जीमणो मां रै हाथ रो, हुवे चाहे जैर ही।
रैवणो भायां मै, हुवे चाहे बैर ही। बैठणो छींया मै, हुवे चाहे कैर ही।।
(मा के हाथ का खाना, भाईयो के बीच रहना व छाया मे बैठना बेहतर है)

जु

जुग जीत्यो रे बेटा काणियां, ई नै उठाओ जणैं जाणिया।
(दोनो तरफ से धोखा देने का प्रयास)

जुदा घरां रा जुदा बारणा।
(अलग अलग होने पर भाई भाई का भी अलग हिसाब हो जाता है)

जुंआ रै डर स्यूं घाघरो को नाखीजै नी।
(छोटे मोटे नुकसान से हिम्मत नहीं हारते)

जू

जूती फाटी, चाल गमाई।
कपड़ा फाड़ गरीबी आई।।
(जूते और कपड़े फटे हुए नही पहनने चाहिए)

जे

जेठ री बाजरी अर मोभी बेटा – कठै पड़्या है ?
(जेठ की बाजरी व प्रथम पुत्र का विशेष महत्व है)

टे

टेम टेम री बात है।
(समय की बात है)

ठ

ठगायां ठाकर बजै ।
(किसी को देते रहने से वह जी हजूरी करता है)

ठण्डो न्हावै, तातो खावै, वां रै वैद कदै नहीं आवै।
(ठण्डे पानी से नहाना व गर्म खाना खाने वाले को डॉक्टर की आवश्यकता नहीं पडती)

ठण्ठारा री बिल्ली, खडकां/ठरका स्यूं कोनी डरै।
(अनुभव वाला व्यक्ति विपत्तियो से नहीं डरता)

ठंडो पाणी लावै ठंड, थोड़ो धन लावै घमंड।
नकली सोनो चमकै जोर, नया मुल्ला मचावै शौर।।
(अध जल गगरी छलकत जाय)

ठा

ठाकर गया'र ठग रह्या, रह्या मुलक रा चोर।
बै ठुकराण्यां मर गई, जे ठाकर जणती और।।
(अब वैसे स्वाभिमानी ठाकुर पैदा ही नहीं होते)

ठाकर चालै जैरा कैरां, ढ़ेढ़ा आधी रात।
डूम तो दोफारां चालै, जाट जी परभात।।
(राजपूत जब चाहे, ढेढ आधी रात को, डूम दोपहर व जाट सुबह सुबह अपनी यात्रा प्रारम्भ करते हैं)

ठी

ठीकरी घड़ो फोड़ दे।
(छोटा व्यक्ति बडा नुकसान कर सकता है)

ठो

ठोकर खायां अकल आवै।
(नुकसान होने पर समझ आती है)

ड

डफोळ शंख।
(केवल बाते बनाने वाला)

डरतै नै दो दीसै।
(कमजोर आदमी ज्यादा डरता है)

डरतो गोगो धोकै।
(भय से बात मानना)

डा

डाकण बेटा देवै-का लेवै?
(जो केवल लेना जानता है देना नहीं)

डागळै चढ़'र देखो - घर घर ओई लेखो।
(सब घरो मे एक ही हाल होना)

डांग पर डेरा।
(आज कहीं, कल कहीं)

डू

डूंगर दूर रा ही फूटरा दीखै।
(दूर से ही अच्छे लगते है)

डूब्ये पर तीन बांस।
(बचाव का कोई मार्ग नहीं)

डूबते नै तिनके रो सा'रो।
(कमजोर आदमी को थोडा सहारा भी काफी होता है)

डूबेगा रे तीन जणां –
आय कम– खर्च घणां, जोर कम–गुस्सा घणा, पूंजी कम–व्यापार घणां।

डूम रो पावणों गांव उपर भारी हुवै।
(कमजोर आदमी पर आया भार सक्षम को ही सम्भालना पडता है)

डूमां आडी डीकरी, शायर आडी भैंस।
विद्या आडी बिनणी, उद्यम आडी एश।
(डूम के लिए लडकी के ब्याह की चिन्ता रहती है, भैंस की सम्भाल में शायर अपनी रचना नहीं कर सकता, पढाई करने वाले के लिए शादी बाधक होती है व ऐश करने वाला उद्यम नहीं कर सकता)

डे

डेडरियो करै डरूं – डरूं, खाली कोठा भरूं – भरूं।
(मेढक के बोलने से वर्षा की सभावना हो जाती है)

डेढ़ बैटरी
(आखो से भैंगा)

डो

डोकरी – डोकरी मसाण कैरा –क– आया गयां रा।
(अपने अहित/मौत से आखे मून्दे रहना)

डोकरी रै केवणै स्यूं खीर कुण रांधै।
(कमजोर आदमी के कहने से कौन काम करता है)

ढ़

ढ़बां खेती, ढ़बां न्याय – ढ़बां हुवै बुढ़ियै रो ब्यांव।
(कोई भी काम युक्ति से ही होता है)

ढे

ढेढ़ रै हाथ लगावो, चाहे बाथै पड़ो एक ही बात है।
(मन मे थोडा पाप आना भी गलत है)

ढ़ेढ़ रो गाड़ो आगै चालै।
(बिना सोचे समझे काम करने वाला तेज चलता है)

ढो

ढोल दूर स्यूं ही सुहावणा लागै।
(दूर रहने वाले प्रिय लगते हैं)

ढ़ोल मै पोल है।
(मात्र दिखावा)

त

तनसुखदास तेतीसा देग्यो, ऊंधा करग्यो ताकड़िया।
भाई भतीजा ने ऐसा करग्यो, बैठा बेचो काकड़िया।।
(अप्रतिष्ठा पीढियो तक बदनाम कर देती है)

तलवार रो घाव मिट ज्यावै – जबान रो कोनी मिटै।
(जबान का घाव नहीं मिटता)

ता

तातो खायो नै रातो पहर्‌यो।
(कोई सुख नहीं पाया)

तारा की ज्योति में चन्द्र छिपै नहीं, सूर्य छिपै नहीं बादळ छाया।
रण चढ़्या रजपूत छिपै नहीं, दात छिपै नहीं मांगण आया।
चंचल नारी के नैण छिपै नहीं, प्रीत छिपै नहीं पीठ दिखायां।
'गंग' कहे सुन शाह अकबर। कर्म छिपै नहीं भभूत लगायां।।

तावड़ो दिन मै ही तीन बार फुरै।
(जीवन मे उतार चढाव आते ही हैं)

ति

तिरी तिरी तिरी - मतोरो मतोरो मतोरो,
-क- दो घर डूबता एक घर डूब्यो।
(दोनो एक जैसे)

तिलोड़ी रख'र घीलोड़ी उगावै।
(अति चालाक)

ती

तीजी पीढ़ी अऊत जावै।
(पीढी दर पीढी बुद्धिमान होना टेढा काम है)

तु

तुम जियो हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार।
(सुदीर्घ जीवन की कामना)

तुलसी इस संसार में, भान्ति भान्ति के लोग।
सबसे हिलमिल चालिए, नदी नाव संयोग।।
(ससार मे सब अलग अलग मत के लोग हैं, सबसे प्रेम पूर्वक रहना ही अच्छा है)

तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान।
गोप्यां लूंटी भीलड़ा, बै अर्जुन बै बाण।
(व्यक्ति नहीं समय बलवान होता है)

तुरन्त दान - महा कल्याण।
(हाथोहाथ देना/प्रत्यक्ष फल मिलना)

तू

तूं जासी, थारो काम सारूर, बा उठसी आपरो दुःख बिसारूर।
(समय के बाद जाना)

तूं डाळ डाळ – मैं पात पात।
(मुझसे छिपा नहीं सकते)

ते

तेल तिलां स्यूं ही निकळसी।
(लागत सारी माल पर ही पडती है)

तेल देखो – तेल री धार देखो।
(इन्तजार करो)

तेली जी रो तेल बळै, मशालची रो जी क्यां जळै?
(किसी अन्य के लाभ हानि से पीडा क्यो हो?)

तेली स्यूं खळ उतरी हुई बळीतै जोग।
(मन से उतर जाने पर उसका कोई मोल नहीं है)

तै

तैराक री ही राण्ड होवै।
(जो करेगा उससे गलती भी होगी)

थ

थकां थळ ईज्जत गमाणी।
(होते हुए भी ईज्जत गवानी)

था

थारी जूती थारो ही सिर।
(उसी की कीमत पर उसी को नुकसान)

थावर कीजै थरपना, बुध कीजै व्यापार।
(शनिवार को स्थिर कार्य व बुद्धवार को व्यापार प्रारम्भ करना चाहिए)

थू

थूकोड़े न चाटणो।
(बात कहकर बदलना)

थो

थोथो चणो बाजै घणों।
(अज्ञानी व्यक्ति ज्यादा बोलता है)

थोथो/लूखो लाड – घणी खमां।
(दिखावे का दुलार)

द

दगा किसी का सगा नहीं।
(धोखा कोई दे अच्छा नहीं है)

दड़ूंको कियां? – सूरज रा साण्ड हां।
छेरा कियां करो? – गऊ रा जाया हां।
(जैसा अवसर वैसा निर्णय)

दब्यो बाणियो दूणों तोलै।
(रकम पहले से अटकी है तो बनिये को और उधार देना पडता है)

दलाल रै दीवाळो नहीं, मस्जिद रै ताळो नहीं।
(दलाल के लाग नहीं होती)

दा

दाई स्यूं कांई पेट छानो।
(होषियार आदमी से क्या छिपा होता है)

दार्णे दार्णे म्होर छाप।
(दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम)

दाता स्यूं सूम भलो, जो झटपट उत्तर देय।
(लटका कर रखने की अपेक्षा तुरन्त मना कर देना अच्छा है)

दान री बछड़ी रा दान्त कोनी गिणीजै।
(दान की वस्तु के लिए नुक्ताचीनी नहीं की जा सकती)

दाळ चावळ भेळा - कोकला किनारे।
(मिलनसार नहीं होते वे अलग थलग रहते हैं)

दाळ भात मै मूसळचन्द।
(किन्हीं दो के मध्य अनचाहा तीसरा व्यक्ति)

दाळ मै काळो।
(कुछ न कुछ राज होना)

दावो कर दियो - क - तकादै स्यूं गया।
(दावा करने के बाद तकादा करने योग्य नहीं रहते)

दि

दिन दुणो रात चौगुणो।
(अनाप शनाप समृद्धि बढना)

दिन पलट्या, दशा पलटी, पलट्या हाथ कमाण।
गोप्यां लूंटी भीलड़ा, बै अर्जुन बै बाण।।
(समय बदलने पर बल काम नहीं आता)

दिनुगै रो भूल्यो सिंझ्या घरै आज्या तो भुल्योड़ो कोनी बाजै।
(सुबह का भूला शाम को घर आ जावे तो भूला नहीं कहलाता)

दियां लियां डूम राजी हुवै।
(लेनदेन से डूम ही खुष होते हैं)

दिल्ली हाल तांई दूर है।
(सफलता तक पहुचना बाकी)

दिवाळी रा दीया दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा।
(दिवाली पर फसलें पक जाती है)

दी

दीयै तळै अंधारो।
(दीप तले अन्धेरा)

दीवार मै आळो अर घर मे साळो।
(घर मे साले का हस्तक्षेप घर का सौहार्द खतम कर देता हैं)

दीवार रै भी कान हुवै।
(जुबान से निकली बात शीघ्र फैल जाती है)

दु

दुबळै ने दोखी घणां - का चींचड़ का पांव।
(कमजोर आदमी के लिए बहुत मुश्किले हैं)

दुबळै री जोरू नै सगला ही भाभी कह देवै।
(कमजोर आदमी पर सभी हावी हो जाते हैं)

दुविधा में दोन्यूं गया माया मिली न राम।
(असमजस मे दोनो तरफ नुकसान होता है)

दू

दूझती गाय री लात भी सहन करनी पड़ै।
(लाभ देने वाले की अनुचित बात भी सहन करनी पड़ती है)

दूध अर दुहारी दोन्यूं राखणी।
(लाभ के साथ आपसी सौहार्द भी रखना चाहिए)

दूध अर पूत लुकायोड़ा कोनी लुकाइजे।
(दूध और पुत्र के लक्षण छुपे नहीं रहते)

दूध भी चइजै तो कांई जावणी भी चइजै।
(लाभ के साथ अतिरिक्त लाभ भी चाहिए)

दूध रो दूध पाणी रो पाणी।
(सही न्याय)

दूध स्यूं बळ्योड़ो छाछ नै फूंक'र पीवै।
(नुकसान खाया हुआ ज्यादा सावचेत रहता है)

दूधां न्हावो - पूतां फळो।
(हर प्रकार की समृद्धि का आशीर्वाद)

दूर जंवाई पावणा, गांव जंवाई आधो।
घर जंवाई गधै बराबर, चाह्वै जितो लादो।
(दामाद को ससुराल मे नित्य नहीं आना चाहिए)

दे

देख पराई चौपड़ी, क्यां ललचावै जी।
रूखी सूखी खायके ठण्डो पाणी पी।।
(किसी को देख कर तुलना या ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए)

देख बन्दे की फेरी-अम्मा तेरी या मेरी।
(सेर को सवा सेर)

देखणो सो भूलणो नहीं।
(देखा हुआ याद रहता है)

देख्यो बाप रे घरै – करै आपरे घरै।
(पिता के यहा देखा वह बेटी अपने ससुराल मे करती है)

देखा देखी साझै जोग – छीजै काया बधै रोग।
(दूसरे को देखकर नकल करने से नुकसान ही होता है)

देवै जणै देवै छप्पर फाड़ – लेवै जणै लेवै चमड़ी उधाड़।
(लाभ मे लाभ व नुकसान मे नुकसान अधिक होता है)

देवै जकै ने बेटा ही बेटा नहीं तो काणी छोरी भी कोनी देवै।
(जिसको लाभ पहुचाना चाहे उसे अतिरिक्त लाभ भी दे नहीं तो कुछ भी नहीं)

दै

दै पाण्डिया आशीष –क– आशीष तो आन्तरी देवै।
(आशीष अर्न्तमन से मिलती है)

दो

दो दिना रा पावणां – तीजै दिन अणखावणा।
(अतिथि दो दिन ही अच्छा लगता है)

दोन्यूं हाथां लाडू राखणा।
(दोनो तरफ से लाभ उठाने की चेष्टा)

दो मामां रो भाणजो भूखो ही रह जावै।
(दो के भरोसे रहने वाला नुकसान में रहता है)

दो लड़ै बठै एक पड़ै।
(प्रतियोगिता मे एक ही जीतता है)

दो री लड़ाई मै तीजो फायदो उठावै।
(दो की लडाई मे तीसरा लाभ उठाता है)

ध

धणीं रो धणीं कुण।
(मालिक का मालिक कौन)

धन जावै जकेरो ईमान भी जावै।
(नुकसान होने पर प्रतिष्ठा भी जाती है)

धन जोबन अर ठाकरी, अर चोथै अविवेक।
अै च्यारूं भेळा हुवै, अनरथ करै अनेक।।
(धन, यौवन, ठकुराई और अविवेक यदि ये चारो साथ हो तो अनेक अनर्थ करते हैं)

धन तो धण्यां रो है – गवाळिये रै हाथ तो गेडियो है।
(दूसरो की अमानत)

धरम री जड़ सदा हरी।
(धर्म की जड सदा हरी रहती है)

धा

धाई थारी छाछ – कुत्ता स्यूं छोड़ाय।
(पिण्ड छुडवाना)

धाई भली न फती – दोन्यूं ही राण्ड कुत्ती।
(दोनों एक जैसे)

धान खावां हां, धूड़ कोनी खावां।
(हमें बेवकूफ बनाने की चेष्टा मत करो)

धी

धीरज धर्म मित्र अरू नारी, आपत काल परखेहुं एहि चारि।
(धैर्य, धर्म, मित्र और औरत की परीक्षा विपत्ति काल मे ही होती है)

धीरज रो फळ मीठो।
(धैर्य का फल मीठा होता है)

धीरे धीरे रे मनां, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आयां फळ होय।।
(धैर्य से सब कुछ होता है)

धीरे-धीरे ठाकरां, धीरे सब कुछ होय।
(धैर्य से सब कुछ होता है)

धू

धूड़ धाणी - राख छाणी।
(कुछ भी फायदा नहीं)

धूड़ बिना धड़ो नहीं, कूड़ बिना व्योपार नहीं।
(तराजू का धडा धूल से सही होता था, व्यापार मे एकदम सच्चाई नहीं चलती)

धो

धोबी रै घरै बड़्या चोर - रोवै और रा और।
(अपना कुछ नहीं होने वाले के नुकसान होने पर दूसरो को ही भुगतना पडता है)

धोबी रो गधो, न घर रो - न घाट रो।
(किसी भी तरफ का न रहना)

धोबी रो गधो, स्यामी री गाय।
राजा रो नोकर तीनूं गत्तां सूं जाय।।
(धोबी का गधा, साधू की गाय, राजा का नौकर तीनो किसी काम के नहीं रहते)

धोळा मै धूड़ मत नखाई।
(बुढापे में इज्जत खराब न करवाना)

धोळा तावड़ै मै कोनी कर्‌या।
(उम्र के साथ अनुभव प्राप्त किया है)

न

नई काया, नई माया।
(नये सिरे से)

नई बात नव दिन, खांची ताणी तेरह दिन।
(समय सब भुला देता है)

नकटै रो कांई नाक कटै।
(जिसकी प्रतिष्ठा है नही उसकी प्रतिष्ठा क्या नष्ट होगी)

नगद नाणा, बीन्द परणीजे काणा।
(नगद व्यापार ही अच्छा रहता है)

नज़र चूकी - माल पराया।
(थोडी नजर हटते ही माल पार हो जाना)

नथ गमगी - क - नणन्द नै ई देई सही।
(मन को राजी करना)

नथिया डूबा सो डूबा - नेमले को ले डूबा।
(अपने नुकसान के साथ दूसरे का भी नुकसान करवा दे)

नदी किनारै रूंखड़ो जद कद होय विनास।
(नदी तट का वृक्ष कभी भी धराशायी हो सकता है।)

नन्द रा फन्द गोविन्द ही जाणै।
(भगवान की लीला समझ मे नहीं आती)

न नव मण तेल हुवै - न राधा नाचै।
(ऐसी शर्त, जो पूरी नहीं होनी)

न्यारै घरां रा न्यारा बारणा।
(अलग घरो के अलग दरवाजे)

नया घोड़ा नया मैदान।
(नया काम)

नर चींती कोनी हुवै – हर चींती ही हुवै।
(भगवान की मर्जी ही चलती है, इसान की नहीं)

नर नानाणें – धी दादाणें।
(लडके मे ननिहाल के गुण आते हैं, लड़की मे दादा–दादी के)

नर मै नाई आगलो, पंखेरूवां मै काग।
पाणी आळो काछबो, तीनूं दग्गाबाज।
(मनुष्यो मे नाई, पक्षियो मे कौवा, जलचरो मे कछुवा, ये तीनो धोखेबाज होते हैं)

न रहे बांस न बजे बांसुरी।
(मूल का समाधान)

नहायो जितो ही पुण्य।
(जितना भला किया उतना ही अच्छा)

नहीं देख्यो जयपुरियो तो कुळ मै आकर के करियो।
(जयपुर दर्शनीय है)

नहीं मामे ना स्यूं काणो मामो भलो।
(कुछ नही से थोडा होना भी अच्छा है)

ना

नाई–नाई केस किताक ? –क– सामै आ ज्याई।
(थोडी देर मे वस्तुस्थिति का स्पष्ट होना)

नागा लुच्चा – सबसे ऊँचा।
(बदमाश आदमी से झगडा करने मे लाभ नही)

नागी रो कांई धोवै'र, कांई निचोवै।
(जिसके पास कुछ नहीं हो)

नागो केवै माहृस्यूं डर्‌यो, लाजां मरता घर मै बड्‌यौ।
(बदमाश अपना रौब दिखा कर खुश होता है)

नाच न जाणै–आंगण टेढ़ा।
(ज्ञान नहीं, बहाने करते हैं)

नातो कर्‌यो -क-खोटो काम कर्‌यो,
पाछो छोड़ दियो -क- और ही खोटो।
(गलत काम को और गलत करना)

नानी दादी सै याद आयगी।
(पूरी परेशानी मे पड जाना)

नापै घणों - फाड़ै थोड़ो।
(अधिक बातें बनाना, करने को कुछ नहीं)

नाम किरोड़ीमल, खनै फूटी कोडी ही कोनी।
(नाम में क्या रखा है)

नाम मोटा - घर मै टोटा
(नाम खूब प्रसिद्ध हो और घर मे कगाली)

नाम बड़ा - दर्शन खोटा।
(केवल नाम के)

नारी नर री खान।
(नारी से ही श्रेष्ठ नर जन्मे हैं)

नाहरी रो तो अेक ई चोखो, सूरड़ी रा बारा भी कांई काम रा ?
(शेरनी के जन्मा एक ही बहुत, सूअरी के जन्मे बारह भी किस काम के?)

नि

निकमैं नास्यूं, बेगार भली।
(खाली बैठे रहने से अच्छा बिना लाभ के भी काम मे लगे रहना है)

निकळी होठां – चढ़ी कोठां।
(बात मुह से निकलते ही सब जगह फैल जाती है)

निचली भण्डेल खिसकाणी।
(बने बनाये काम को बिगाड़ना)

निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटि छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुहाय।।
(आलोचक की बात सुननी चाहिए)

निन्यानवे रो फेर।
(धन का लोभ)

नी

नीचे जोयां गुण घणां, पड़ी वस्तु मिल जाय।
ठोकर की लागे नहीं, जीव जन्तु टळ जाय ।।
(झुक कर चलना ही श्रेष्ठ है।)

नीचै पटवार – ऊपर करतार।
(ऊपर भगवान है नीचे पटवारी)

नीन्द बेच'र ओझको मोल कुण लेवै।
(फालतू परेशानी कौन लेवें)

नीम हकीम – खतरे जान।
(अधूरे ज्ञान वाले व्यक्ति से नुकसान ही होता है)

नीयत गैल बरकत है।
(जैसी नीयत होती है वैसा ही फल मिलता है)

नीयत जिसा ही फळ मिलै।
(नीयत गैल बरकत है)

नु

नुगरो सेती गुण करै – जणै ओगण गारो आप।
(अहसान फरामोश का हित करने से कोई लाभ नहीं)

ने

नेकी ओर पूछ'र।
(लाभ के लिए पूछना क्या ?)

नेकी कर दरिया में डाल।
(भलाई कर उसका प्रदर्शन नहीं करना चाहिए)

नेम निमाणै – धर्म ठिकाणै।
(नीयत गैल बरकत है)

नेमलै री टोपी खेमलै उपर।
(एक से लिया -- दूसरे को दिया)

नौ

नौकरी – नौ करी'र अेक नहीं करी।
(नौकरी में नौ काम करके एक नही कर पाये तो सब व्यर्थ हो जाता है)

प

प्यार और जंग में सब जायज है।
(युद्ध व प्रेम में नियम नहीं चलते)

पईसा दरख़त रै कोनी लागै।
(पैसा मेहनत से कमाया जाता है)

पईसै कनै पईसो आवै।
(पैसे वाले के पास ही और पैसा आता है)

पईसो आंवतो ई दीखै जांवतौ नीं दीखै।
(धन आता दिखाई देता है, जाता दिखाई नहीं देता)

पइसो जितो सोरो आवै - बितो ही सोरो जावै।
(सरलता से आने वाला धन सरलता से चला भी जाता है)

पईसो पईसै नै कमावै।
(धन से धन कमाया जा सकता है)

पग तीखो मुख चरपरो, निपट निलज्जो होय।
नाक काट गुद्दी धरै, करै दलाली सोय।।
(जो चलने–फिरने में तेज हो, वाचाल हो और शर्म–सकोच न करें, अपनी इज्जत–बेइज्जत की परवाह न करे, वह दलाली कर सकता है)

पग पणिहार्‌या गावण लागगी।
(अति थकावट आ जाना)

पग पिछांणै पगरखी, नैण पिछाणै नेह।
(पैर जूती को पहचान जाते हैं और नेह को नयन पहचानते हैं)

पगां स्यूं बांध्योड़ो हाथां स्यूं कोनी खुलै।
(उलझाये को सुलझाना मुश्किल)

पड़ग्या खल्ला, उड़गी खे, फूल फगर सी हुगी देह।
(मार खाकर भी खैर मनाना।)

पड़तो काळ'र हूंती राण्ड झोल मारै।
(विपत्ति के आरम्भ मे तकलीफ होती है समय के साथ सब सहन हो जाता है)

पड़'र सवार हुवै।
(ठोकर खाकर सीखता है)

पंचकोसी प्यादो रैवै, दस कोसी असवार।
कै तो नार कुभारजा, कै राण्डोलो भरतार।
(यदि घर पहुचने मे मार्ग मे रात हो जाये और पैदल व्यक्ति पाच कोस पर ठहर जाये व घुडसवार दस कोस पर ठहर जाये तो समझिये कि उसकी स्त्री कुभार्या है या पति नपुसक है)

पंचा रो हुकम सिर माथै - पण परनालो ईयां ही चालसी।
(अपनी बात पर अडे रहना)

पजामो सिड़ै - पेशाब रो रास्तो राख'र सीड़ै।
(तरीका रख कर ही योजना बनाते हैं)

पढ़ पढ़ पोथा - रहग्या थोथा।
(केवल किताबी ज्ञान)

पढ्योड़े ना स्यूं गुणोड्यो चोखो।
(पढने से भी ज्यादा गुणवान होना अच्छा रहता है)

पढ़लै बेटा फारसी - तळै पड़ै सो हारसी।
(जिसका पैसा दबा होता है वही हार मे रहता है)

पत्थर पूज्यां हर मिलै तो हूँ पूजूं पहाड़।
(पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजू पहाड)

पप्पियो पाद दियो'र सुशियो साख भर दी।
(हा मे हा मिला देना)

परकत रा पांच - सुपने री मोहर।
(झूठे ख्वाबो की अपेक्षा जो मिल रहा है वही ठीक हे।)

पर घर पग न मेलणो, बिना मान मनवार।
ईंजन आवै देखणै, सिगनल रै सत्कार।।
(विना मनुहार कहीं नहीं जाना चाहिए)

परणीजै बीन रो भाई – कूटीजै गोपाळो नाई।
(लाभ किसी का – परिश्रम किसी का)

परणीज्या नहीं तो कांई हुयो, जान तो गया ही हां।
(जानकारी तो है हीं)

परनारी पैनी छुरी, तीन ओर सूं खाय।
धन छीजै, जोबन हरै, पत पंचां मै जाय।।
(पराई स्त्री से प्रेम करना पैनी छुरी के समान है। यह धन और यौवन का नाश करती है और पचों मे इज्जत चली जाती है।)

परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।
(परोपकार से बडा कोई धर्म नहीं है व दूसरे को पीडा पहुचाने से बडा कोई पाप नहीं है)

पराई थाळी मै घी घणो दीखै।
(दूसरो के पास अधिक समझना)

पराधीन – सुपनै सुख नाहीं।
(पराधीनता मे सुख नहीं है)

पहले पेट पूजा फिर कोई काम दूजा।
(पहले पेट–भराई की व्यवस्था, फिर अन्य काम)

पहली बार धोखो खावै जणै धोखो देवण वाळे री गलती।
दूजी बार धोखो खावै जणै खावण वाळै री गलती।
(एक ही व्यक्ति से व एक ही तरह का दुबारा धोखा खाना मूर्खता है।)

पहली रैहती यूं, तो तबलो जातो क्यूं।
(पहले इस प्रकार मितव्यतता से रहते तो नुकसान और बर्बादी क्यो होती?)

पहलै पहर हर कोई जागै, दूजे पहर में भोगी।
तीजै पहर तस्कर, चोर जागे, चौथे पहर में योगी।
(रात्रि के प्रथम प्रहर मे सभी जागते हैं दूसरे प्रहर मे भोगी जागते है, तीसरे प्रहर मे चोर जागते है व चौथे प्रहर मे योगी जाग कर योगी करते है)

पहलो सुख निरोगी काया, दूजो सुख घर मै माया।
तीजो सुख पुत्र आज्ञाकारी, चौथो सुख पतिव्रता नारी।
पांचवों सुख राज मै पासो, छ्ठो सुख सुस्थान बासो।
सातवों सुख विद्या फळदाता, अै सातूं सुख रच्या विधाता।
(इसको इस प्रकार भी कहते है)
पैलो सुख निरोगी काया, दूजो सुख घर मै माया।
तीजो सुख पुत्र आज्ञाकारी, चौथो सुख पतिव्रता नारी।
पांचवों सुख पाड़ौसी आछो, छ्ठो सुख राज मै पासो।
सातवों सुख नीर निवासो।

पहलो दुःख हाथ में होको, दुजो दुःख पारको जोखो,
तीजो दुःख कुलखणी नारी, चौथो दुःख पुत्र जुआरी,
पांचवो दुःख पाड़ौसी चोर, छ्ठो दुःख घर मै बोर,
सातवां दुःख घाटै रो सीर, आठवों दुःख अळगो नीर।

पक्ष्यां मै कौआ, मिनखां मै नौआ।
(पक्षियो मे कौआ व मनुष्यों में नाई चालाक होता है)

पा

पाप रो बाप लोभ।
(लोभ से पाप पनपता है)

पाणी पी'र जात कांई पूछणी।
(काम के करने के बाद निर्णय पर विश्लेषण करने मे फायदा नहीं है)

पाणी मै मीन प्यासी।
(पानी मे भी मछली प्यासी)

पाणी पीजै छाण – सगपण कीजै जाण।
(परिचित सम्बन्ध करना ही अच्छा रहता है)

पाणी आडी पाळ बांधै।
(पहले से ही सावधानी करना/भूमिका बनाना)

पांच जणा केवै जकी बात मानणी।
(सलाह माननी चाहिए)

पांच पंच छठो पटवारी, खुलै केस चुरावै नारी।
फिरतो-चिरतो दांतण करै, आरां पाप स्यूं कीड़ा मरै।।
(पाच पच, छठा पटवारी, पराई स्त्री का अपहरण करने वाला तथा हर कहीं खाने वाला पापी होते हैं)

पांचा मीत, पचीसां ठाकर, सोवां सग्गो सोई।
इतरा खातर मती बिगाड़ो, होणी हो सो होई।
(थोड़े के लिए मित्र, ठाकुर व परिजनों से सम्बन्ध नहीं बिगाडना चाहिए।)

पांचू आंगळी अेकसी कोनी हुवै।
(पाचो अगुलिया समान नहीं होती हैं)

पांचू आंगळ्यां घी मै, अर सिर कढ़ाई मै।
(मौज मिलना)

पांचू आगंळ्या घी में अर सिर कढ़ाई में।
(मौज मिलना)

पाणी निवाण कानी आयां सरै।
(पानी ढलान की ओर आयेगा ही)

पांत मै दुभान्त क्यूं ?
(एक पगत मे बैठा कर भोजन खिलाने मे भेदभाव नहीं करना चाहिए)

पादोड़े री बास छानी कोनी रहवै।
(अपराध छिपा नहीं रहता)

पान सड़ै, घोड़ा अड़ै, विद्या बिसर जाय।
रोटी जलै अंगार पर, चेला किण बिध न्याय।।
-क- गुरूजी फोरी कोनी।
(समय से पलटना/दोहराना चाहिए)

पाप रो घड़ो भरिज्या पछै फूटै ही है।
(पाप का परिणाम मिलता ही है।)

पाव री हाण्डी मै सेर ऊ'र दियो - मावै कामैं।
(औकात से ज्यादा मिल जाना)

पावली पांच आना मै चालै।
(किस्मत साथ दे रही है)

पी

पीवरियै रा धोरा - चढ़ती नै लागै सोरा।
(पीहर जाना अच्छा लगता है)

पीसणै री पिसाई है।
(जितना काम किया है उसी अनुरूप पैसा है)

पीस्योड़ी दवाई अर मूण्ड्योड़े मोड रो ग'ई कोनी पड़ै।
(पाउडर बनाई हुई दवाई और मुण्डे हुए सिर से सन्त का पता नहीं चलता)

पीससी जको पिसाई लेसी।
(जो काम करेगा उसे ही पैसा मिलेगा)

पु

पुजारी री पागड़ी, ऊंटवाळ री जोय।
मान्दै री मोजड़ी पड़ी पुराणी होय।।
(पुजारी की पगड़ी, ऊट किराये ले जाने वाले की स्त्री एव बीमार के जूते पडे–पडे पुराने हो जाते हैं)

पुटियो जाणै आभो म्हारै ई ताण ऊभो है।
(पपीहा ऊपर आकाश की ओर पैर करके सोता है। वह सोचता है कि आकाश को मैने ही रोक रखा है)

पुन्ज पांगळो हुवै।
(प्रेरणा से ही दान पुण्य होता है।)

पुरसोड़ी थाळी रै ठोकर नहीं मारणी।
(परोसा हुआ खाना छोड कर नहीं जाना चाहिए)

पू

पूछो ना पूछो – हूँ लाडै री भुआ।
(विना पूछे हस्तक्षेप करना)

पूत रा पग पालणै मै ही पिछाणी जै।
(काम के प्रारम्भ में ही सफल असफल का अन्देशा हो जाता है)

पूत सपूत तो क्यां धन संचै – पूत कपूत तो क्यां धन संचै।
(आने वाली पीढी के लिए धन सचय का लाम नहीं है)

पे

पेट मै ऊंदरा कुदै/पेट मै कुकरिया लड़ै।
(जोर की भूख लगी होना)

पेण्डो भलो न कौस रो, बेटी भली न एक।
ले'णो/करजो भलो न बाप रो, साहब राखै टेक।।
(यात्रा थोडी हो, वेटी एक भी हो व देनदारी पिता की भी हो तो बोझ रहता है)

पै

पैलां ठठै जकैरी गौरी गाय ब्यावै।
(जल्दी उठने वाला लाभ में रहता है)

पैलां कैय देवै जको घणखाऊ कोनी बजै।
(पहले बता देना अच्छा रहता है)

पैलां जीभ आई ना – पैला दान्त।
(पहले कौनसा सम्बन्ध बना)

पैलां तोलणो – पछै बोलणो।
(सोच विचार कर बोलना चाहिए)

पैलां लिख, पछे दै – भूल पड़्या कागज स्यूं लै।
(पहले लिखकर फिर लेनदेन करने से भूल नहीं होती है)

पैसा फैंको – तमाशा देखो।
(कीमत चुकानी पडती है)

पो

पोटो पड़े – की ले'र उठै।
(प्रयास करने पर कुछ न कुछ लाभ मिलता ही है)

पोतड़ां मै बिगड़्योड़ा धोतड़ां मै कोनी सुधरै।
(बाल्यावस्था में जिनकी आदते बिगड जाती हैं वे बड़े होने पर भी नहीं सुधरते)

पोता बहू री राबड़ी, दोयता बहू री खीर।
मीठी लागै राबड़ी, खाटी लागै खीर।।
(पोते–बहू की बनाई 'राबडी' जैसी रुचिकर लगती है वैसी
नाती की बहू की बनाई खीर भी नहीं लगती)

फ

फटी मै टांग अड़ाना
(कमजोर को पीडा पहुचाना)

फलको जेट रो – टाबर पेट रो।
(वेटा जन्मा हुआ ही निहाल करता है, गोद का नहीं)

फा

फागण मै सी चौगणो जे बाजैगी वाय।
(अगर हवा चल पडे तो फाल्गुन मे सर्दी चौगुनी हो जाती है।)

फाड़न वाळै नै सीवण वाळो कोनी पूगै ।
(बिगाडने वाले को सुधारने वाला पार नहीं पा सकता)

फाट्योड़े दूध मै जावण कोनी लागै।
(मन फट जाने पर मिलना मुश्किल होता है)

फि

फिरै जको चरै – बांध्योड़ो मरै।
(जो समय के साथ चलता है वही लाभ मे रहता है)

फू

फू'ड़ चालै, नौ घर हालै।
(फूहड छिपी नहीं रहती)

फू'ड़ रै घर हुयी किवाड़ी, कुत्ता मिल चाल्या रेवाड़ी।
काणै कुत्तै री लीन्या सुण, करा तो ली पण ढ़कसी कुण।
(योजना तो बना ली पर उस अनुरूप काम कौन करेगा)

फूट पड्यां रावण मरै, कुळ री होवै हाण।
(फूट विनाश का कारण बनती है)

फो

फोकट रा डाम ही चोखा।
(मुफ्त मे जो भी मिले अच्छा हे)

फोग आलो भी बळै – सुको भी बळै।
सासू सुधी भी लड़ै – भूण्डी भी लड़ै।
(सास अपना रौब जमाती ही है)

ब

बकरी फाटक मै आ'गी।
(फस ही गये)

बकरे की मां कब तक खैर मनायेगी।
(दुआ से कब तक काम चलता है)

बख़त बीतज्या, बात खड़ी रहज्या।
(समय बीत जाता है, बाते रह जाती है)

बग़त/मौके रा बायोड़ा मोती निपजै।
(समय पर किया काम फलित होता है)

बड़ा कद हुया ? –क– माईत मर्‌या जणै बड़ा हुया।
(उतरदायित्व आने पर समझ आ जाती है)

बड़ां स्यूं पैली तेल पी जावै।
(अति चतुर)

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं फल लागै अति दूर।।
(केवल कद बडा होने से क्या लाभ)

बड़ी आळा घी देवै तो, आपणै पाणी ई सही।
(देखादेखी)

बड़ी बहू काढ़ी का'र-सारो कडुम्बो बीरै ला'र।
(बडे जिस प्रकार चलते हैं वही परम्परा चलती है)

बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटो बनड़ो घणो सुहाग।
(उम्र मे वेमेल विवाह पर सतोष हेतु कहावत)

बड़ी मछली छोटी मछली नै खा ज्यावै।
(बड़ो के सामने छोटो की नहीं चलती)

बड़ी रात रा बड़ा झांझरका।
(बडे व्यक्तियो की बाते बडी होती है)

बड़े घर बेटी दीन्ही, मिलनै रा ही सांसा।
(बड़ी जगह सम्पर्क भी दुलर्भ हो जाता है)

बड़ो, कचोड़ी, बाणियो, कांसी, लोह, कसार।
इतरा तो ताता भला, ठण्डा करै विकार।।
(इनका उपयोग गरम–गरम ही करना चाहिए)

बढ़े जाट रो, सीखै नाई रो।
(दूसरे के नुकसान से सीख ले लेना)

बद अच्छा – बदनाम बुरा।
(बदनामी ज्यादा बुरी है)

बन्द मुठ्ठी लाख की, खुल जाये तो खाक की।
(भ्रम बना रहे तभी तक ठीक है)

बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।
(अज्ञानी किसी चीज का क्या मोल समझेगा)

बन्दर रै गळै मै मोत्यां री माळा।
(अयोग्य को मूल्यवान वस्तु मिल जाय)

बन बन रो काठ भेळो हुवड़ो है।
(अलग अलग जगह व स्वभाव के लोग, सामान्यत सयुक्त परिवार में आई बहुओं के लिए कहा जाता है)

बरसाती मेंढ़क
(अवसर परस्त)

बळतियो।
(ईष्यालू)

बळती मे कुण हाथ देवै।
(झगडे मे कौन हस्तक्षेप करे)

बळद ब्यावणो गांव।
(अफवाहों को तरजीह देना)

बळ पड़ता जाळी झरोखा।
(अपनी अपनी सुविधानुसार तर्क गढ लेना)

बळ बिना बुध बापड़ी।
(शक्ति बिना बुद्धि बेचारी हो जाती है)

बहता पाणी निर्मला, पड़ा गन्दीला होय।
साधु तो रमता भला, दाग न लागै कोय।।
(साधु को एक जगह नहीं रहना चाहिए)

बहू उघाड़ी फिरै - किसी सुसरै री फूटोड़ी है ?
(अच्छा बुरा मुखिया की जानकारी मे तो है ही)

बहू खनै स्यूं चोर मरावै - चोर बहू रा भाई।
(मिली भगत)

बहू, बछेरो, डीकरो, नीवड़ियां परमाण।
(बहू, गाय, लड़के आदि का सही होना समय गुजरने पर ही पता चलता है)

ब्याज नै घोड़ा ई कोनी नावड़ै।
(ब्याज बहुत तेजी से बढता है)

ब्यावं अर लड़ाई दूसरै रै घरै ही आछी लागै।
(विवाह व झगडा दूसरे के यहा हो तभी मजा आता है)

ब्यावं बिगाड़ै दो जणां, का मूंजी का मेह।
वो पइसो खरचै नहीं, वो दड़ादड़ दे।
(विवाह कजूसी या वर्षा के कारण बिगडता है)

ब्यावं हुग्यो – क – माईता स्यूं गयो।

टाबर हुग्यो –क– लुगाई स्यूं गयो।

(विवाह के बाद व्यक्ति माता पिता से ज्यादा पत्नी की बात मानता है, बच्चा हो जाने के बाद औरत पति की अपेक्षा बच्चे का ध्यान रखती है)

बा

बाई ऐ! जिकेरी औलाद बिगड़ जाय – बेरो जमारो बिगड़ जाय।

(सतान सही नहीं हो तो जीवन नरक बन जाता है)

बाई कैवता राण्ड निकळै।

(जिसे बोलने का शऊर न हो)

बाई रा बैली, का छींपा का तैली।

(बुरी सगत)

बाई बतीस लखणी, बीरो छतीस लखणो।

(दोनों एक जैसे)

बाड़ मै मूत्यां बैर कोनी निकलै।

(ईर्ष्या करने से लाभ नहीं है)

बाड़ ही खेत नै खावै जद बो किंया पनपै।

(रक्षक ही भक्षक हो तो कैसे विकास हो)

बाजै सारू पग उठै।

(औकात अनुसार)

बाटी खांवतां बूझ आवै।

(मिलते लाभ मे आनाकानी करना)

बाढ़ोड़ी आंगळी पर कोनी मूतै।

(अति स्वार्थी)

बाणिये री मूंछ नीची ही सही।
(बनिया अक्कड नहीं रखता)

बाणिये री पीठ पक्की हुवै, छाती कच्ची हुवै।
(बनिये के पीछे से कितने ही लग जाए पर सामने लगना सहन नहीं होता)

बाणियो चढ़े रोड़े, रजपूत चढ़े घोड़े।
(बनिये के पास पैसा आते ही मकान बनाता है और राजपूत घोड़ा खरीदता है)

बाणियो तीन बार राजी हुवै।
(बनिया लाभ होने पर, बराबर रहने या कुछ नुकसान खाकर भी सतोष कर लेता है)

बात ऊपर/लारै बात आवै।
(एक बात पर दूसरी बात याद आती है)

बात जुबान से और तीर कमान से निकला वापस नहीं आता।
(कही हुई बात सदा कायम रहती है)

बात्यां रिझै बाणियो, गीतां से राजपूत।
बामण रीझै लाडुवां, बाकल रीझै भूत।।
(खुशी होने की अपनी अपनी पसन्द है।)

बांडियै कुत्ते रो लाय मै कांई बळै ?
(जिसके पास कुछ है नहीं उसका क्या नुकसान होगा)

बांट चूंट खावणो - बैंकूण्ठ मै जावणो।
(सबसे मिलजुल कर खाना चाहिए)

बान्दरो बुढ़ो हू जावै, पण गुळांची खावणी कोनी भूलै।
(आदत से बाज न आना)

बामण सामी करी खेती - नहीं हुवै तो घंटा सेती।
(अन्य विकल्प हो तो एक काम सफल न हो तो भी कोई खास बात नहीं)

बाबल पीटी कैवो चाहे मावड़ पीटी कैवो, बात एक ही है।
(परिणाम / मतलब एक ही है)

बाबल स्यूं ही डायी।
(पूज्य को भी सम्मान न देना)

बाबो आयो नव दिन, नवूं गया एक दिन।
(एक बार मे ही बराबर)

बाबो आवे – बाटियो लावे।
(उम्मीद होना)

बाबोजी जीम्यां पछै बचै ठीया।
(पीछे कुछ नहीं रहता)

बाबोजी धुंई तपो ? – क – जी म्हारो जाणै।
(दूसरे का सुख दु:ख समझ नहीं आता है)

बाबोजी नै मरता देख'र मरणै स्यूं मन फाटग्यो।
(दूसरे की तकलीफ देखकर दहल जाना)

बाबो भली करै – किंया करै बो ही जाणै।
(भगवान कैसे भला करता है, वही जानता है)

बाबो मर्‌यो, गीगली जाई – रह्या तीन रा तीन।
(लाभ नुकसान बराबर)

बा'रा कोसां बोली पळटै, बनफळ पलटै पाका।
सौ कोसां तो साजन पलटै, लखण नीं पलटै लाखां।।
(बारह कोस पर बोली व फल का स्वाद पलट जाता है,
पति सौ कोस दूर रहकर पत्नी को भूल सकता है पर मानव का स्वभाव कहीं नहीं बदलता)

बा'रा गांव बामण रै पट्टै, कोई घालै कोई नटै।
(कोई दे या नहीं दे, कोई फरक नही पड़ता)

बाल से आळ, बूढ़े से विरोध, चंचल नारी से ना हंसिये।
ओछे की संगत, गुलाम से प्रीत, औ'घट घट में ना धंसिये।।
(बच्चे से झगडा, बूढे का विरोध, चचल औरत से मजाक, निम्न आदमी की सगत व दास से प्रेम, व बिना घाट के तालाब मे स्नान नहीं करना चाहिए)

बाळू री भींत, गोद रो छोरो। नाते राण्ड'र चोदु बोरो।।
(रेत की दीवार, गोद का लडका, दूसरी पत्नी व कमजोर महाजन से उम्मीद नहीं रखनी चाहिए)

बावनो जित्तौ बारै हुवै बित्तो ई जमीन मै हुवै।
(जितना छोटा उतना ही खोटा)

बासी रेवै - न - कुत्ता खाय।
(बचत न होना)

बा ही कुल्हाड़ी'र - बै ही डाण्डा।
(वही स्वभाव/हालत)

बि

बिगड़ोड़े ब्यांव मै नाई फिरै ज्यां फिरै।
(बिना मतलब इधर उधर घूमना)

बिंधिजग्या सो मोती।
(जो हो गया या तय हो गया, वही अच्छा है)

बिणज लग्यो बाणियो, चूणखै लागी गाय।
बावड़ै तो बावड़ै, नहीं दूर निकळ ज्याय।
(व्यापार मे लगा बनिया व चरने मे लगी गाय वापिस कब लौटे पता नहीं)

बिन घरनी घर भूत का डेरा।
(घर की शोभा स्त्री से ही होती है)

बिना बुलावे राम रै घरै भी नहीं जावणो।
(बिना बुलाये कहीं नहीं जाना चाहिए)

बिना मन रा पावणा – घी घालूं का तेल।
(बिना आदर आये मेहमान को सम्मान नहीं मिलता)

बिना रोयां मां भी बोबो कोनी देवै।
(अधिकार के लिए बोलना पड़ता है)

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछताय।
(सोच समझ कर कोई काम करना चाहिए)

बिल्ली रै भाग रो छींको टूटग्यो।
(अचानक लाभ प्राप्त होना)

बी

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय।
(बीती बातो को भूल कर आगे का निर्णय करना)

बीन बीनणी स्यूं राजी, जानी जीमण स्यूं राजी।
(सबका अपना अपना स्वार्थ है)

बीन मरै, बीनणी मरै – बामण रो टको पक्को।
(किसी को लाभ हो चाहे नुकसान मध्यस्थ की दलाली पक्की है)

बीन रै मुण्डे मै लाळ पड़ै, जणै जानी बापड़ा कांई करै।
(मुख्यकर्ता के लोभ हो तो कोई क्या कर सकता है)

बु

बुध पहरै बागा कदे नै फिरै नागा।
(बुधवार को नये कपडे पहनना शुभ माना गया है)

बुध बावणी, शुक्र लावणी।
(बुधवार को फसल की बुवाई व शुक्रवार से कटाई करना शुभ माना गया है)

बुज़ा बाढ़ण, मूळ उपाड़न, थपथपिया अर नाई।
(कार्य की पूर्णता पर उसे जड से काट देने की प्रवृति)

बुज़ा बाढ़ण, मूळ उपाड़ण, थपथपिया अर नाई।
इतरा चेला न करो गुरूजी, काम न आवे कोई।।
(जाट, माली, कुम्हार और नाई परिपक्वता पर जड से काटते है)

बू

बूढ़ा बालक एक समान।
(बूढे व बच्चे की हरकतें एक जैसी होती है)

बूढा गिण्या नै बाळका, तड़को गिण्यो नै सांझ।
जणै जणै रो मन राखती – वेश्या रहगी बांझ।।
(हर किसी को सतुष्ट करने की चेष्टा, पर परिणाम कुछ भी नहीं)

बूढ़ी गाय गुरूआं नै दीजै
(अनुपयोगी वस्तु का दान)

बूढी घोड़ी लाल लगाम।
(बूढी का श्रृगार)

बून्द बून्द स्यूं घड़ो भरीज जावे, उलीच्यां स्यूं कुओ भी खाली हू जावै।
(बचत से धनी होता है)

बे

बेटी अर बळद जुड़ो कोनी न्हांकूयो।
(बेटी व वैल सदा बन्धन मे रहते हैं)

बेटी आप भागण हुवे, बाप भागण कोनी हुवे।
(लडकी अपना भाग्य लेकर आती है)

बेटी जाम जमारो हार्‌यो।
(वेटी के वाप को नीचे झुकना पडता है)

बेटी जीवै जीतै बाप रै घर री आस करै।
(बेटी जीवन पर्यन्त पीहर से अपेक्षा रखती है)

बेटी जाई रे जगन्नाथ – बी'रा हेठा आया हाथ।
(बेटी वाले को झुक कर रहना पडता है)

बेटी दीज्यो दूर – रोटी जीमो चूर।
(बेटी का ब्याह बाहर ही करना उचित रहता है)

बेटी हूसी जणै जंवाई आसी, माल हूसी जणै ग्राहक आसी।
(माल होने पर ग्राहक आ जाता है)

बेटे से बेटी भली, जे बा हुवै सपूत।
अगर बेटी नहीं हूवंती, तो अळसी जातो ऊत।
(बेटी सुशील हो तो बेटे से अच्छी)

बेटो कमावै दिन दिन – ब्याज कमावै रात दिन।
(ब्याज रात दिन चालू रहता है।)

बेटो बण'र खा सकै, बाप बण'र कौनी खाइजै।
(नम्रता से कोई चीज हासिल हो सकती है)

बै

बैठतो बाणियो'र – उठती माळण, सस्तो तोलै।
(बनिया सुबह बोहनी के समय सस्ता देता है और मालन शाम को)

बैठे जोय –न– उठावै कोय।
(सोच समझ कर बैठने वाले को उठाना नहीं पडता)

बैंवती/बहती गंगा मै हाथ धोलै जको आपरो है।
(चलती मे लाभ उठाने मे ही फायदा है)

बै पाणी मुळतान गया।
(अवसर निकलने के वाद क्या फायदा)

बैर कदेई बूढ़ो कोनी हुवै।
(बैर पुराना नहीं होता)

बैरी न्यूंत बुलाईया, कर भायां स्यूं रोस।
आप कमाया कामड़ा, कीनै दीजै दोस।।
(भाइयो मे नाराज होकर स्वय शत्रुओं को बुलाया, इसका परिणाम तो भुगतना ही पडेगा)

बो

बोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय।
(जैसे सस्कार मिलेंगें वैसा ही व्यक्ति बनेगा)

बोलणो न्याव, चालो भले ही कुन्याव।
(हमेशा न्याय की बात ही बोलना चाहिए)

बोलै जिकेरा भूंगड़ा ही बिकै।
(बोलने मे उस्ताद हो वह अपनी बात मनवा लेता है)

बोलै जको मरै।
(चुप रहने मे फायदा है)

बोळो पूछे बोळी नै, कांई रांधा होळी नै।
(एक दूजे की न सुनना)

भ

भगवान रै घरै देर है, अन्धेर कोनी।
(भगवान के यहा न्याय में देर लग सकती है पर न्याय अवश्य मिलता है)

भगवान मौत दे देई, सौत मत देई।
(स्त्री सौत बर्दाश्त नहीं कर सकती)

भजई चिग्यां कढ़ावै-क-भजई चिग्यां ही है।
(ऐसी ही है)

भजन और भोजन एकान्त में।
(भगवान का स्मरण व भोजन एकान्त मे ही करना चाहिए)

भणोड़े नास्यूं गुण्योड़ो चोखो।
(पढाई से ज्यादा अनुभव काम आता है)

भय बिना प्रीत कोनी।
(डर के बिना काम नहीं होता)

भर्‍योड़ी गाड़ी मै छाजलै रो कांई भार।
(थोड़े बहुत मे क्या फर्क पड़ता है)

भरोसे री भैंस पाडियो लावै।
(किसी पर भरोसा रखने से इच्छित लाभ प्राप्त नहीं हो सकता)

भा

भाई जीसो सज्जन नहीं – भाई जीसो बैरी नहीं।
(भाई के समान सज्जन नहीं तो भाई के समान कोई प्रतिद्वन्दी भी नहीं है)

भाई भूरा लेखा पूरा।
(पूरा–पूरा हिसाब हो गया। कोई लाभ–हानि नहीं, न घटत–बढत)

भाई मर्‍या रो धोखो कोनी – भजई रो नखरो तो भाग्यो।
(अपना अहित होने पर भी दूसरे का अहित सोचना)

भाई रै मन भाई भायो, बिना बुलाये जीमण आयो।
आखड्यो सो पड्यो नहीं, घी ढूळ्यो सो मूंगा मांही।।
(भाई–भाई लेन देन मे कम बेसी हो तो भी घर मे ही है)

भाग फुटोड्या नैं हियो फुटोड्यो मिल ज्यावै।
(अपनी तरह के मिल ही जाते हैं)

भातौ मोड़ो लाई नीं –क– पूछण नै आई हूं कांई लाऊं ?
(काम मे देर तो क्या, काम तो अभी शुरू ही नहीं किया)

भांग मांगै भूंगड़ा, सुलफो मांगै घी।
दारू मांगै खूंसड़ा, मरजी आवै तो पी।।
(भाग पीने वाले को भुने चने व सुलफा खाने वाले को घी चाहिए, लेकिन शराबी को जूते पड़ते हैं तब नशा उतरता है)

भाभी नीपती ही जाय, कोडो खेलतो ई जाय।
(काम करने के साथ ही दूसरा उसको बिगाड़ता रहे)

भायां बिना गाहढ़ किसी, पूत बिना परिवार।
(भाइयो बिना दबदबा नहीं होता और पुत्रों के बिना परिवार नहीं)

भार तो भींत ही झालै – टाटी कोनी झालै।
(जो सक्षम है वे ही दायित्व सभाल सकते हैं)

भाव जिसो करै – भाई नहीं।
(मन के भाव ही सब कुछ करवाता है)

भी

भील, भंगी, भगतण, भोपा, देतां–लेतां बाजै बोझा।
(इन सभी के साथ लेन–देन करने मे बखेडा ही रहता है)

भीज्या कान – हुया स्नान।
(पानी के स्पर्श मात्र से शुद्विकरण)

भु

भुवाजी उघाड़ी घूमै, भतीजा नै चइजे झबला टोपी।
(जिसकी क्षमता नहीं है उससे उम्मीद रखना)

भुआ जाँऊ जाँऊ ही, फूंफो लेवण नै आग्यो।
(जैसा सोच रहे थे, उसी अनुरूप अवसर भी वन जाना)

भुआजी तेड़ो है –क– कांरो तेड़ो है ?
वा–कांरो है तो, थे थारै घरां बैठा रहो।
(दिखावे का आमन्त्रण)

भू

भूख केरी सगी कोईनी।
(भूखा व्यक्ति कुछ भी कर सकता है)

भूख मीठी – न – लापसी।
(भूखे व्यक्ति को सब स्वादिष्ट लगता है)

भूख न देखै एंठ चूंठ, तिस न देखै धोबी घाट।
प्रीत न देखै ऊंच नीच, नीन्द न देखै टूटी खाट।।
(भूखा झूठन, प्यासा पानी की स्वच्छता, प्रेम मे व्यक्ति जाति व नीन्द आ रही हो तो जगह नहीं देखता।)

भूखे भजन न होत गोपाला।
(भूखा व्यक्ति काम नहीं कर सकता)

भूखे भजन न होत गोपाला, ले ले अपनी कण्ठी माळा।
(भूखा रहकर साधना नहीं हो सकती)

भूखो धायां पतीजै।
(किसी कार्य के पूर्ण हो जाने पर ही उसे हुआ समझना चाहिए)

भूखो बामण सोवै अर भूखो जाट रोवै।
भूखो बाणियो हंसै अर भूखो रांगड़ कमर कसै।
(भूखा ब्राह्मण सोता है, भूखा जाट कोसता है। भूखा बनिया अपनी भूख दिखाता नहीं और भूखा ठाकर काम देखता है)

भूत मरै अर पलीत जागै।
(कोई और बला आ जाती है।)

भूत स्यूं कोनी भौताड़ स्यूं मरै।
(भूत से नहीं भूत के भय से आदमी मर जाता है)

भूल गयो रंग राग, भूल गयो छकड़ी।
तीन चीज याद रैई, तेल, लूण, लकड़ी।।
(परिवार बसने के बाद उसके पालन की चिन्ता ही रहती है)

भूल मिनखां स्यूं ही हुवै।
(भूल होना स्वाभाविक है)

भूल-चूक लेणी-देणी।
(भूल-चूक ली और दी जाती है)

भै

भैंस के आगे बीन बजाना।
(जिसकी खुशामद करने से कोई लाभ नहीं)

भो

भोळै बामण भेड़ खाई, फे'र खावै तो राम दुहाई।
(एक बार भूल हो गयी, अब आगे कभी न करूंगा, इस भाव को प्रकट करने के लिए इसका प्रयोग होता है)

भोळै भोळै भेट खाई - फेर खाऊं तो राम दुहाई।
(फिर से न करने की कसम खाना)

भोळै रा भगवान हुवै।
(सरल आदमी का सहायक भगवान होता है)

भोळो गजब रो गोळो
(भोला दिखता है लेकिन है शातिर)

भौंकणो कुत्तो खावै कोनी।
(ज्यादा बोलने वाला काम नही करता)

भौपा भगवान नै पुजाय देवै।
(अेच्छा अनुयायी वाहवाही करवा देता है)

म

मचक मोजड़ी नेतो है जी नेतो है।
(प्रदर्शित करने के लिए युक्ति करना)

मजबूरी का नाम महात्मा गांधी।
(मजबूरी मे कोई बात स्वीकार करना)

मत मरजै टाबर री मां, मत मरजै बूढ़े री नार।
(छोटे बच्चे की मा व बूढे व्यक्ति की औरत मर जाने से उनका जीना दूभर हो जाता है)

मतलबी यार किसके – खाये पीये खिसके।
(स्वार्थी दोस्त)

मतलब री मनवार, नैत जिमावै चूरमो।
बिन मतलब मनवार, राब न घालै राजिया।
(स्वार्थी)

मतीरां रो भारो कोनी हुवै, सिंहा की टोली कोनी हुवै।
(सबल मे सगठन नहीं होता)

मंगता नै मक्खाणा कुण खावण देवै।
(कमजोर आदमी को कोई लाभ कमाने नहीं देता)

मंगता स्यूं किसी गळी छानी हुवै।
(लगातार आने जाने वाले से रास्ते छिपे नहीं होते)

मन चंगा तो कठौती मै गंगा।
(मन निर्मल हो तो सब ठीक है)

मन चालै – पण टट्टू कोनी चालै।
(मन होने से क्या होता है क्षमता भी होनी चाहिए)

मन बायरा पावणां - घी घालूं का तेल।
(बिना मन किसी का कोई काम नहीं होता)

मन लगा गधी से तो परी क्या चीज है।
(मन को जो प्रिय है वही सर्वोत्तम है)

मरता क्या न करता।
(मजबूरी में कोई बात स्वीकार करना)

मरतो तरळा खावै।
(आखिरी प्रयत्न कर रहा है)

मरद तो मूंछ्याळ बांको, नैण बांकी गोरियां।
सुरहळ तो सींगाळ बांको, पोड़ बांकी घोड़ियां।
(मूछों से मर्द, सुन्दर नयनों से नारी, बढिया सींगों से गाय व सुन्दर पीठ की घोडी अच्छी लगती है)

मरद रो जोबन साठ बरस, जे घर मै होय समाई।
नार रो जोबन तीस बरस, हर बैल रो जोबन ढाई।।
(सम्पन्नता हो तो पुरुष साठ वर्ष, स्त्री तीस वर्ष व बैल ढाई वर्ष जवान रहता है)

मरणों भलो विदेश में, जहां न अपनो कोय।
माटी खावै जिनावरा, महामोछ्ब सो होय।
(अपरिचित जगह पर मरना अच्छा)

मरै - न - मांचो छोडै।
(वृद्ध अशक्त रोगी से परेशान हो जाना)

मरी क्यूं ? - क - सांस कोनी आयो ज्यूं।
(काम से फुरसत न हो)

मरो मां'र जीयो मासी - दूध नहीं तो छाछ तो पासी।
(मासी को भानजा प्रिय होता है)

मल्ल आया है, उठा'र पटकै।
कुश्ती करै जकै नै पटकै, घरै बैठ्या न तो पटकै ही कोनी।
(किसी से लडाई मोल न लें तो उससे कोई खतरा नहीं होता)

मसाण गेवड़ी लकड़ी पाछी कोनी आवै।
(निमित किया धन खर्च ही होता है)

म्हनैं घड़गी जिकी बाड़ मै बड़गी।
(अहं)

म्हांसू गोरो बिनै पीळिये रो रोग।
(अहं)

म्याऊ रै गळै घंटी कुण बांधै।
(ताकतवर का विरोध कौन करें)

म्हैं पीया म्हारा बळद पीया, अब कुआ भले ही ढह जावो।
(अपना काम निकाल कर निष्फिक्र हो जाना)

मा

माईतां री पुण्याई है।
(पूर्वजो के आशीर्वाद का प्रताप)

माई नास्यूं खाई प्यारी।
(मा से ज्यादा खिलाने वाला प्रिय होता है)

मां कूटै – पण कूटण कोनी देवै।
(माता–पिता बच्चे को दूसरे की दी सजा बर्दाश्त नहीं कर सकते)

मांगणे स्यूं मरणो भलो।
(मागने से मरना अच्छा है)

माताजी मढ़ मै बैठी मटका करै। बाणियै नै बेटो म्हे दियो है।
(जिसने दुनिया नहीं देखी)

मांग्यां मिलै न माजनो।
(इज्जत कह कर नहीं करवायी जा सकती)

माथे रो भार टांग्या पर ही आसी।
(देनदारी बढाना उचित नहीं)

मानखो घणोई है, पण मिनख मिलणा मुश्किल है।
(मनुष्य बहुत है पर स्वाभिमानी/मनुष्यता कम)

मान न मान - मैं तेरा मेहमान।
(जबरदस्ती मेहमान बनना)

मानो तो देवता नहीं तो पत्थर।
(श्रद्धा से पत्थर मे भी भगवान दिखते हैं)

मां-न-मां रो जायो, ओ देश परायो।
(जहा अपना कोई न हो)

मां नै कांई देखो - बिरी कूख न देख लो।
(सतान अच्छी हो तो माता पिता की प्रतिष्ठा होती है)

मां मरै जकैरी मासी भी मरै।
(दु ख मे दुःख)

मामी खनै मांचो सौड़ै - मामी खुद ही कतारियां भैली सुती है।
(दूसरे पर आस करना जो स्वय ही दूसरो पर आश्रित हो)

मामे रो ब्यांव'र् मॉ पुरसारी - जीमों बेटा रात अन्धारी।
(अपनो को लाभ पहुचाना)

मायतां री गाळ - घी री नाळ।
(माता पिता का उलाहना ही अच्छा)

माया अण्टे – विद्या कण्ठे।
(धन पास मे हो व विद्या याद हो वही काम की है)

माया थारा तीन नाम – फूसिया, फरसा, फरसराम।
(व्यक्ति की प्रतिष्ठा धन से होती है)

मार आगे – भूत भागे।
(मार के डर से मानना)

माले मुफ़त – दिले बेरहम।
(मुफ्त का माल सबको अच्छा लगता है)

माळी अर मूळा छीदा ई भला।
(माली और मूली दूर–दूर ठीक रहते हैं)

मि

मिनख खनै टको नहीं हुवे तो कोडी रो,
साधु खनै टको हुवे तो कोडी रो।
(आदमी के पास धन न हो तो वह बेकार है, साधु के पास धन हो तो वह बेकार है)

मिनख पावड़े स्यूं खोदै तो खुदै कोनी, लुगाई सुई स्यूं खोद देवै।
(औरत सहनशील व कुशाग्र होती है)

मिनख बापड़ो कांई करै जो घर मै नार-कुनार।
वो सींवै दो आंगळी, वा फाड़ै गज च्यार।।
(बिगाडने वाले को सुधारने वाला पार नहीं पा सकता)

मिनखां री माया है।
(सौभाग्यशाली आदमी है तो धन ही धन है)

मिनड़ी आई है – क – रो'ड़ दो, दूजे घर स्यूं भी रह ज्यावै।
(यहा के भरोसे दूसरे से भी वचित रह जाये)

मिनड़ी रै पेट मे घी कोनी खटै।
(राज की बात न छुपा पाना)

मिंयाजी नै सलाम सटै क्यूं रिसाणा करो।
(थोडा सम्मान देकर खुश करने मे क्या हर्ज है ?)

मिंयाजी री दौड़ मस्जिद तांई।
(पहुच एक सीमा तक)

मिंया बीबी राजी, तो क्या करेगा काजी।
(दोनो पक्ष सहमत हो तो अन्य की अपेक्षा नहीं)

मिंया मरया जद जाणिये, जद चाळीसा होय।
(जब कोई काम पूरी तरह निपट जाय तभी उसे सम्पन्न मानना चाहिए)

मिर्जापुरी लोटो।
(बार बार बात से पलटना)

मिले मुफ़त रो माल - साण्ड रैवे सोरा।
(मुफ्तखोर)

मिलै तो ईद - नहीं तो रोजा।
(मिल जाये तो मौज नहीं तो फाकापरस्ती)

मी

मीठा बोल्यां मन बधै, कड़वा बोल्या राड़।
(मधुर बोलने से प्रेम बढता है कटु बोलने से झगडा)

मीठै रै लालच जूठो खायो।
(स्वार्थ मे विवेक नहीं रहता)

मीठो खावे जके नै खारो भी खावणो पड़ै।
(जो लाभ उठाये उसे परेशानी भी झेलनी पडती है)

मु

मुख में राम बगल में छुरी।
(ऊपर से कुछ दिखाना भीतर से घात करना)

मुण्डे मुण्डे मति भिन्न।
(जितने सिर उतने दिमाग)

मुण्डै मै कवो, माथै मै ठोलो।
(खिलाना भी और उपालम्भ भी देना)

मुण्डो देख'र टीको काढ़ै।
(हैसियत के अनुसार उस को तव्वजो देना)

मुंह स्यूं कुछ बोले नहीं, करो किसी रै गैल।
पराधीन दोन्यूं सदा, जग में बेटी बैल।।
(बेटी और बैल अपनी ईच्छा से नहीं चलते)

मुफ्त रो धक्को ही चोखो, दो पांवडा आगै तो खिसक्यो।
(मुफ्त की हर चीज अच्छी)

मुरदै थकां खांदिया कोनी बळै।
(नुकसान मालिक को ही सहना पडता है, मध्यस्थ को नहीं)

मू

मूण्ड मुण्डावतो अर कुऐ मै पड़तो सोचण लाग जावै जणै कोनी पड़ीजै।
(ज्यादा सोचने लग जाता है वह यह काम नहीं करता)

मूंघो रोवै एक बार, सूंघो रोवै बार बार।
(महगा लेने वाला एक बार पछताता है, सस्ता लेने वाला बार बार पछताता है)

मूंज बळ ज्यावै पण बट कोनी जावै।
(अकड समाप्त नहीं होती)

मूरख नै कूटणो सोरो, समझावणो दोरो।
(मूरख आदमी को समझाना मुश्किल होता है)

मूरख नै टक्को दे देवणो पण अक्कल नहीं देवणी।
(मूर्ख को पैसा दे देना सरल है समझाने से कोई लाभ नहीं)

मूळ नास्यूं ब्याज प्यारो लागै।
(सतान से भी ज्यादा पोते पोती प्रिय लगते हैं)

मे

मेंहदी रंग लाती है सूखने के बाद।
(लाभ मिलने मे समय लगता है)

मेह अर पावणां – कठै पड़्या है।
(वर्षा व अतिथि सौभाग्य से ही आते हैं)

मेह, मौत अर ग्राहक रो ठा कोनी, कणै आवै।
(वर्षा, मौत व ग्राहक के आने का समय निश्चित नहीं होता)

मै

मैदा लकड़ी कांई भाव ? –क– पीड़ सारू दाम है।
(जरूरत के अनुसार कीमत)

मैं खांवू तो तनै देवू, तू खावै तो म्हैनें दै। ए ई पक्का भायला।
(मिल बाट कर खाना)

मो

मोडा घणां मण्डी/ बैकुण्ठ सांकड़ी।
(वेशधारी अधिक)

मोटो खावणो, मोटो पैरणो।
(सादगी भरा जीवन)

मोटो देख'र डरणो नहीं, पतलो देख'र लड़णो नहीं।
(मनोबल से ही जीत हार होती है)

मोठ स्यूं घुण अलग कोनी हुवै।
(अच्छाई के साथ कुछ बुराई भी रहती है)

मोठां साठै घुण भी पीसीजै
(एक के साथ दूसरे को भी नुकसान सहन करना पडता है)

मोरां बिन डूंगर किसा, मेह बिन किसी मल्लार।
तिरिया बिना तीज किसी, पिव बिन किसा तिंवार।
(मोरो के बिना पर्वत, वर्षा के बिना मल्हार राग, पत्नी के बिना तीज व पति के बिना त्यौंहार अच्छे नही लगते)

मोरियो पगा नै देख'र रोवै।
(अपनी कमी मन को पीडा पहुचाती है)

मोहनियै आळो मतीरो।
(किसी चीज का मन से न निकलना)

मौ

मौत आगे जहमत हैंकारै।
(ज्यादा नुकसान के आगे कम नुकसान स्वीकार्य होता है)

मौत मुकदमा मान्दगी, मन्दी और मकान।
अै पांच 'म-मा' बुरा, पत राखै भगवान।।
(मौत, मुकदमे, बीमारी, मन्दी व भवन निर्माण कार्य मे धीरज छूट जाता है)

र

रघुकुल रीत सदा चली आई।
प्राण जाय पर वचन ना जाई।।
(प्राण भले ही जाये पर वचन नहीं जाना चाहिए)

रमायै रो नाम कोनी हुवै, रोवायै रो हू जावै।
(अच्छे की प्रशसा नहीं होती पर कमी का उपालम्भ मिल जाता है)

रहिमन रोवे किसलिये, हंसे जो कौन विचार।
गये सो आवण के नहीं, रहे सो जावण हार।।
(जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है)

रळायां हाथ धुपै।
(सामजस्य के लिए दोनो को झुकना पडता है)

रस्सी बल जावै बट कोनी जावै।
(वैभव खत्म हो जाने पर भी नखरा नहीं जाता)

रा

राई घटै नै तिल बधै, रै-रे जीव निसंक।
(हे जीव! तू निश्चित रह, जो भाग्य मे लिखा है वही होगा)

राई रो पहाड़ बणाणो।
(छोटी सी बात का बतगड बनाना)

राखपत - रखापत
(आप दूसरों का आदर करेगे तो लोग आपको आदर देंगे)

राग रसायण, चासणी, कभी कभी बण जात्।
(सदा एक जैसा नहीं होता)

राग, रसायण, निरतगत, नटबाजी, बैदंग।
अश्व चढ़ण, व्याकरण पढ़ण, जाणत ज्योतिष अंग।
धनुष बाण, रथ हांकबो, चित चोरी, ब्रह्म ज्ञान।
जळ तिरबो धीरज वचन, चौदह विद्या निधान।।
(राग, रसायन, नृत्य, नटवाजी, वेद्यक, घुडसवारी व्याकरण का अध्ययन, ज्योतिष का ज्ञान, धनुष वाण चलाना, रथ सचालन दूसरे के चित्त को मोह लेना, ब्रह्म ज्ञान, तैरना व धीर गम्भीर वाणी बोलना ये चौदह विद्याए मानी जाती हैं, और इनका ज्ञाता चौदह विद्या निधान कहलाता है)

राड़ आगै बाड़ चोखी।
(झगड़े से दूर रहना अच्छा)

राण्ड रण्डापो काढ़ दै, पण भड़वा काढ़ण दै कोनी।
(बहकाने वाले पथ भटका देते है)

राणा जी थरपै जको ही उदयपुर।
(निर्णायक का निर्णय सर्वोपरी)

राजपूत नै रैकारै री गाळ।
(बात का सवाल)

राज हठ, बाल हठ, त्रिया हठ।
(राजा, बालक व स्त्री को हठ करने के बाद मनाना मुश्किल होता है)

राजा, जोगी, अगन जळ, इनकी उल्टी रीत।
आगा रैया फरसराम, ऐ थोड़ी पाळै प्रीत।।
(राजा, जोगी, अग्नि एव जल का नाराज होना खतरनाक होता हैं)

राजा मानै सो राणी, ओर भरै सै पाणी।
(राजा माने वही रानी बाकी सभी दासियां)

रात गई - बात गई।
(समय निकल जाना)

रात गमाई सोय के, दिवस गमाया खाय।
हीरा जनम अनमोल है, कोडी बदले जाय।।
(अनमोल जीवन मौज मस्ती मे बीता देने से बेकार ही जाता है)

रात्यूं चाली ऊंघती, दिन मै आयो होस।
लुट्यां पछै डूमणी, भागी बारा कोस।
(लापरवाही करने व लुटने के बाद दौडने से कोई लाभ नहीं)

राण्ड स्यूं बती गाळ कोनी।
(इससे ज्यादा कोई वात नहीं)

राण्ड्यां ईयां ही रोवंती रैसी, जानी ईयां ही जीमता रैसी।
(सभी कार्य इसी प्रकार होते रहेंगे)

राण्ड भाण्ड उल्ड्या गाडा, जे चाले तो आडा ही आडा।
(एक बार पथ भ्रष्ट होने पर सही रास्ते आना मुश्किल होता है)

राण्ड, भाण्ड नहीं छेड़िये छेड़ो न पणघट री दासी।
सूतो कुत्तो न छेड़िये, छेड़ो न भूखो सन्यासी।।
(वेश्या, भाण्ड, दासी, सोये कुते व भूखे सन्यासी को नहीं छेडना चाहिए)

राण्ड रै राण्ड पगै लाग'र कांई लेवै।
(असक्षम आदमी क्या दे सकेगा)

राण्ड सैणी हुवै पण खसम मर्‌या पछै हुवै।
(बिगाड हो जाने पर अकल आने से क्या लाभ?)

रांधी हाण्डी रो सीर।
(आपसी प्रेम)

राबड़ी कैवै म्हनै भी रातीजोगै मै पुरसो।
(अयोग्य व्यक्ति का महत्वाकाक्षी होना)

राम झरोखै बैठ कर, सबका मुजरा लेय।
जैसी जिसकी चाकरी, वैसा ही फल देय।
(भगवान् सबको देखते हैं, जो जैसा करता है, उसको वैसा ही फल देते हैं)

रामदेव जी नै मिलै जका ढ़ेढ़ ही ढ़ेढ़।
(सब एक जैसे)

राम नाम जपना - पराया माल अपना।
(दिखावा सज्जनता का मन मे खोट)

राम मिलाई जोड़ी – एक काणो एक खोड़ी।
(दोनों एक जैसे)

राम-राम चौधरी, सलाम मियां जी।
पगे लागूं पांडिया, डण्डोत बाबाजी।
(अवसरवादी या व्यवहार कुशल)

रायां रा भाव राते ही गया।
(अवसर चूकना)

रावले मै इती पोल कठै -क- दो बार जीम लै।
(कोई व्यक्ति अनुचित लाभ उठाले, इतनी ढील यहा नहीं है)

रावळै रो तेल पल्लै मै ही सही-पल्लै मै नहीं तो खल्लै मै ही सही।
(मुफ्त का कुछ भी अच्छा)

रास पुराणी बाजरो, मींडक चाल जंवार।
इक्कड़-दुक्कड़ मोठिया, कीड़ी नाळ गंवार।
(बाजरा बोते समय दो दानो के बीच बैलो की रस्सी थामे व उन्हे हाकने की डण्डी के मध्य जितनी दूरी हो, मेढक की उछाल के मध्य दूरी जितनी पर ज्वार, मोठ एक–एक, दो–दो करके और चींटियों की कतार की तरह ग्वार की बुवाई करनी चाहिए)

री

रीत रो रायतौ करणौ पड़ै।
(कम बेसी भले ही हो, समाज के रीति–रिवाज को निभाना पडता है)

रू

रूप घणां गुण बायरा – रोहिंड़े रा फूल।
(गुण नहीं है तो रूप से कोई लाभ नहीं)

रूपली पल्लै तो रोही मै ही चलै।
(रुपया पास मे हो तो कहीं भी काम अटकता नहीं)

रूपियो मिल्यां अठन्नी बाद
(ज्यादा मिलने पर थोडे को छोड देना)

रूपियो ही मां, रूपियो ही बाप, रूपियै बिना बड़ो सन्ताप।
(पैसे की माया)

रे

रेशम रै पोतड़िया मै पळ्योड़्या।
(सम्पन्नता मे पले)

रो

रोग अर दुश्मन नै उठते ही दबा देवणो।
(रोग का इलाज व शत्रुता का अन्त शीघ्र कर देना ही उचित है)

रोग रो मूल थांसी/खांसी – लड़ाई रो मूल हांसी।
(ज्यादा हसी मजाक अच्छी नहीं)

रोटी खावै आपरी, बात करै पराई।
(दूसरो की बातो मे रूचि रखना)

रोटी देवै, खावण कोनी देवै।
मांचो देवै, सोवण कोनी देवै।
कूटै पण रोवण कोनी देवै।।
(दबाब में रखना)

रोंवतो जावै – मूवां/मर्‌योड़ा रा समाचार लावै।
(मन मे सशय रखकर शुरू करने वाला काम कभी सफल नहीं होता है)

रोयां राज कोनी मिलै।
(दीनता दिखाने से लाभ नहीं है)

रोवो केनै हो ? -क- खसमां नै।
खसम जीवता है नीं?
-क- जणै ही रोवां, मर जांवता तो नातो ही कर लेंवता।
(पति से परेशान)

ल

लड़ाई मै किसा लाडू बंटै ?
(लडाई मे लाभ नही होता)

लड़तां लारै भाजतां आगै, बात्यां घणी बणावै।
एसो सखी मेरो सायबो, क्षेम कुशल घर आवै।
(कायर सैनिक लडाई में पीछे रहता है व भागने में आगे, उसके जीवन की चिन्ता नहीं होती)

लड़तां री मां दो हुवै।
(झगडे मे सगे भाई भी गरिमा खो देते हैं)

लंका कदै ही लूंटीजी
(अब क्या बचा है)

लंका मै तूं ई दाळदी रह्यो।
(सबके लाभ उठाने के बावजूद कोई वचित रह जाये)

लम्बा पीरा – भाई भजैयां रा।
(भाई के अच्छा व्यवहार रखने पर पीहर का सुख रहता है)

ला

लाखां पर लेखो, करोड़ां पर कलम।
(बहुत अमीर घराना)

लाखां लोहां चम्मड़ां, पैली किसा बखाण।
बहू बछेरा डीकरां, निवड़ियां परमाण।।
(लाख, लोहा, चमडा, बहू, गाय का बछड़ा और पुत्र कैसे निकलते हैं, बाद मे ही पता चलता है)

लाग्यो तो तीर, नहीं तो तुक्को ई सही।
(सफल हो गये तो ठीक अन्यथा नहीं ही सही)

लाडू खावै हरकूड़ी, दाम चुकावै शिवनाथो।
(कोई चुकाये व कोई मजा करे)

लाण्ठै रो डोको गाण्ड फाड़ देवै।
(बड़े आदमी की बेरूखी नुकसानप्रद होती है)

लात्यां रा भूत बात्यां स्यूं कोनी मानै।
(कुछ व्यक्ति बिना प्रताडना नहीं मानते)

लाम्बा तिलक मधरी बाणी, दगैबाज री आ ई निसाणी।
(धोखेबाज सदाचारी होने का दिखावा करते हैं व मीठा बोलते हैं)

लालच गळो कटावै।
(लालच मरवा देता है)

लालच बुरी बलाय, खीर मै लूण मिलाय।
(लोभ मे आदमी अन्धा हो जाता है)

लाल बही छप्पन रै पानै, सेठजी रोवै छानै-छानै।
(खाते मे छप्पन पेज पर किसी का खाता लगाना शुभ नहीं माना जाता था)

लाळ लाग्योड़ी छुटै कोनी।
(आदत नहीं छूटती)

लि

लिखे खुदा - पढ़े मूसा।
(खराब लिखावट)

लिख्यो लिख्यो हुवै।
(किस्मत मे लिखा ही होता है)

लिछमी सैणै नै चौगणी, गैलै नै सौ गुणी।
(चतुर आदमी चार गुना अकन करता है मूरख सौ गुना)

ली

लीक लीक गाड़ी चले, लीक लीक कपूत।
लीक छोड़ तीनों चले-सिंह, शायर, सपूत।।
(सफल व्यक्ति स्वय अपना मार्ग बनाते है)

लीद खायां पेट कोनी भरीजे।
(गुमराह करके पैसे बीच मे खा जाने से गरीबी दूर नही होती)

लीद खावणी तो हाथी री, गधे री कांई खावणी।
(थोडे बहुत के लिए दगाबाजी क्या करनी)

लु

लुकोर खावो - जणै खावण देसी।
(प्रदर्शन नहीं करना ही श्रेयस्कर है)

लुगाई री अकल एडी मै हुवै।
(औरत देर से समझती है)

लुगाई लुकाई भली।
(औरत का ओट मे रहना ही अच्छा है)

ले

लेणा अेक न देणा दो।
(कोई आनी जानी नहीं)

लेवण रा बाट और है - देवण रा बाट और।
(लेनदेन व बात का विश्वास नहीं)

लो

लोग चढ्यै नै भी हंसै, पाळै नै भी हंसै।
(लोगो की नुक्ताचीनी करने की आदत होती है)

लोग चाल्या लावणी-लोग क्यूं नहीं जाय।
लोग चाल्या खाय पी'र, लोग कांई खाय।
छींकै पड़ी राबड़ी, उतार क्यूं नीं लै।
अबै आपां बोल्या चाल्या-घाल क्यूं नीं दै।
(पति पत्नि की लडाई लम्बी नहीं चलती)

लोभे पाप – पापे मृत्यु।
(लोभ से पाप व पाप से मृत्यु होती है)

लोहो गरम हुवै जणै चोट करनी।
(अवसर पर कहना)

लोहो लोहै नै काटै।
(अपने ही व्यक्तियो को नुकसान पहुचाना)

व

वहम रो ईलाज कोनी होवै।
(मन के सशय को मिटाया नहीं जा सकता है)

वि

विद्या बणिता बेल नृप, अै नहीं जात गिणन्त।
जो ही इण से प्रेम करे, ताहि के लिपटन्त।।
(विद्या, स्त्री, बेल और राजा प्रेम करने वाले से लिपट जाते है)

विनाश काले विपरीत बुद्धि।
(जब विनाश का समय आता है तो व्यक्ति की बुद्धि पलट जाती है)

विश्वास फलदायकम्।
(विश्वास फलित होता है)

श

शक्करखोरै नै शक्करखोरा मिल ज्यावै।
(अपने जैसा मिल ही जाता है)

शनि शनि गांव थोड़े ही बळे।
(हर बार नुकसान नहीं होता)

शरीरा रां जतन जायता राखीज्यो, सारी बात शरीरा लारै छै।
(स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का पत्रो मे नियमित लिखते थे)

शा

शाह चोर कमाय खाय, नामून चोर मार्‌यो जाय।
(बद्‌नाम आदमी को सन्देह से देखा जाता है)

शादी के लड्डू खाये वह भी पछताये, न खाये वह भी पछताये।
(शादी करे वह भी पछताये न करे वह भी)

शि

शिशु सियार सन्यासी तैली, विधवा नार जो मिलै अकेली।
जे मिल जावे ब्राह्मण काणो, राम बचावै ते हि बचै प्राणो।।
(यात्रा प्रारम्भ मे बालक, सियार, सन्यासी, तैली, विधवा, व काने ब्राह्मण का शकुन अच्छा नहीं माना गया है)

शी

शील अर सीर निभावणो खाण्डे री धार है।
(शील व भागीदारी निभाना बहुत कठिन है)

शीवल और ओरी – जीणै जिके नै दोरी।
(बच्चे की पीडा सिर्फ मा समझती है)

शु

शुभम् शीघ्रम्।
(शुभ काम मे देरी नहीं)

शू

शूळ सटै भैंस मरा देवै।
(थोडे के लिए बडा नुकसान उठा लेना)

शे

शेर नै मर जावणो मन्जूर है – पण घास कोनी खावै।
(स्वाभिमानी व्यक्ति अपना स्वाभिमान नहीं छोडता)

शेर नै सवा शेर।
(बडे को उससे बडा)

शै

शैतान को याद करो शैतान हाजिर।
(याद करते ही उपस्थित होना)

शो

शोभा मिनखां स्यूं हुवै।
(केवल पैसे से प्रतिष्ठा नहीं होती)

स

सगपण कीजे जाण'र – पाणी पीजे छाण'र।
(सम्बन्ध परिचित से ही करना अच्छा रहता है)

सगला आपरी रोटी नीचै खीरा देवै।
(अपने हित को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है)

सगली ठौड़ कागला तो काळा ही हुवै।
(सब जगह एक जैसे ही होते हैं)

सज्जन सांकड़ा भला।
(भले आदमी कम जगह मे भी सामजस्य बैठा लेते हैं)

सट्टे री सगाई, तेल री मिठाई किण काम री ?
(सट्टे मे की गई सगाई व तेल की मिठाई कोई काम की नहीं)

सत मत छोड़ै सूरमा, सत छोड़्यां पत जाय।
सत री बांधी लिछमी, फेर मिलै ली आय।
(व्यक्ति सत्य पर दृढ रहे तो गई हुई लक्ष्मी फिर से लौट आती है)

सती रो सांग करे जिके ने जळणो पड़े
(जैसा काम करेगे उसके खतरो को भी सहना पडेगा)

सती श्राप देवै नीं, छिनाल रो श्राप लागै कोनी।
(सती स्त्री श्राप नहीं देती और दुष्टा का श्राप फलता नहीं)

सदा दिवाळी सन्त रै, आठूं पहर आनन्द।
(सदा प्रसन्न रहने वाला)

सदा न जग मै जीवणा, सदा न काळा केस।
सदा न बरसै बादळी, सदा न सावण होय।
(ससार मे कोई भी वस्तु हमेशा स्थिर नहीं रहती)

सदा भवानी दाहिणी, सन्मुख रहत गणेश।
पांच देव रक्षा करै, ब्रह्मा विष्णु महेश।।
(मा भवानी, श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु व महेश, ये पाचो देव रक्षा करें)

संगत बडां री कीजिये, बढ़त बढ़त बढ़ जाय।
बकरी हाथी पर चढ़ी, चुग-चुग कूम्पळ खाय।
(सगति हमेशा बडों की करनी चाहिए)

संगत शोभा कीजिये, ओभी देवे पास।
बदनामी हुवे नहीं, लोग देवे शैबास।
(अच्छी सगत फलदायक होती है)

संगत स्यूं शायर तिरै, लोहा काठ तिराय।
(सुसगत से ही अच्छे विचार आते है)

संगत स्यूं सुधरै कम अर बिगड़े ज्यादा।
(साथ से सुधार कम और बिगाड अधिक होता है)

संगत सार, अनेक फल।
(अच्छी सगत फलदायक होती है)

संगत सार अनेक फळ, भूण्ड भंवर रै संग।
फूलड़ा चढ़ हर रै चढ़्यो, चरण पखाळै गंग।।
(फूल की सगत से भ्रमर शिवजी पर चढाया और गगाजल से सींचा गया, अच्छी सगत फलदायक होती है)

सन्तोषी सदा सुखी।
(सतोष मे ही सुख है)

सन्देशा खेती कोनी हुवै।
(किसी के भरोसे कोई काम नहीं होता)

सपूत को बाप, कपूत की माई,
होत की बहन, अणहोत को भाई,
निरधन होय सासरै मत जाई,
पीठ पीछै नार पराई।
(इसे इस प्रकार भी कहते है)

माता सुमाता, पिता लोभी
हूत मै बहन, अणहूंत मै भाई
पूठ फेरया पछै नार पराई।।
(सपूत को पिता, कपूत को मा, बहिन सम्पन्नता मे तथा भाई विपत्ति मे अपनत्व रखता है। धन न हो तो ससुराल व स्त्री से आदर नहीं मिलता)

सफ़ा लूण री रोटी पोवै।
(बिल्कुल मन गढन्त बात कहना)

सब बैठ'र सुवै, खड़ो कोई कोनी पड़ै।
(सब सोच समझकर निर्णय करते हैं)

सब्र रो फल मीठो।
(सफलता के लिए धैर्य जरूरी है/इन्तजार का फल मीठा होता है)

सबरै घरै मिट्टी रा चूल्हा है।
(सबके एक जैसी ही सुविधा है)

सबस्यूं भली चुप।
(मौन रहना सबसे श्रेष्ठ)

सबस्यूं मीठी भूख।
(सबसे अधिक मिठास भूख में होती है)

सबै सहायक सबल के, कोई न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहि देत बुझाय।।
(सब बलवान के पक्षधर होते है)

समझदार नै ईशारो काफी हुवै।
(समझदार इशारे मे समझ लेते हैं)

सम्प जठै लिछमी, काळी जठै काळ।
(जहा आपसी प्रेम है वहा लक्ष्मी का वास है और जहा वैमनस्य है वहा अभाव ही अभाव है।)

सम्पत है बठै लक्ष्मी है।
(आपसी सद्भाव जहा है वहीं लक्ष्मी रहती है)

समरथ को नहीं दोष गुसांई।
(समर्थवान कुछ भी कर सकता है)

समुन्दर म्हें रह'र मगरमच्छ स्यूं बैर।
(जहा रहते हैं वहा सशक्त आदमी से विरोध नहीं रखना चाहिए)

सर्प रीझ्यो पकड़ाय लै, मृग रीझ्यो खा मार।
नर रीझ्यो कुछ दे नहीं, वां रो धिक्क जमार।।
(आदमी प्रसन्न होकर भी कुछ न दे तो उसे धिक्कार है)

सर सलामत तो पगड़ी हजार।
(मूल बचाकर रखना चाहिए)

सरस्वती के भण्डार की बड़ी अपूर्व बात।
ज्यों खरचै त्यों त्यों बढ़े, बिन खरचै घट जात।।
(विद्या बाटने से बढती है)

सराह्योड़ी खिचड़ी दान्ता लागे।
(अधिक सराहना करने से उल्टा होता है)

सरीसां स्यूं कीजिये - ब्याह, बैर अर प्रीत।
(विवाह, वैर व प्रेम बराबर वालो से करना चाहिए)

स्वदेश चोरी, परदेश भिक्षा।
(अपनो के मध्य इज्जत खराब होना अच्छा नहीं)

सस्तो रोवै सौ बार - महंगो रोवै एक बार।
(सस्ता नहीं, अच्छा लेना चाहिए)

सहजे चूड़लो फूटग्यो, हलका हुग्या हाथ।
बाई रा बन्धन टूट्या, भली करी रघुनाथ।।
(जैसी ईच्छा थी, फलीभूत हो गई)

सा

सागै राख्योड़ा बासण भी बाजै।
(मत भिन्न भिन्न होते हैं)

सागै ही सूवै, ढूंगा भी लुकावै।
(पारदर्शी नहीं रहना)

साच केवै मावड़ी, झूठ केवै लोग।
खारी लागै मावड़ी, मीठा लागै लोग।
(मा सच कहने के कारण कडवी व झूठी प्रशसा करने के कारण लोग प्रिय लगते हैं)

साच नै आंच कोनी।
(सत्य को कोई खतरा नहीं)

साच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप।।
(जहा सत्य है वहा भगवान है)

साटिया रो साख।
(आपस मे अदला बदली)

साठ वर्ष रो सिलावटो आठ रो धणी।
(मालिक छोटा हो तो भी उसका निर्णय सर्वोपरी होता है)

साठां कोसां पाणी, बारै कोसां बाणी।
(साठ कोस पर पानी का स्वाद व बारह कोस पर बोली बदल जाती है)

साठां कोसां लापसी, सोवां कोसां सीरो।
कान पड्यां छोड़ै नहीं, बाईजी थांरो बीरो।
(भोजनभट्ट)

साठी बुद्धि नाठी।
(वृद्धावस्था में बुद्धि नष्ट हो गई है/सठिया जाना)

सातां री लकड़ी एकै रो भारो।
(सगठन मे शक्ति है)

साधां रै किसो स्वाद।
(अनासक्ति)

सात्यूं फेरा कंवारी है।
(निश्चित नहीं मानना)

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार गेहि रहे थोथा देई उड़ाय।।
(अच्छी बात को ग्रहण करना चाहिए)

सांई इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूं, साधू न भूखा जाय।।
(सतोषी सदा सुखी)

सांप निकळग्यो अबै लीक पीटै है।
(अवसर जाने के बाद हाथ पाव मारना)

सांभर पड़्यो सो ही लूण है।
(क्षेत्र विशेष का एक ही जैसा होने का गुण)

सांप बिल मै बड़ै जणै सीधो हू'र बड़नो पड़ै।
(सरलता से ही समाधान होता है)

सांप भी मर जावै अर लाठी भी नहीं टूटै।
(बिना नुकसान हुए समस्या से निजात पाना)

सांप रै बच्चे रो कांई छोटो।
(किसी को कमजोर नही समझना चाहिए)

सामै मिलज्या काणो, तो बैकुण्ठ भी नहीं जाणो।
(काने व्यक्ति का अपशुगन माना गया है)

साम्यां रा कान सुनार कोनी बिंध्या।
(मुझे स्वय समझ मे आता है, किसी अन्य के बहकावे मे नही आता)

सांस है जितै आस है।
(जब तक श्वास चलता है जीने की आस बनी रहती है)

सारी दुनिया एक तरफ – जोरू का भाई एक तरफ।
(साले को महत्व ज्यादा मिलता है)

साळी छोड़ सासुवां स्यूं मसखरी।
(बडो के साथ मजाक)

साली बिना कांई सासरो।
(साली के बिना ससुराल मे मजा नहीं आता)

साळै बिना किस्यो सासरो ?
(साले के बिना ससुराल का आनन्द ज्यादा समय तक नहीं रहता)

सावण रै गधे नै हर्‌यो ही हर्‌यो दीसै।
(आदमी का मन जिस बात में रम जाये उसे वही दिखाई देता है)

सासरे काळ पड़ै बीरै पीरै भी काळ पड़ै।
(समय खराब है तो कहीं भी लाभ नही मिलता है)

सासरो सुख रो आसरो।
(ससुराल मे सुख है)

सासू आगली बहू।
(दूसरे की आज्ञा मे चलने वाला/ मातहत)

सासू रै जायोड़ै रो कांई छोटो।
(देवर नणद सदा सम्मान योग्य होते हैं)

सि

सिद्ध श्री मै ही खोट।
(मूल मे ही कमी है)

सियालीयै री मौत आवै जण बो शहर कानी भागै।
(जब समय खराब होता है तो निर्णय भी गलत होने लगते हैं)

सिर बड़ो सपूत रो, पग बड़ो कपूत रो।
(सपूत का सिर बडा व कपूत का पैर)

सिर मुण्डाते ही ओळा पड्ग्या।
(कार्यारम्भ पर ही बाधा)

सिंह नै पकड़्यो स्याळियो, जे छोड़ै तो खाय।
(ऐसी आफत मे फस जाना तो खाते बने न निगलते)

सी

सीख वां नै दीजिये, जां नै सीख सुहाय।
बान्दर सीख सिखावतां, घर बया रो जाय।।
(शिक्षा या सलाह उसे ही देनी चाहिए जिसे वह भली लगे)

सीखै बाप रै – करै आप रै।
(बेटी पिता के घर सीख कर वैसा ही ससुराल मे करती है)

सीधी आंगळी स्यूं घी कोनी कढ़ै।
(सरलता से काम नहीं होता)

सीतळ, पातळ, मन्द गत, अलप आहार, निरोस।
अै तिरिया मै पांच गुण, अै तुरिया मै दोस।।
(शीतल स्वभाव, पतला वदन, मन्द गति, अल्प आहार एव रोष रहित होना
ये पाच बाते स्त्री मे गुण एव घोडे मे दोष माने जाते है)

सींच्यां तो बाड़ ई हरी हू जावै।
(प्रयास से सफलता मिलती हैं)

सीयाळै खाटू भलो, ऊनाळो अजमेर।
नागाणो नित रो भलो, सावण बीकानेर।
(शरद ऋतु खाटू, ग्रीष्म अजमेर, सावन बीकानेर तथा नागौर को सभी ऋतुओं में अच्छा माना है)

सीयाळै मै सी मरी, ऊन्याळै मै लूवां।
राघो चेतन यूं कैवै, पुन होसी कीं दीयां।
(दान देने से पुण्य होगा)

सीरख जिताई पग पसारना।
(क्षमतानुसार खर्च करना चाहिए)

सीर सगाई चाकरी, राजीपै रो काम।
(भागीदारी सम्बन्ध नौकरी के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता)

सीरो/राबड़ी खांवता भी दांत घसीजे।
(सरल काम मे भी परेशानी)

सीसा सोना सुघड़ नर, मधरा ही बोलन्त।
कांसी कुत्ती कुभारजा, बिन छेड़यां कूकंत।।
(सीसा सोना और सज्जन धीरे ही बोलते हैं। कासी, कुत्ती और कुभार्या कर्कश आवाज करते है)

सु

सुख स्यूं पींजण पींजती, पण कांई कुबुधड़ी आई।
पींजण बेच बन्दूकड़ लाई जद गपतागोळी खाई।।
(बिना क्षमता समझ का काम करना।)

सुझ्यै ना स्यूं बूझ्यो चोखो।
(पूछ लेना ज्यादा अच्छा रहता है)

सुणतै सुणतै पकग्या कान, नहीं आयो हिरदै में ज्ञान।
(बहुत सुनने के बाद भी ज्ञान नहीं आना)

सुणनी सब री – करणी मन री।
(सबकी सुनकर मनन करके अपना निर्णय खुद करना चाहिए)

सुतो तो सदा भलो, ऊभो भलो असाढ।
(चन्द्रमा सदा लेटा हुआ व आसाढ मे खड़ा हुआ शुभ रहता है)

सुत्यां रां पाडा जीणे।
(आलसी व्यक्ति सदा हार मे रहते है)

सुधर्‌यो काज बिगड्यो नहीं, घी दुळ्यो सो मूंगां मांही।
(अपने व्यक्ति को ही लाभ हुआ, कोई बात नहीं)

सुमाणस स्यूं भेटा दे, कुमाणस स्यूं पासो टाळ।
(अच्छे आदमी से मिलना हो बुरे आदमी से बचाव कर)

सू

सूई रो मूसळ बणार्णो।
(छोटी सी बात का बतगड बनाना)

सूकै सायै आलो बळै।
(साथ मे रहने वाले को भी भुगतना पड़ता है)

सूधी छिपकली घणां जिनावर खावै।
(ऊपर से देखने मे सीधा व भीतर से कपटी अधिक हानि पहुचाता है।)

सूनै घर मै चोर घुसै।
(सार सम्भाल जरूरी है)

सूमण पूछै सूम नै, काहे मुख मलीन ?
कै गांठी सै गिर पड्यो, कै काऊ नै दीन ?
ना गांठी सै गिर पड़्यो, ना काऊ नै दीन,
देवत देख्या ओर कूं, या सै मुख मलीन।।
(कजूस दूसरो को देते हुए देखकर भी उदास हो जाता है)

सूरज अस्त - मजूर मस्त।
(मजदूर व्यक्ति सूर्यास्त के साथ निष्फिक्र हो जाता हैं)

से

सेठाण्यां सेठ पैदा करणा ही छोड़ दिया।
(अच्छे आदमी मिलने मुश्किल हो गये हैं)

सेंधो स्वामी, सूंठ रो गांठियो।
(परिचित का मूल्य कम आका जाता है)

सेंधो हुवे तो आय मिले, खरची हुवे तो खाय।
(परिचित कभी का कभी मिल ही जाता है)

सेर आळी भी दूहणी पड़े, अर पाव आळी नै भी।
(अधिक लाभ दे या कम, दोनो से व्यवहार रखना पडता है)

सेर मोत्यां मै भी ब्यांव हुवै, अर सेर मूंगां मै भी ब्यांव हुवै।
(खर्च क्षमतानुसार)

सेर री ठेकै, बिनै कणई पंसेरी री खाणी भी पड़ ज्यावै।
(कभी शेर को सवा शेर मिल भी जाता है)

सेवट पाणी निवाण कांनी आयां सरै।
(आखिर अपनो की तरफ ही झुकाव होता है।)

सेवा में मेवा
(सेवा करने से अच्छा फल मिलता है)

सै

सै दिन एक जिसा कोनी हुवै।
(हमेशा एक जैसा समय नहीं रहता)

सैंलड़ चूंघै बाछड़ो, बहू चोर नै खाय।
परवा चालै टावरी, कदे न निरफळ जाय।।
(बछडा यदि गाय के साथ–साथ रह कर उसका दूध चूघता रहे, बहू चोरी करके भी खाये एव पुरवाई हवा तेज चले तो ये निष्फल नहीं जाते। क्योकि इससे बछडा अच्छा बैल बनेगा, बहू हृष्ट–पुष्ट बच्चे को जन्म देगी व पुरवाई हवा दूर से ही वर्षा को ले आएगी।)

सैंस भुजा रो धणीं देवै जद दो भुजा आळो कांई करै।
(ईश्वर देता है, मनुष्य की क्या औकात है)

सो

सोखीनां री कांई निसाणी ? काच कांगसियो सुरमादाणी।
(काच, कघा, सुरमादानी–शौकीनो की पहचान है)

सोगन अर सीरणी तो खाणै री ई हुवै।
(झूठी सौगन्ध खाना)

सोनै नास्यूं घड़ाई मूंघी पड़ै।
(मूल कीमत से ज्यादा अन्य लागत)

सोनै री थाळी मै लोहे री मेख।
(अच्छे मे एक दोष)

सोनै रै काट कोनी लागै।
(सोने के जग नहीं लगता है/ अच्छा अवगुण से बचा रहता है)

सोनै रो सूरज ऊग्यो।
(वहुत अच्छा अवसर आना)

सोरठियो दूहो भलो, भली मरवण री बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।
(सोरठिया दोहा अच्छा होता है, मरवण की प्रेम कथा अच्छी है,
जवानी चढी हुई स्त्री और तारो छाई रात सुन्दर होती है)

सोरो जिमावोड़ो'र दोरो कुटोड़ो याद रेवै।
(अच्छी आवभगत की हुई व जोरदार पिटाई की हुई दोनो याद रहते हैं)

सोळा आना साची।
(एकदम खरी वात)

सौ

सौ झिक्या -न- एक लिख्या।

(लिखा हुआ ठीक रहता है)

सौत काठ री भी बूरी।/ सौत तो माटी री ई बूरी।

(सौत होना बर्दाश्त नहीं होता)

सौ का रैग्या सट्ठ, आधा गया नट।
दस देंगे, दस दिलाएंगे, दस का क्या लेणा देणा ?

(बिना दिए हिसाब बराबर करना)

सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को ।

(कई करतूतों के बावजूद अपने आपको पाक साफ बताना)

सौ दवा एक हवा।

(शुद्ध हवा से सौ तरह की बीमारी ठीक हो सकती है)

सौ नीचां रो एक काणो, बिस्यूं ऊपर अन्तर काणो।
अन्तर काणो करी पुकार, काबरियो म्हामैं सरदार।
काबरियो बात एसी कही, सूरदास स्यूं डरतो रही।।

(सौ बुरों से ज्यादा काने से, उससे ज्यादा अन्तरकाने से, उससे ज्यादा कबरी आखो वाले से व उससे भी ज्यादा सूरदास से डरना चाहिए)

(इसे इस प्रकार भी कहते है)

सौ मै सूर सहस्त्र मै काणों, बैस्यूं खोटो ऐचाताणों।
ऐचाताणों करी पुकार, कंजा सै रहियो हुशियार।

(सूरदास से बुरा होता है, काना हजार से और ऐचाताना सबसे बुरा, किन्तु ऐचाताना ने कहा कि कजे से होंशियार रहना चाहिए)

सौ बातां री एक बात।

(निर्णायक बात)

सौवैं कोसै आपरी गाय रो घी खाईजे।

(अपनी की हुई भलाई ही काम आती है)

सौ सुनार की एक लुहार की।
(छोटी मोटी बातो के जवाब मे एक बड़ा जवाब)

ह

हड़बड़ी करै गड़बड़ी।
(जल्दबाजी से काम बिगड़ जाता है)

हड़-हड़ हंसै कुम्हार री, माळण रा टूटै बूंट।
तूं कांई हांसै बावळी, कैंकड़ बैठे ऊँट।।
(ऊँट का पता नहीं चलता कि वह कब कौनसी करवट ले लेगा।)

हंगतै ने भाटो भायो कांई।
(मैने क्या बिगाडा था)

हंगायो अर उमायौ रेवै कोनी।
(शौच की हाजत वाला और उमग भरा हुआ – रोके नहीं रुकता)

हथेळी मै सरसूं कोनी ऊगै।
(किसी काम के लिए उपयुक्त समय व स्थान व विधि होती है)

हम बड़े गली सांकडी।
(अह भाव)

हरख्यो-हरख्यो फिरत है, आज हमारो ब्याह।
तुळसी गाय बजाय नै, दियो काठ मै फाह।।
(गृहस्थ जीवन आसान नहीं हैं)

हरड़ै भरड़ै आंवळा घी शक्कर से खावै।
हाथी दाबै काख मै, साठ कोस ले ज्यावै।।
(हरड़, बहेड़ा, आवला को घी–शक्कर के साथ खाने वाला बडा ताकतवर हो जाता है)

हर्‌यो ही हर्‌यो देख्यो है।
(जिसने कोई विपरीत अवस्था नहीं देखी)

हरि करै सो खरी।
(भगवान जो करता है भला ही करता है)

हंस आपरै घर गया, काग हुया परधान।
जावो विप्र घर आपणै, सिंह किस्या जजमान।
(हर किसी पर भरोसा नही करना चाहिए)

हंसती-हंसती कूवै मै पड़गी।
(हसी–हसी मे बात बिगड गई)

हंसती हंसती राण्ड हुगी।
(देखते देखते नुकसान हो जाना)

हंसा समद न छोडिये जे जळ खारा होय।
डाबर-डाबर डोलतां भलो नै कहसी कोय।
(बड़ी जगह कम लाम हो तो भी प्रतिष्ठा अधिक होती है)

हंसी अर फंसी।
(मुस्कुराहट स्वीकृति का प्रतीक होती है)

हा

हाक मारियां सूं कूवौ कोनी खुदै।
(हाक लगाने से कुआ नहीं खुदता।)

हाकमी गरमाई री, महाजनी नरमाई री।
(अनुशासन में कठोरता व व्यापार मे विनम्रता जरूरी है)

हाड़ स्यूं मांस अलग कोनी हुवै।
(हर वस्तु के साथ दोनो जुड़े रहते हैं अच्छा व बुरा)

हाडो ले डूब्यो गणगौर।
(पहला दूसरे को भी ले डूबा)

हाण्डी जिसी ठीकरी – मां जिसी डीकरी।
(जैसी मा वैसी बेटी)

हाण्डी फूट'र ठीकरी आवै।
(पहली छोडकर जाने पर उससे खराब ही मिलती है)

हाजत हुवै जणै लोटो संभालै।
(पहले से तैयारी नहीं करना)

हाथ कंगन को आरसी क्या ? पढ़े लिखे को फारसी क्या ?
(प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं)

हाथ कमाया कामड़ा, किणनै दीजै दोष ?
(स्वय द्वारा की गई भूल का दोष किसको दे ?)

हाथ नै हाथ खाय।
(किसी का भी विश्वास नही किया जा सकता)

हाथ पोलो – जगत गोलो।
(उदारता दिखाने पर जी हजूरी करने वाले मिल जाते हैं)

हाथ मै माला पेट मै कुदाळा।
(धर्म का दिखावा, मन मे पाप)

हाथ रो बाळोड़ो'र पारको सुधारोड़ो।
(दूसरो से करवाने की अपेक्षा अपने आप करना ज्यादा अच्छा रहता है)

हाथ स्यूं हाथ कोनी काटी जै।
(स्वय नुकसान खाकर बराबर नहीं किया जा सकता)

हाथ सुखो – टाबर भूखो।
(बच्चे को जल्दी जल्दी भूख लगती है)

हाथ्यां रै तोल मै गधा काण मै जावै।
(बड़े खर्च में छोटे मोटे मद नहीं गिने जाते)

हाथां पोवै हाथां पीसै, आपरी गिरह आप नै दीसै।
(अपने भविष्य का आभास व्यक्ति को स्वय होता है)

हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की।
(कृष्ण कन्हैया के प्रति जयकारा)

हाथी जीवै तो लाख रो, मरै तो सवा लाख रो।
(दोनो स्थिति मे लाभ)

हाथी नै हळ मै जोतणो।
(छोटे काम के लिए बडे को लगाना)

हाथी नै हिरावड़ो कुण केवै।
(समर्थवान को कोई कुछ नहीं कहता)

हाथी पाळै जकै न, खड़ो राखण री पिरोळ भी चाइजै।
(जितना बडा काम होता है उस अनुसार व्यवस्था भी चाहिए)

हाथी रा दान्त – दिखावण रा और, खावण रा और।
(कथनी और करनी मे अन्तर)

हाथी री गाण्ड मै बड़नो सोरो, निकळनो दोरो।
(बडे व्यक्तियो से सम्बन्ध बनाना सरल है। उनके चगुल से निकलना मुश्किल होता है)

हाथी लारै घणां ही गण्डक भौंकै।
(निन्दा करने वाले व्यक्तियो की परवाह सक्षम आदमी नहीं करते)

हाथी सूं हजार पावण्डा, लाख पावण्डा लूण्ड सूं।
तिरिया सूं तेतीस पावण्डा, करोड़ पावण्डा भूण्ड सूं।।
(बद अच्छा बदनाम बुरा)

हाल ताणीं बेटी बाप रै ई है।
(अभी तक कुछ नहीं बिगडा है)

हि

हिड़काव उपड़ग्यो कांई।
(बहुत ज्यादा की कामना)

हिचकी खांसी उबासी, तीनूं काळ री मासी।
(हिचकी, खाँसी और उवासी मे से एक मृत्यु पूर्व होती है)

हिम्मत री कीमत है।
(साहस रखना ही लाभप्रद है)

हिम्मत कीमत होय, बिन हिम्मत कीमत नहीं।
करै न आदर कोय, रद्द कागद ज्यूं राजिया।।
(हिम्मत की कीमत है)

हिये मै चानणो चइजे।
(अन्तर्ज्ञान होना चाहिए)

हिरण बडा'क हर बडा, सुगन बडा'क स्याम।
अरजन रथ नै हांक दे, भली करै भगवान्।।
(शकुन से बडा है या भगवान)

हिली हिली हिरावड़ी, अड़क मतीरा खाय।
(एक बार चस्का लगने के बाद बार बार करना)

ही

हींग लगै न फिटकड़ी, रंग आवै चोखो।
(बिना खर्च अच्छा काम)

हींजड़े री कमाई मूंछ मुण्डाई मै जावै।
(फालतू मे खर्च)

हु

हुया सौ भाज्या भौ, हुया हजार-चाल्या बाजार।
(पैसा आते ही खर्च करने की प्रवृत्ति)

हू

हूँ ई राणी, तूं ई राणी, कुण भरे कुवें सुं पाणी, कुण देवे चूले मै छाणी।
(अपना दायित्व न निभा कर दूसरे से उम्मीद करना)

हूँ आयो तूं चाल।
(जल्दबाजी)

हूंत री बैन अणहूंत रा भाई, मगरां पूठै नार पराई।
(बहिन सम्पन्नता मे तथा भाई विपत्ति में अपनत्व रखता है। धन न हो तो स्त्री भी बदल जाती हे)

है

हैंती थोड़ी'र हुल हुल घणी।
(ज्यादा गाल बजाना)

हो

होड करयां लोड फूटै।
(बडे व ताकतवर की बराबरी करने से हानि ही उठानी पडती है।)

होनहार बिरवान के होत चिकने पात।
(प्रतिभाशाली बालक)

होम करता हाथ बळै।
(अच्छा काम करते परेशानी)

होळी बळवा री बखत, कुण सी बाजै बाय।
पूरब दिस री जे हुवै, राजा परजा सुख पाय।।
(होली जलाते समय यदि पूर्व दिशा की वायु हो तो शुभ होती है)

क्ष

क्षण-क्षण बीती जाय।
(जीवन प्रतिपल घट रहा है)

क्षणे रूष्टम्, क्षणे तुष्टम्, रूष्टम् तुष्टम् क्षणेः क्षणेः।
अणवस्च्छ चित्ताणां नरस्य, प्रसादो हि भयंकरः।।
(अस्थिर चिन्तन वाले व्यक्ति से कोई लाभ नहीं)

क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।
(सक्षम आदमी क्षमाशील होना चाहिए)

त्रि

त्रिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार।
(लडकी के तेल चढने की रस्म/षादी एक बार ही होती है)

त्रिया चरित्र जाणैं न कोय, मिनख मार'र सती होय।
(स्त्री को पहचानना मुश्किल होता है)

त्रिया तेरह मर्द अठारह।
(परम्परानुसार लडकी की 13 व लडके की शादी 18 वर्ष की उम्र मे कर देने की मान्यता रही है)

त्रिया थारै तीन गुण, अवगुण घणां अनेक।
मंगल गावण, बंश बधावण, टुकड़ो देवै सेक।।
(औरत अगर वह मगल गायन, वशवृद्धि व अच्छा खाना बनाने मे निपुण है तो ठीक है)

ज्ञा

ज्ञानी काढ़ै ज्ञान स्यूं, मूरख काढ़ै रोय।
(विपत्ति का समय ज्ञानी चिन्तन मे निकालता है व मूरख रोकर)

ज्ञान घटे किये मूढ़ की संगत, ध्यान घटे बिन धीरज लाये।
प्रीत घटे परदेश बसे अरू मान घटे नित ही नित जाये।
शाम घटे किये साधु की संगत, रोग घटे कछु औषध पाये।
गंग कहे सुन शाह अकबर, पाप घटे हरि के गुण गाये।।

(मूर्ख की सगत से ज्ञान, धैर्य के अभाव मे ध्यान, दूर बस जाने से प्रेम, नित्य जाने से आदर, साधू की सगत से बुराईया, औषधि से रोग व प्रभु के गुण गाने से पाप घटता है)

ज्ञानी स्यूं ज्ञानी मिलै, करै ज्ञान री बात।
मूरख स्यूं मूरख मिले, का मुक्का – का लात।।

(ज्ञानी व्यक्ति ज्ञान की बात करते हैं, मूर्ख लडाई झगड़ा)

बरसात के शकुन

अम्बर पीळौ मेह सीलो, अम्बर रातो मेह मातो।

(आकाश पीला हो तो वर्षा मन्द हो जाती है, आकाश मे लालिमा हो तो खूब वर्षा होती है)

अम्बर हरियो चूवै टपरियो।

(आकाश हरा हो तो सामान्य वर्षा लगातार होती है)

अगस्त ऊग्यां मेह नै मंडै, जे मंडे तो धार नीं खंडै।

(अगस्त तारे के उदय होने पर प्राय वर्षा नहीं होती, यदि होने लग जाय तो वह वर्षा खूब जोरो से होती है)

अगस्त ऊग्यो मेह पूग्यो

(अगस्त तारे के उदय होने पर वर्षा समाप्त समझिये)

आंधी आई मेह गाज्यो, टीकू नारा ले भाज्यो।

(आधी आकर वर्षा की आशका होते ही किसान बैलो को लेकर घर की राह लेता है)

आई चंदा छठ कातरो मरग्यो पटापट।

(भादो सुदी छठ के बाद कातरा (फसल को नष्ट करने वाला कीडा) प्राय अपने आप मर जाता है)

आगम चौमासै लूंकड़ी, जै नहीं खोदै गेह।
तो निहचै ही जांणज्यो, नहीं बरसैलो मेह।।

(वर्षाकाल से पूर्व लोमडी यदि अपनी 'घुरी' नहीं खोदे तो निश्चय जानिये कि इस बार वर्षा नहीं होगी)

आगम सूझै सांडणी, दौड़ै थळां अपार।
पग पटकै बैसै नहीं, जद मेह आवणहार।

(ऊटनी को पूर्वाभास हो जाता है। जब वह इधर उधर दौडे, पैर पटकती रहे लेकिन बैठे नहीं तो निश्चय ही वर्षा आयेगी)

आथणवाई रौ मेह अर पावणौ आयौ रै' वै।

(सध्या काल को आया अतिथि रूकेगा और साझ को आयी वर्षा अवश्य बरसेगी।)

आदरा बाजै बाय, झूंपड़ी झोला खाय।

(आद्रा नक्षत्र में हवा चलने पर सारी झौंपडी हिल उठेगी अर्थात अकाल पडेगा)

आदरा भरै खादरा, पनरबसु च्यारूं दिसूं।

(आद्रा नक्षत्र मे सामान्य वर्षा होती है किन्तु पुनर्वसु मे चारो दिशाओ मे वर्षा हो जाती है)

आभौ रातौ मेह मातौ, आभौ पीळो मेह सीळो।

(आकाश लाल तो वर्षा जोरो से होगी, आकाश पीला हो तब वर्षा शायद ही हो)

आसवाणी भागवाणी।

(आश्विन की वर्षा भाग्यशाली के खेत मे होती है)

आसाढ़ां घुर अस्टमी, चंद उगंतो जोय।
काळो व्है तो कुर्रियो-धोळौ व्है तो सुगाळ।
जे चंदो निरमळ हुवै तो पड़ै अचिंत्यो काळ।

(आषाढ कृष्ण पक्ष की अष्टमी को यदि चाद का उदय काले बादलो मे हो तो जमाना साधारण होगा, श्वेत बादलो मे हो तब भरपूर जमाना होगा और यदि बादल न हो तो दुर्भिक्ष पडेगा)

आसाढ़ां सुद अष्टमी शशि बादळ छायो।
च्यार कूंट पिंजर झरै, ज्यूं भांडो रायो।

(आषाढ शुक्ला अष्टमी को यदि चाद गहरे बादलो मे उदित हो तो झरने वाले मिट्टी के बर्तन की तरह चारो दिशाओ मे खूब वर्षा होगी)

आसाढ़ां सुद नौमी, घण बादळ घण बीज।
कोठा खेर खंखेरल्यो राखो बळद न बीज।

(आषाढ शुक्ला नवमी को यदि आकाश मे बादल ओर बिजली खूब चमके तो अन्न के भण्डार खाली करके साफ कर ले। अन्न बेच दो केवल बीज बोने जितना रखिये, क्योकि जमाना खूब होगा। अन्न सस्ता रहेगा।)

आसाढ़ी सुद नौमी, न बादळ न बीज।
हळ फाड़ी ईंधण करौ, बैठ्या चाबो बीज।
(आषाढ शुक्ला नवमी को यदि आकाश मे बादल व बिजली न हो तो दुर्भिक्ष निश्चित है)

आसाढ़ी पूनम दिनां, निरमळ ऊगै चंद।
कोई सिंध कोई माळवै, जायां कटसी फंद।
(यदि आषाढ की पूर्णिमा को चाद स्वच्छ (विना वादल) उदय हो तो दुर्भिक्ष पडेगा, लोगो को जीवनयापन हेतु सिध या मालवा जाना पडेगा)

आसाढ़ी पूनो दिनां, बादर छीणो चंद।
तो भड्डर जोसी कहै, सगळा नरां आनंद।
(यदि आषाढ की पूर्णिमा को वादलो से घिरा चन्द्रमा हो तो भड्डर जोशी का कथन है कि सुकाल होगा। सभी लोग आनदित होगे)

आसोजां मै मोती बरसै।
(आश्विन मास की वर्षा की एक एक बूद मूल्यवान है)

आसोजां रा पड़्या तावड़ा जोगी होग्या जाट।
(आश्विन की तेज धूप से कृषक जाट भी घबरा कर जोगी (साधू) हो गये)

ऊंचो नाग चढ़ै तर ओढ़ै, दिस पिछमाण बादळा दौड़ै।
सारस चढ़ै आसमान संजोड़ै, तो नदियां ढ़ावा जळ तोड़ै।।
(यदि साप पेड की चोटी पर चढे, मेघ पश्चिम दिशा की ओर दोडे, सारसो के जोड़े आकाश मे उड़े तो भयकर वर्षा नदियो के किनारे तोडेगी)

ऊमस कर घृत माढ़ गमावै, इंडा कीड़ी बाहर लावै।
नीर बिना चिड़्यां रज न्हावै, मेह बरसै घर मांह न मावै।
(यदि उमस से बिलौने में पड़ा घी पिघल जाये, चींटिया अपने बिल से बाहर अडे लावें और यदि चिडिया रेत में स्नान करे तो भरपूर वर्षा होगी)

कंचन जैड़ी ऊजळी, उत्तर बीज सुहाय।
अग्गम देवै सूचना, बेगी बिरखा आय।

(स्वर्ण आभा युक्त बिजली उत्तर दिशा मे चमके तो वर्षा आगमन की सूचना समझिये)

कळसै पाणी गरम हो, चिड़्यां न्हावै धूळ।
इंडा ले चींटी चढ़ै, जद बिरखा भरपूर।

(घडे मे रखा पानी गर्म हो जाय, चिड़िया मिट्टी मे स्नान करे, चीटिया अडे लेकर ऊपर चढे, तब वर्षा पर्याप्त होती है)

कातिक सुद ऐकादसी, बादळ बिजळी होय।
तो असाढ़ मै भड्ळी, बिरखा चोखी होय।

(यदि कार्तिक शुक्ला एकादशी को आकाश मे बादल और बिजली हो तो आगामी आषाढ मे अच्छी वर्षा होगी)

काती रौ मेह कटक बराबर

(कार्तिक की वर्षा सेना की तरह फसल को हानि पहुचाती है)

काती बद बारस, बादळ री छाया।
तो असाढ़ै, घुर बरसैलो भाया।

(कार्तिक कृष्णा द्वादशी को बादलो की छाया हो तो आगामी आषाढ में अच्छी वर्षा होगी)

काळ केरड़ा सुकाळै बोर।

(यदि कैर अधिक हो तो अकाल और बेर अधिक हों तो सुकाल होता है)

काळी पड़वा कातकी, जे बुधवारी आय।
कठै'क बिरखा होवसी, बाकी काळ बताय।।

(कार्तिक कृष्णा प्रथमा को यदि बुधवार हो तो आगामी वर्ष मे किसी–किसी स्थान पर वर्षा होगी, बाकी जगहो मे अकाल पडेगा)

किरती ऐक झबूकड़ी, औगण सै गळिया।

(कृत्तिका नक्षत्र मे एक बार भी बिजली की चमक हो जाये तो वह वर्षा सम्बन्धी पूर्व के सारे अपशकुनो को मिटा देती है)

कीड़ा पड़े गोबर रै मांय, पपइयो मीठो बोल सुणाय।
अमल चामड़ो गीलो होय, बिरखा हुवै, नी संसै कोय।।

(यदि गोबर मे कीडे पडे, पपीहा मीठी वाणी मे बोले, अफीम व चमडे मे गीलापन आ जाय तो निश्चय ही वर्षा होगी)

कीड़ी कण असाढ़ मै, बारै न्हाखै ल्याय।
भील कहे सुण भीलणी, मेह घणेरौ थाय।

(आषाढ मास में यदि चीटिया अन्न के कणों को बिल से बाहर लाकर डाले तो वर्षा खूब होगी)

कीड़ी कण असाढ़ मै, मांय ले जाती देख।
तो अन-त्रण रौ काळ व्है, ई मै मीन न मेख।।

(आषाढ मास मे यदि चींटिया अन्न के कणो को बिल मे ले जाये तो अकाल पडेगा)

कुञ्जण जमै न जड़ाव पर, जमै सळाय न कीट।
कह जड़ियो सुणज्यो जगत्, उडै मेह री रीठ।।

(जब जडाव पर कुदन न जमे और सलाइयों पर कीट न जमें तो वर्षा खूब जोरो की होगी)

कुरज उडी कुरळाय, पाछी जे आवै नहीं।
मेह गयो नहीं आय, अै लक्खण नहीं मेह रा।।

(कुरजा पक्षी यदि दर्दभरी आवाज निकालते हुये उड जाये और लौट कर न आये तो जानिये कि वर्षा अब नहीं आयेगी)

कैर बोर पीलू पकै, नीम आम पक ज्याय।
दूध दही रस कस घणां, कातिक साख सवाय।

(कैर, बेर, पीलू, नीम और आम अधिक फले तो दूध–दही रस–कस पदार्थो की बहुतायत रहेगी और कार्तिक मे फसल सवाई होगी)

कृतिका तो कोरी गई, अदरा मेह न बूंद।
तो यूं जाणो भड्डळी, काळ मचावै दूंद।।

(सूर्य के कृतिका एव आर्द्रा नक्षत्र पर रहते यदि जरा भी वर्षा न हो तो अकाल पडेगा)

खग पांखां फैलाय, उझकि चूंच पवनां भखै।
तीतर गूंगा थाय, इन्दर धड़ूकै माघजी।।
(यदि पक्षी अपने पख फैला कर बैठे और चोच खोल कर पवन का भक्षण करे, तीतर बोलना बद कर दे, तो वर्षा शीघ्र होगी)

गळै रोहिणी म्रिग तपै, आदरा बाजे बाय।
डंक कहे हे भड्डळी, दुरभिख होण उपाय।।
(रोहिणी गल जाये, मृगशिरा तपे और आर्द्रा नक्षत्र मे तेज वायु चले तो इन लक्षणो से अकाल पडे)

गुरू दिन ग्रहण जे होय, तो दुगणो लाभ चोमास।
रूपो तेल कपास घी, संग्रह करजो तास।।
(ग्रहण के दिन गुरुवार हो तो रूपा, तेल, कपास व घी का सग्रह करो, चातुर्मास में इनका दुगुना लाभ होगा)

घड़ी दोय दिन पाछलै, बादळ धनुस धरेह।
डंक कहे भड्डळी, जळ थळ अेक करेह।।
(सूर्यास्त से दो घडी पहले यदि आकाश में इन्द्र धनुष दिखलाई दे तो भरपूर वर्षा हो)

चांद छोडै हिरणी तो लोग छोडै परणी।
(अक्षय तृतीया को यदि चन्द्रमा मृगशिरा से पहले अस्त हो जाये तो भयकर अकाल पड़े, जिससे अपनी स्त्रियो को छोडकर निर्वाह हेतु पुरुषो को अन्यत्र जाना पडे)

चांद सूरज कुंडळ होय, पांच पो'र मै बिरखा जोय।
निपट नजीक लाल रंग साजै तो घड़ी पलक मै मेहो गाजै।
(सूर्य व चन्द्रमा के चारो ओर कुण्डल (गोल कुडारा) हो तो पाच प्रहर में वर्षा होगी। यदि यह एकदम नजदीक व लाल रग का हो तो बहुत जल्दी वर्षा होगी)

चिड़ी जे न्हावै धूळ मै, मेहा आवण हार।
जळ मै न्हावै चिड़कली, मेह विदा तिण वार।।
(चिडिया यदि मिट्टी मे नहाये तो वर्षा अवश्य आती है। यदि जल मे चिड़िया नहाने लगे तो वर्षा उसी समय विदा लेगी)

चितरा दीपक चेतवे, स्वाते गोबरधन्न।
डंक कहे है भड्डली, अथक नीपजे अन्न।।
(यदि दिवाली चित्रा नक्षत्र मे और गोवर्द्धन स्वाति नक्षत्र मे हो तो भड्डली से डक कहता है कि फसल भरपूर होगी)

चैत चिड़पड़ा – सावण निरमला।
(चैत्र मे बूदा–बादी हो तो श्रावण मे आकाश साफ रहेगा)

चैत पीछलो पाख नौ दिन तो बरसंतो राख।
(हे इन्द्रदेव! चैत्र शुक्ल पक्ष के नवरात्र मे तो वर्षा न करो, नही तो अकाल पडेगा)

चैत मास नै पख अंधियारा, आठम चवदस हो दिन सारा।
जिण दिस बादळ जिण दिस मेह, जिण दिस निरमळ जिण दिस खेह।।
(चैत्र के कृष्ण पक्ष की अष्टमी और चतुदर्शी को दिनभर जिस दिशा से बादल आये, उसी दिशा में वर्षा अच्छी हो और जिस दिशा मे बादल न हो उस दिशा मे वर्षा नहीं होगी)

चौड़ा कुंडळ तारा नहीं, वाय बजावे बिरखा नहीं।
जे बरसै तो झड़ी लगावे, सोता नाग पताळ जगावे।।
(चन्द्रमा के चारो ओर बडा कुण्डल हो, उसके बीच मे तारे नहीं दिखलाई देवे और वायु जोरो से चले तो वर्षा न हो, यदि वर्षा शुरू हो जाय तो शायद झडी ही लग जाये)

छठ उजाळी पोस री जे बिरखा हो ज्याय।
सावण महिना मांयनै अवसै बिरखा होय।
(पौष शुक्ला षष्ठी को यदि वर्षा हो जाय तो आगामी श्रावण मास मे अवश्य वर्षा होगी)

छह गरह अेक रास पर आवै, महाकाळ नै 'न्यूंत'र लावै।
(एक ही राशि पर छ ग्रह पडे तो घोर दुर्भिक्ष या महाविनाश होगा)

छिण छाया छिण तावड़ौ, बिरखा रुत रै मांय।
आं लखणां सै जाणज्यो, बिरखा गई बिलाय।।
(वर्षा काल में क्षण मे धूप, क्षण में छाया हो तो समझिये कि वर्षा गई)

धुर बरसाळे लूंकड़ी, ऊँची धुरी खिणन्त।
भेळी होय जे खेल करै, जळधर अति बरसंत।।

(यदि वर्षा ऋतु के प्रारभ मे लोमडिया अपनी 'घुरी' ऊँचाई पर खोदें एव परस्पर मिलकर उछल--कूद करे तो समझिये कि वर्षा होगी)

नागौरण खाखोरण, तूं क्यां चाली आधे सावण, बैल बिकावण।

(श्रावण मास के मध्य नागौरण खाखोरण हवाए चलना अकाल का द्योतक है)

नींबोळी सूकै नीम पर, पड़ै क नीचै आय।
अन्न न निपजै अेक कण, काळ पड़ैगो आय।

(यदि निबोलिया नीम पर सूखकर नीचे न गिरे तो निश्चय ही अकाल पडेगा)

पड़वा दूज बैसाख री होय उजाळै पाख।
बादळ थिर रह ज्याय तो आछी निपजै साख।।

(बैशाख शुक्ला प्रतिपदा और द्वितीया को आकाश में बादल स्थिर रह जाए तो जमाना अच्छा हो)

पपीहो पिउ-पिउ करै, मोरां घणी अजग्ग।
छतर करै मोरयो सिरै, तो नदियां बहै अथग्ग।

(पपीहा बार बार पीउ--पीउ की टेर लगाये, मोर अधिक बेचैन होकर बोले और सिर पर छतरी ताने तो नदियो मे उफान आने जेसी वर्षा हो)

परभाते गेह डम्बरा, दोफारां तपन्त।
रात्यूं तारा निरमळा, चेला करो गछंत।

(प्रात बादल, दोपहर मे गर्मी और रात मे निर्मल तारे दिखलाई दे तो अकाल पडे)

परवाई चालै घणी, विधवा पान चबाय।
आ तो ल्यावै मेह नै, वा काहू संग जाय।।

(पुरवाई हवा अधिक चले तो वर्षा को लाती है, विधवा स्त्री पान चबाये तो वह नया पति करती है)

परवा ऊपर पछ्वा फिरै तो घर बैठी पणिहार भरै।
(यदि पुरवाई हवा पर पछवा (पश्चिमी) हवा बहे तो पनिहारिन घर बैठे पानी भरे अर्थात खूब वर्षा होगी)

पहली पड़वा गाजे, दिन बहत्तर बाजे।
(यदि आषाढ कृष्णा प्रतिपदा के दिन बहुत जोर से बादल गरजे तो 72 दिनो तक वर्षा नहीं होती है)

पहली रोहण जळ हरै, बीजी बहोत्तर जाय।
तीजी रोहण तिण हरै, चौथी समदर जाय।
(यदि पहली रोहिणी नक्षत्र मे वर्षा हो तो अकाल पडे, दूसरे मे बहत्तर दिन वर्षा न हो, तीसरी मे घास का अकाल पडे ओर चौथी मे मूसलाधार वर्षा हो)

पीतळ कांसी लोह नै, पड़्यो काट चढ़ जाय।
जळधर आवै दोड़तो, इण मै संसै नाय।।
(पीतल, कासी और लोह पर काट चढने लगे तो शीघ्र वर्षा होती है)

पोही मावस मूळ बिन, रोहिण (बिन) आखातीज।
श्रवण बिना सलूंणियो, क्यूं बावै है बीज।।
(हे किसान! यदि पोष की अमावस्या के दिन मूल नक्षत्र न हो और वैशाख की अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र न हो और श्रावणी पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र न हो तो खेत में बीज व्यर्थ ही क्यों बो रहे हो? अकाल पड़ेगा)

बरसै भरणी छोड़ै परणी।
(भरणी नक्षत्र में यदि वर्षा हो तो घोर दुर्भिक्ष पड़े व आजीविका के लिए पति को अपनी पत्नी को छोडकर अन्यत्र जाना पडे)

बसंत पंचमी अर सिवरात, सळी सातै रखियो ख्यात।
धुंध धूर अर उत्तर बाय, दियो अन्न कोई नहीं खाय।।
(बसत पचमी, शिवरात्रि और शीतला सप्तमी को आकाश मे धुध, कुहरा एव उत्तर दिशा की वायु हो तो अन्न प्रचुर मात्रा मे उत्पन्न हो)

बिरछां चढ़ किरकांट बिराजै, स्याह सफेद लाल रंग साजै।
बिजनस पवन सूरिया बाजै, घड़ी पलक मांहे मेह गाजै।।

(यदि गिरगिट वृक्ष पर चढकर काला, सफेद व लाल रग धारण करे, वायु उत्तर–पश्चिम से चले तो घडी दो घड़ी मे वर्षा आयेगी)

भादवो गाज्यो काळ भाज्यो।

(भादो मे गरजन और वर्षा हो तो अकाल समाप्त समझिये)

भादरवै जग रेळसी, छठ अनुराधा होय।
डंक कहे हे भड्‌डळी, करो नै चिंता कोय।।

(भादो में सर्वत्र वर्षा होती है, यदि भादो कृष्णा 6 (छठ) को अनुराधा नक्षत्र हो तक डक भड्‌डली से कहता है कि चिन्ता मत करो)

मघा मेह बरसाविया, धान घणेरो होय।

(मघा नक्षत्र मे वर्षा होने पर अन्न खूब होता है)

मावां पोवां धोधूकार, फागड़ मास उड़ावै छार।
चैत मास बीज ल्हकोवै, भर बैसाखां केसू धोवै।
जेठ जाय तपन्तो तो कुण रोकै, सावण भादवा जळ बरसंतो।।

(माघ और पौष मे कोहरा दिखलाई पडे, फाल्गुन मे धूल उडे, चैत्र मे बिजली दिखाई न दे तो वैशाख मे वर्षा हो। ज्येष्ठ मे सूर्य तपता रहे तो किसी की शक्ति नहीं है जो श्रावण व भाद्र की वर्षा को रोक सके)

राखी पून्यूं रै दिनां श्रवण नछत्तर होय।
बिरखा आछी होयसी, धान घणेरो होय।।

(रक्षाबधन (श्रावण शुक्ला पूर्णिमा) को श्रवण नक्षत्र हो तो वर्षा एव अन्न प्रचुर मात्रा में होगे)

रोहण तपै किरतका बरसै, धूधूकार जमानौ दरसै।

(यदि रोहिणी तपै और कृतिका नक्षत्र मे वर्षा हो तो भरपूर जमाना होगा)

रोहण तो सारी तपै, आखो तपै जे मूर।
पड़वा तपै जे जेठ री, तो निपजै सातूं तूर।।
(रोहिणी और मूल खूब तपे और जेठ मास की प्रतिपदा भी तपे तो सातो प्रकार के अन्न पैदा हों)

रोहण बाजै मिग तपै, गैलो हाळी क्यूं खपै।
(यदि रोहिणी नक्षत्र मे आधिया चले और मृगशिरा नक्षत्र मे गरमी पडे, तो पगला किसान अपने को खेती के काम मे क्यो खपाये? क्योकि अकाल पडेगा।)

लेय उबासी कूतरो, आंख्यां बरसावै तोय।
आभै साभै जोय तो, मेह घणेरो होय।।
(यदि कुत्ता उबासी ले, उसकी आखो से पानी गिरे और वह आकाश की तरफ देखे तो वर्षा खूब हो)

ले रछाणी बैठ्यो नाई, नायण नै ली पास बुलाई।
चढ्यो काट राछां रै मांही, आगम बिरखा देय बताई।।
(नाई के राछों (उस्तरा आदि) पर जग लगे तो वर्षा के आगमन की पूर्व सूचना है)

सावण तो सूतो भलो ऊभो भलो असाढ।
(श्रावण में चन्द्रमा लेटा हुआ व आसाढ में खड़ा हुआ शुभ रहता है इससे अच्छी वर्षा होती है)

सावण पैली पंचमी जे बाजै बहु बाय।
काळ पड़ै सब देस मै, मिनख-मिनख नै खाय।
(श्रावण कृष्णा पचमी को यदि तेज हवा चले तो इतना घोर अकाल पड़ेगा कि मनुष्य ही मनुष्य को खाने लगेगा)

सावण मास सूरियो चालै, भादूड़ै पुरवाई।
आसोजां में पिछवा चालै, सातूं साख सवाई।।
(श्रावण मे तो ईशान कोण की हवा चलती हो, भाद्रपद मे परवा और आश्विन मे पिछवा चलती हो तो खूब जमाना होगा/फसल होगी)

सावण मै चालै परवा तो सब सूं बुरा।
बामण होय नै बांधे छुरा तो सब सूं बुरा।
(श्रावण में यदि परवा चले तो यह सब से बुरी)

सावण रा पंचक गळै, नदी बहन्ता नीर।
(यदि श्रावण मे पचको मे वर्षा हो जाये तो फिर आगे इतनी वर्षा होगी कि नदियो का जल मर्यादा छोड़कर बहने लगेगा।)

सुक्करवारी बादळी रही सनीचर छाय।
डंक कहे हे भड्‌डळी बरस्यां बिनां न जाय।
(यदि शुक्रवार के दिन बादल आये और शनिवार तक छाये रहे तो भड्‌डली से डक कहता है कि अवश्य वर्षा होगी)

सूरज कुंडाळ्यो चांद जळेरी, टूटै टीबा भरै डेरी।
(सूर्य के चारो ओर कुण्डल बना हो व चन्द्रमा के जलेरी हो तो भयकर वर्षा से टीले टूट–टूट कर बह जाते हैं व ताल तलैया भर जाते हैं)

हस्त बरसै चितरा मंडरावै, घर बैठ्यो करसो सुख पावै।
(हस्त नक्षत्र मे वर्षा हो और चित्रा नक्षत्र मे बादल मडराये तो अच्छा जमाना होकर किसान सुखी होवे।)

हस्ती (नक्षत्र) जातो पूंछ, हलावै, घर बैठ्यां गेहूं निपजावै।
(हस्त नक्षत्र के समाप्त होते–होते यदि वर्षा हो जाय तो गेहू की खेती के लिए बहुत लाभदायक है)